प्रारंभिक

[हिन्दी अनुवाद विभाग १ व २]

मूल गुजरातीके प्रधान सम्पादक

श्री ए जे गोडलिया

श्री जैन तत्त्वज्ञान विद्यापीठ—पूनाकी

पाठ्यपुस्तक प्रकाशन समितिद्वारा

卐 सम्पादित 卐

– प्रकाशिका –

श्री नवजीवन ग्रथमाला

गार्गआधार (सौराष्ट्र)

यह पुस्तक श्री जैन तत्त्वज्ञान विद्यापीठ-पूनाने अपनी प्रारंभिक परीक्षाके लिये मंजूर की है।

नवजीवन ग्रंथमाला—पुष्प : ५ (हिन्दी):

संस्करण—पहला
सं २०१२ विक्रमी

★

संख्या—१०००
सन १९५५ इस्वी

मूल्य डेढ़ रुपया

— सब अधिकार सुरक्षित —

श्री जैन तत्त्वज्ञान विद्यापीठ पूनाकी पाठ्यपुस्तक प्रकाशन समितिने इस पुस्तकके सब अधिकार सुरक्षित रक्खे हैं। अतः कोई भी इस पुस्तकके किसी भी विभाग या अंशको विद्यापीठकी मंजूरी लिये बिना नहीं छपा सकता।




— प्राप्तिस्थान —

★श्री नवजीवन ग्रंथमाला, गारीआधार (सौराष्ट्र)

★ श्री जैन तत्त्वज्ञान विद्यापीठ

केन्द्रीय कार्यालय—१५६-५७, रविवार पेठ, पूना २

बृहद् गुजरात शाखा
रावपुरा रोड,
वडोदा १



सौराष्ट्र शाखा
चांदी बाजार,
जामनगर



विषय-सूची



पहला विभाग

पृष्ठ १–१४०

दूसरा विभाग

पृष्ठ १४१–२१६

शुरुमेंसे

प्रकाशककी ओरसे

अभी अभी हमारी यह संस्था अभिनव परिष्कारवाली पुस्तक प्रथम प्रगट कर रही है। इस प्रयासमें यह पुस्तक अब तक पहली ही है। हमें विश्वास है कि रत्नदीपके समान यह पुस्तक बालकोंको बहुत ही उपयुक्त मालूम होगी। धार्मिक शिक्षा यह जीवनकी नींव है, जीवनकी बुनियादी तालीम है और वह शिक्षा इस पुस्तकमें बहुत ही सरलतासे दी गई है, इसलिये सचमुच यह पुस्तक जनताके लिये आशीर्वादसमान होगी ऐसा हमें अब प्रतीत होने लगा है।

श्री जैन तत्त्वज्ञान विद्यापीठ पूनाने अपनी प्रारंभिक परीक्षाके लिये यह पुस्तक मंजूर की है, अतः यह पुस्तक सर्वमान्य भी होगी ऐसी हमें आशा है। साथ ही यह पुस्तक सर्वग्राह्य विद्वद्भोग्य व हृदयग्राही हुई है, इसका हमें आनंद है।

शुद्धिपूर्ण और सुंदर छपाईके लिये यथाशक्य सर्व प्रयत्न किये गये हैं।

श्री संघके शुभ आशीर्वादोंसे ऐसे ऐसे अनेक प्रकाशन प्रकाशित करके ज्ञानसेवाका लाभ हम निरंतर उठा सकें ऐसी शासनदेवको हृदयसे प्रार्थना।

गारीआधार (सौराष्ट्र) ता. १५-७-१९५५ — व्यवस्थापक, श्री नवजीवन ग्रंथमाला

नम्र निवेदन

हमारे अंतरकी ऊर्मियाँ जिसके लिए उमड रही थी हिलोरें ले रही थी उस **"प्रारंभिक-पाठक्रम"** को भली भाँति सम्पादन कर श्री चतुर्विध संघके करकमलोंमें अर्पण करते हुए हम एक अनिर्वचनीय आनंदका अनुभव कर रहे हैं। श्री जैन सिद्धान्तमें षडावश्यकको प्रधानरूपसे विरतिसाधक माना गया है और उनका विवरण बहुत ही विस्तारके साथ श्री आवश्यक सूत्रमें किया गया है। हरेक जैनीको इनकी पूरी-पूरी जानकारी होनेकी अत्यंत ही जरूरत है। जिस प्रकार डाककी कार्यपद्धति रेल्वे (अग्निगाडी), स्टीमर (बडा जहाज) या ऍरोप्लेन (विमान) के साथ सम्बद्ध है उसी प्रकार ये षडावश्यक प्रतिक्रमण सूत्रोंके साथ बहुत ही निकटका सम्बन्ध रखते हैं। श्री आवश्यक सूत्र ये छूट (अलग-अलग) सुमन-पुष्प समान हैं उन्हें प्रतिक्रमणोंमें मनोहर मालाकी तरह सुंदर व श्रेष्ठ ढंगसे गूथा गया है। इसी लिये श्री जैन शासनमें पंचप्रतिक्रमणका बडा भारी महत्त्व माना गया है। आराधकोंकी दुनिया ज्ञान और क्रियारूपी दो आँखोंसे अपनी मुक्ति साधना करती है। क्रिया तो उसकी एक ही आँख है। श्री प्रतिक्रमण सूत्र ये श्री जैन शासनकी आराधनाकी नींव (मूलाधार) है। धार्मिक क्रिया और सूत्रोंके अर्थ रहस्योंका ज्ञान ये दो इन सूत्रोंद्वारा प्राप्त होनेवाले और साधकताके दिव्य स्वरूपके दर्शन करनेके लिये समर्थ ऐसे निर्मल चक्षु हैं। अन इस अवसरपर हम जनताको याद दिलाना चाहते हैं कि निरे क्रिया चक्षुसे विशेष सिद्धि नहीं प्राप्त हो सकती। इस लिये आजके जमानेमें क्रियाचक्षुको मन्द करनेके लिये ज्ञानचक्षुको भी खोलनेकी अत्यन्त ही आवश्यकता है।

यद्यपि ज्ञानचक्षु खोलनेकी—प्रतिक्रमणके सूत्ररूपी सुमन पुष्पोंकी अर्थ ज्ञानरूपी सुगंधी (सुवास) लेनेकी आवश्यकता तो हरेक समयमें-युगमें होती ही है, फिर भी आज जो इस ज्ञानकी ओर बहुत ही असावधानीका

वर्तीव किया जाता है इससे समाजमें बड़ा वैमनस्य फैल गया है
इसके दुष्परिणाम-स्वरूप समाजकी अवनति (ह्रास) हो रही है
रोकने और दूर करनेके लिये इस समय सूत्रोंके अध्ययनकी बड़ी
आवश्यकता है। अतः हम विनम्र निवेदन करते हैं—प्रतिक्रमण
नष्टप्राय हुए अध्ययनका बड़े जोर शोरसे हरेक गाँवमें प्रचार कीजि
अपनी संतानको (विद्यार्थी विद्यार्थिनियोंको) इन सूत्रोंकी (अर्थ रहस्य
साथ) शिक्षा दीजियेगा, जवान बड़े बूढ़े—सभी इससे लाभ उठा
ऐसा करनेसे मेल मिलाप-संगठनकी नींव बहुत ही मजबूत (सुदृ
जायगी, इसमें सन्देहका स्थान ही नहीं।

इसी ज्ञान प्रचारके महान् कार्यके लिये विद्यापीठकी परीक्षाएँ पू
संतोषजनक एवं उपादेय सिद्ध हुई हैं। समाजकी कमीको दूर
विद्यापीठके इस प्रयासमें आप सब लोग हाथ बटावें, यही हमारी
एवं आशा है।

हमारी पाठ्यपुस्तक प्रकाशन समितिद्वारा विद्यापीठकी हरेक प
पाठ्यपुस्तकोंका संपादन कार्य शुरू किया गया है जिसका यह प
प्रयास (आदर्श) है। इसी शैलिसे पद्धतिसे अन्य पाठ्यपुस्तकोंको य
प्रगट करनेकी हमारी मनःकामना है। यह पुस्तक प्रकाशित कर रहे
हम अपना अहोभाग्य समझते हैं। आज ज्ञानसेवाका जो कुछ था
लाभ उठानेका अपूर्व सुअवसर प्राप्त हुआ है उससे हमें अपरिमि
रहा है। जहाँतक हम जानते हैं सूत्रोंके रहस्योंको इतने विस्तृ
करनेवाली पुस्तक आजतक किसी भी संस्थाद्वारा प्रकाशित नहीं
अतः आपलोग इसका आश्रय करते हुए हमें अधिक उत्साहित करे
आशा है।

इस पाठ्यपुस्तककी नवीनता यह है कि इसमें हरेक सूत्रका अ
सूत्रार्थ भावार्थ परिमल और सरल प्रश्नोत्तरी—इस पाँच विभा
गये हैं। पहले विभागके अन्तमें मूल सूत्र भी बड़े टाईपोंमें छपा
इससे सूत्र कण्ठस्थ करनेके लिये और उन्हें शुद्धिपूर्वक लिखने
बहुत ही सहायता होगी।

यह पुस्तक प्रथम गुजरातीमें प्रकाशित की गई थी उसीका यह हिन्दी अनुवाद है। इसमें कुछ आवश्यक परिवर्तन परिवर्द्धन भी किये हैं फिर भी यह गुजराती पुस्तकके अक्षर-अक्षरको ख्यालमें रखकर यथार्थ अधिकारी और बड़ी ही सावधानीसे किया हुआ अनुवाद है। इसी प्रकार इसी पुस्तकका मराठी अनुवाद भी यथाशीघ्र ही प्रकाशित करनेकी भावना है। इस प्रकार गुजराती, हिन्दी और मराठी—इन तीन भाषा भाषी प्रदेशोंमें समान पाठ्यक्रमकी पुस्तकोंका प्रचार होनेसे हम संगठनके निकट पहुँचेंगे।

इस पुस्तकमें ह्रस्व दीर्घ आदि अशुद्धियोंपर बहुत ही सावधानी रखी गई है फिर भी मानवस्वभावसे या छपाईकी भूलसे जो कोई भी अशुद्धि रह गई हो उसे ठीक कर पढ़नेकी और उन सब अशुद्धियोंको आगामी संस्करणमें सुधारनेके लिये हमें लिखनेकी हम आप—सब पाठकोंसे आग्रहपूर्वक विनती करते हैं।

अन्तमें, इस प्रकाशनमें हमारे द्वारा श्रीजिनेश्वर प्रभुजीकी आज्ञाके विरुद्ध जो कुछ भी मतिमांद्य या छपाईकी भूलसे छप गया हो उसके लिये हम श्री चतुर्विध संघके समक्ष मिच्छा मि दुक्कडम् कहते हैं।



प्रधान संपादक,
पाठ्यपुस्तकप्रकाशन समिति,
श्री जैन तत्त्वज्ञान विद्यापीठ,
पूना २

ता १५-६-१९५५

शुध्दिपत्रक

(विनति–सर्वप्रथम इस शुद्धिपत्रकसे अशुद्धियोंको ठीक कर लीजिये और बादमें पुस्तक पढ़िये ।)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	१	बीजकर	किया कर
११	१०	उत्त्र थ	उत्तर हाथ
१२	१७	पाचेन्द्रिय	पंचिंद्रिय
२०	७	गुरुवन्दनके	गुरुवन्दनके
२१	२४	सन्मार्ग	सन्मार्ग
२४	८	ईन्द्रियराज	इन्द्रियपाल
२७	३	भी सी	भी इसी
३२	१८	सलसचालेंहि	खेलसचार्मेहि
३७	१	लता	लता
३९	३	(२१)नमिनाथको	(२१) नमिनाथको
४०	७	अरहंते	अरिहंत
	१८	सर्विहि	सर्विहिं

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४५	५	तबतक	जबतक
५२	८	जो क इ	जो कोई
५३	२१	इसा लिये	तो फिर
५८	९	वदन	वन्दन
६३	११	स	हम
७१	१५	वधाता धमामे	जघाती धर्मोंसे
७७	१५	क	के
७८	२	अपूर्ण है	अपूर्ण है
८०	२४	धमको	धर्मको
८१	५	समन्नाइये	समझाइये
,	२०	मैने	मन
,	२१	अस्त्व	अस्तित्व

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८६	१६	म ऽ	मूल
९३	५	का	काय
,	२०	ल्यि	लिय
९४	२०	अ वयाथ	अ वयाथ
१०२	२०	वर	बुरे
१०६	२	अरि त	अरिहत
,	१६	दगना	ऽगना
१०७	१५	किया	किया
१०९	९	कठिण	कठिन
	१३	शचि	शुचि
१२२	१६	श्रुतिदेवी	श्रुतदवी
१२५	१९	थार	और
१३३	६	सत्तजि	सत्तुजि
,	११	सत्तावणइ	सत्ताणवइ
१३५	१३	व	वि
१४७	६	पत्थकरण	परत्यवरण
१४६	१९	न ीश्वरद्वीपम	नदीश्वरद्वीपमें
१४९	११	क्यों	क्या

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१५०	२२	वनसत्र	वनकस्वल
१५१	१	यह	वह
१५७	२५	भुजीने	प्रभुजीने
१५८	२०	दुख	दुग्ग
१६१	२०	निद	नीऽ
१६९	२७	भपक्रा	भपका
१७०	१८	इद्रभूतिजी	इद्रभूनिजी
१७१	२७	सा	साथ
१७६	२	माक	क्माक
,	१३	अमोद	आमोद
१७८	९ व ११	समेहगिखर	समतगिखर
,	१८	गणियाजी	गुणायाजी
१८०	९	व	व
१८८	२०	जन	जिन
	२१	।	हैं ।
१९८	२२	लिय	लिये
१९५	६	रह	रहा
१९६	१२	लग	लगे

आप इस प्रारभिक पाठ्यक्रमका अध्ययन
(प्रारभिक परीक्षाकी तैयारी)
★ किस प्रकार करेगे ? ★

इस पुस्तकके अशुद्धि शोधन (प्रूफ रीडिंग) के कार्यमें यथाशक्य पूरा पूरा सावधानी रखी गई है। अत इस पुस्तकके ह्रस्व दीर्घके अनुसार अध्ययन कीजियेगा। सुविधाके लिये नीचे समयपत्रक भी दे रहे हैं।

सोमवार-मूलसूत्र (कण्ठस्थ करना और शुद्ध लिखना) मगलवार-भगवान महावीर स्वामीका चरित्र सतियोंके नाम और प्रभजीके लछन बुधवार-मूलोंके अर्थ (अन्वयार्थ और सूत्रार्थ) गुरुवार-श्रेपाल चरित्र और तीर्थोंकी जानकारी शुक्रवार-सामान्यज्ञान, निबधकी तैयारी शनिवार-सूत्राके भावार्थ और परिमल विभाग रविवार-सूत्राका प्रश्नोत्तरी विभाग

मूल सूत्रमें ह्रस्व-दीर्घपर विशेष ध्यान रखना चाहिये। इस प्रकार अध्ययन करनेसे आप विशेष योग्यता वर्गमें उत्तीर्ण हो सकते है।

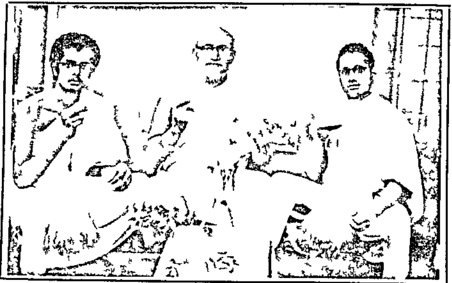
श्री जैन तत्त्वज्ञान विद्यापीठ—पूनाकी परीक्षाओंके लिए

★ हमारे प्रकाशन ★

(१) प्रारभिक पाठ्यक्रम (गुजराती हिन्दी मराठी) १–८–०
(२) श्री जैन प्रश्नोत्तर वाटिका १–८–०
(३) प्राचीन स्तवनावली १–८–०
(४) जयगिरा किरणावली १–०–०
(५) रत्नकुपिका ०–८–०
(६) प्रवेश पाठ्यक्रम भा २ (सकलित श्री नेमि जिनेश्वर पचकल्याणक पूजा व दो सज्झायें) ०–८–०
(७) ज्योतिष प्रवेश ०–६–०
(८) श्री अरुणोदय नेमनाथ ०–४–०
(९) स्नात्र पूजा ०–२–०

नवजीवन ग्रथमाला—गारीआधार (सौराष्ट्र)

★ परमपूज्य मुनिराज श्रीजितेन्द्रविजयजी महाराज ★



धमतरी चातुर्मास

सं २००८ विक्रमी

★ पू मु श्रीहरीशभद्रविजयजी महाराज ★ पू मु श्रीवलभद्रविजयजी महाराज ★



माननीय सहायक



पूज्य मुनिराज श्रीजितेन्द्रविजयजी महाराज एवं पू. मु. श्रीबलभद्रविजयजी महाराजके सदुपदेशसे गुजराती 'प्रारंभिक पाठ्यक्रम'का (संशोधन और परिवर्द्धन कर) हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करनेमें नीचे लिखे महामना धर्मप्रेमियोंकी ओरसे सहायता प्राप्त हुई है। उन महानुभावोंकी नामावली प्रसिद्ध करते हमें अत्यन्त आनन्द हो रहा है। इसी तरह दानवीरोंकी ओरसे सहायता प्राप्त होती रहेगी, तो आगेकी परीक्षाओंके पाठ्यक्रमोंके अमूल्य (अनूठे) ग्रन्थ हिन्दी भाषामें प्रकाशित करनेकी अभिलाषा है।

व्यवस्थापक–श्री नवजीवन ग्रंथमाला, गारीआधार

रुपये नाम

२५१) श्रीमान शेठ जावतमलजी जीवराजजी रामपुरिया, कलकत्ता

१५१) श्रीमान शेठ सपतलालजी छाजेड, राजनादगाँव

१३१) श्रीमान शेठ रामलाल बुधमल, धमतरी

१०१) शेठ भेरोदानजी मानकलालजी नाहर, धमतरी

१०१) श्री जैन संघ, जबलपुर (द्वारा–श्री चांदमलजी कोचर)

रु नाम

१०१) श्री महासमुंद ओसवाल पचायत
महासमुंद (द्वारा–श्री चादमलजी कोचर)

१०१) श्री सघ पचायती, पढरिया
(द्वारा–श्री चादमलजी कोचर)

१०१) ग स्व सोनीबाई दस्मानी, रायपुर

१०१) अ सौ तेजोबाई श्रीश्रीमाल, बागबहारा

१०१) अ सौ घेलाबाई श्रीश्रीमाल, बागबहारा

१०१) अ सौ आशीबाई गोलेच्छा, बागबहारा

रुपये	सहायकोंके नाम	स्थान
७५)	शेठ हीरालाल जीवनलालजी लाकड	रायपुर
७५)	श्रीज्ञानदाता (द्वारा–श्री राणुलालजी मक्लेच्छा)	धमतरी
५१)	शेठ चांदमल वीरचदजी	रायपुर
५१)	„ रतनचद धरमचदजी	,
५१)	„ अगरचद सुगरचदजी	,
५१)	„ मेघराज हर्णोतमल पोंचा	महासमुंद
५१)	„ खेमराज नेमिचद श्रीश्रीमाल	„
५१)	„ दीपचद पाबूलालजी बद	धमतरी
५१)	„ कुदनमल सपतलाल पारेख	„
५१)	„ पृथ्वीराज मिश्रीमल बगाणी	„

रुपये	सहायकोंके नाम	स्थान
५१)	सेठ प्रेमराज कीरतमल गोठिया	धमतरी
५१)	,, चुनिलालजी मेघराज कोचर	[illegible]
५१)	अ सौ मानुबाई गोलेच्छा	धमतरी
३६)	श्री बालाघाट जैन संघ (द्वारा-श्री चांदमलजी काबर)	[illegible]
३१)	सेठ जोगावरमल मेघराज	रायपुर
२७)	एक सद्गृहस्थ	,,
२५)	सेठ जेठमलजी भणसाली	[illegible]
२५)	,, शिवराज [illegible] पारख	[illegible]
२१)	सेठ धनीलाल [illegible] शाह	[illegible]
२१)	,, गुलराजजी मेघराजजी	रायपुर
२१)	,, देवीचंद लक्ष्मीचंद काबर	[illegible]
२१)	,, जीवनलाल जोगराजजी	रायपुर
२१)	,, पन्नालालजी डागा	[illegible]
२१)	एक सद्गृहस्थ	[illegible]
२१)	सेठ रेवचंद जवरीलाल कोठारी	[illegible]
२१)	एक बहन	कलकत्ता
२०)	सेठ नेमिचंदजी चोपड़ा	,,
१५)	,, मागमल अगरचंद [illegible]	धमतरी
१५)	कुंवरजीभाई गुजराती	,,
११)	,, मिश्रीमल जसराज कोठारी	,,
११)	सपतलाल मानकचंद [illegible]	,,
११)	,, छोगमल नेमिचंदजी [illegible]	,,
११)	,, जोधराज सपतलाल [illegible]	,,
११)	,, हंसीलाल भंवरलाल [illegible]	,,
११)	अमृतमल लूनकरण [illegible]	,,
११)	,, पृथ्वीराज मेघराज [illegible]	,,
११)	,, लाभचंद प्रेमचंद [illegible]	,,

रुपये	सहायकोंके नाम	स्थान
११)	सेठ रतनचंद धावमल कोचर	
११)	,, घस्तिमल उत्तमचंद लोढा	धमतरी
११)	,, दवोचंदजी बगाणी	,,
११)	तेजपाल एण्ड सन्स	,,
११)	सेठ सोनराज पदमचंद बरछावत	,,
११)	,, मीनराज मूलचंद गोलेछा	,,
११)	सुखराम फुलचंद संकलेचा	,,
११)	तेजमल धवरचंदजी	,,
११)	,, गुलाबचंद आशकरण	,,
११)	,, पूनमचंदजी बैद	रायपुर
११)	,, तेजमल शिवराज	,,
११)	,, आसकरण दीपचंद	,,
११)	हस्तिमल गुलाबचंद	,,
११)	,, रमिचंद टीकमचंद	
११)	लतमलजी बुरड	
११)	भवरलाल सागरमल	,,
११)	श्री कचराबाई चोपडा	
११)	,, गोरीबाई लोंकड	धमतरी
११)	,, गुमानीबाई श्रावक	
११)	राजकुंवरबाई लोढा	
११)	कस्तुरीबाई तातीआना	,,
११)	झमकोबाई कोचर	,,
११)	बसतीबाई श्रीश्रीमाल	राजनांदगांव
११)	,, ननीबाई पींचा	महासमुंद
११)	,, सारबाई	कोसरगी
९)	श्री धमाबाई मालू	सिसोरा
७)	सेठ जटमलजी पारेख	रायपुर
७)	,, गनमल धवरचंद कोचर	धमतरा
७)	,, कनयालाल लुनोआ	मामाभांचा

रुपये	सहायकोंके नाम	स्थान
७)	श्री पांचीबाई गोलेच्छा	धमतरी
७)	,, रूपीबाई	,,
७)	,, मुलीबाई श्रीश्रीमाल	महासमुद
७)	,, जमनाबाई श्रीश्रीमाल	,
७)	,, मिरगोबाई बरडिया	,
७)	,, उल्लासबाई बाफना	,,
७)	,, तेजाबाई कोचर	,
७)	,, पानुबाई पारेख	,
७)	,, कचराबाई लुनीआ	,
६)	,, चंपाबाई गोलेच्छा	धमतरी
५)	सेठ माणेकचंद कनयालाल पारेख	,
५)	पुसीलाल वैद्य	,
५)	,, तुलसीराम राणुलाल गोलेच्छा	
५)	,, सुदरलालजी महोटा	रायपुर
५)	,, आगकरण मूलचंद	,,
५)	,, जेठमलजी पारेख	,
५)	,, माणकचन्दजी सावनसुखते	,
५)	गुलाबचंद मांगीलाल	,
५)	,, जठमलजी सुखलालजी	बागबहारा
५)	,, तेजमल भीखमचन्द	सरूना
५)	,, सुभागमल मांगीलाल कोचर	वाटाभजी
५)	,, लक्ष्मीचंदजी बोथरा	जमनाल्पुर
५)	,, अगरचंदजी कन्हैयालाल	,
५)	कवरलाल मदनचंदजी	
५)	श्री जुगाबाई सकलेच्छा	धमतरी
५)	पार्वतीबाई राठिया	,
५)	प्रेमिबाई चापड़ा	,
५)	पेपोबाई चापड़ा	,
५)	,, पानीबाई लोकड	,

रुपये	सहायकोंके नाम	स्थान
५)	श्री घाईबाई लावड	
५)	कस्तुरीबाई बगाणी	धमतरी
५)	जीयाबाई बगाणा	
५)	रमकुबाई राकेचा	
५)	रमकुबाई लावड	,
५)	गीमाबाई पारेख	"
५)	कमलाबाई चापडा	' ,
५)	कानीबाई चापडा	,
५)	गट्टाबाई चोरडा	,
५)	भवरबाई गाल्छा	
५)	धापुबाई लूनीआ	
५)	दीपाबाई लुनीआ	"
५)	झुमकीबाई लावड	
५)	, फुलुबाई लावड	
५)	सपतबाई नाहर	,
५)	चेतनबाई नाहर	
५)	भीखीबाई पारेख	,
५)	जमनाबाई राठिया	,
५)	सुदरबाई राटिया	
५)	जीयाबाई सवेचा	
५)	जवरीबाई गुल्छा	,
५)	समाबाई लुरड	
५)	, गाभाबाई बगाणी	
५)	, चम्पाबाई पुगलीआ	पढरिया
५)	छगनीबाई डाघा	रायपुर
५)	जमनाबाई गोलछा	
५)	, उमीबाई गाल्छा	
५)	पानबाई बेगानी	
५)	पद्माबाई बगानी	,

रुपये	सहायकोंके नाम	स्थान
५)	श्री आनीबाई बगानी	रायपुर
५)	,, माणकबाई बांठिया	,,
५)	,, मगीबाई चोपडा	,,
५)	,, पानबाई मारोठी	,,
५)	,, कमलाबाई बद	,,
५)	,, चद्रकातावेन गुजराती	,,
५)	कमलाबाई मालु	महासमुंद
५)	,, हीराबाई माल	,,
५)	,, धापुबाई मालु	,,
५)	रत्नाबाई श्रीश्रीमाल	,,
५)	लीलाबाई पाचा	,,
५)	गुलाबबाई	कलकत्ता
५)	,, पतासीबाई श्रीश्रीमाल	बागबहारा
५)	आनीबाई श्रीश्रीमाल	,,
५)	केसरीबाई गोलेच्छा	,,
५)	,, पानीबाई बांठिया	,,
४)	शेठ दानमल नेमिचदजी डागा	मामाभांचा
४)	श्री जतनबाई पारेख	धमतरी
४)	अनोपाबाई गोलेच्छा	
४)	ढलाबाई बोथरा	महासमुन्द
३)	कु माडुबाई बगाणी	धमतरी
३)	श्री पेपीबाई पीचा	कोसरंगी
२)	शेठ हस्तिमल राणूलाल पारेख	धमतरी
२)	,, तेजमल धवरचन्दजी बगाणी	,,
२)	,, जमनालाल दुगड	
२)	सोनराज लक्ष्मीचद सोनी	
२)	विद्यार्थी राणूलाल बगाणा	,,
२)	शेठ जेवरचदजी बोथरा	,,
२)	,, गणपतदास सुदरजी गाधी	,,
२)	शेठ जठमलजी बोथरा	जमन

रुपये	सहायकोंके नाम	स्थान
२)	„ आनन्दमलजी बैद	„
२)	„ सुगनमल शिवनलाल नवलखा	„
२)	„ दीपचंद लालचंद जैन	„
२)	„ मघराजजी म्होरा	„
२)	श्री मचीबाई छाजेड़	धमतरी
२)	„ गंगाबाई धाड़िया	„
२)	रमकुबाई पारेख	„
२)	„ धापाबाई रोबड	„
२)	„ लाडाबाई रावलच्छा	„
२)	„ पानीबाई	„
२)	„ जीयोबाई राकेचा	„
२)	कु आनीबाई गड़िया	„
२)	श्री जमनाबाई गोलेच्छा	देवघ
२)	गंगाबाई गोलच्छा	वीरपुर
२)	जतनबाई धाड़िया	जगदलपु
२)	सुन्दरबाई गड़िया	मुगर
२)	„ बरजुबाई गड़िया	शान्ति
२)	कमलाबाई धाड़िया	
२)	प्यारीबाई झाबक	रायपु
२)	धापुबाई बगानी	
२)	„ दिवानीचन्द गुजराती	
२)	गिरियाबाई लोढा	
२)	„ गुलाबबाई पारेख	
२)	शान्तिबाई गोलच्छा	महागाम
२)	मातीबाई डागा	
२)	केसरबाई लूनीया	
२)	कु वसुमती शंकरलाल	
२)	श्री मोनीबाई पावा	कोलर
२)	„ बदामीबाई छल्लाणी	बागबहार
१)	सेठ मवरलालजी जैन	जमालपु
१)	श्री केशरीबाई छाजड़	धमतरी
१)	कु राधाबाई चोरडा	„

॥ श्रीशंखेश्वरपार्श्वनाथाय नमः ॥



प्रारंभिक पाठ्यक्रम.



• विभाग पहला •

श्री नवकारमंत्रसे संथारापोरिसी तक २१ सूत्र

• अन्वयार्थ • सूत्रार्थ • भावार्थ • परिमल

• सरल प्रश्नोत्तरी • मूल सूत्र

१ श्री नवकार मंत्र (पंचमंगल सूत्र)

अन्वयार्थ

नमो-नमस्कार हो अरिहंताण-चार घाती कर्मोंका नाश करनेवाले श्रीतीर्थंकर भगवंतोंको सिद्धाण-आठ कर्मोंका क्षय करनेवाले सिद्ध भगवन्तोंको आयरियाण-छत्तीस गुणोंसे विभूषित आचार्य महाराजोंको उवज्झायाण-पचीस गुणोंसे अलंकृत उपाध्यायजी महाराजोंको लोए-(ढाई द्वीप प्रमाण) मनुष्य लोकमें संचार करनेवाले सव्वसाहूण-सत्ताईस गुणमंडित, सर्व साधु महाराज एवं साध्वीजी महाराजोंको एसो-ये पंच-पांच नमुक्कारो-नमस्कार सव्व-सब पाव-पापोंका प्पणासणो-सम्पूर्णतया नाश करनेवाले मंगलाण-मंगलोंमें च-और सव्वेसिं-सब(में) पढम-प्रथम, श्रेष्ठ हवइ-है मंगलं-मंगल

सूत्रार्थ

नमो अरिहंताणं–चार घातीकर्मोंका ‡ नाश करनेवाले श्री अ
भगवन्तोंको (मेरा) नमस्कार हो। (मैं उन्हें नम
करता हूँ।)

नमो सिद्धाणं–जिन्होने आठ कर्मोका क्षय करके मोक्ष
किया है–जो परमशुद्ध हुए हैं, ऐसे श्रीसिद्ध भग
को नमस्कार हो।

नमो आयरियाणं–आचार्य महाराजोंको नमस्कार हो।

नमो उवज्झायाणं–उपाध्यायजी महाराजोंको नमस्कार हो

नमो लोए सव्वसाहूणं–ढाई द्वीप प्रमाण मनुष्यलोकमें
करनेवाले सर्व साधु महाराजोको नमस्कार हो।

एसो पंचनमुक्कारो–(ऊपर कहे हुए) पांच परमेष्ठियोंको
हुए ये नमस्कार

सव्वपावप्पणासणो–अनन्त जन्मोंके संचित सब पापोंका
तथा नाश करते हैं।

मंगलाणं च सव्वेसिं–और ऐहिक एवं पारलौकिक सर
पढमं हवइ मंगलं–प्रथम (सर्वश्रेष्ठ) कल्याणकारी हैं।

---

‡ कर्म आठ है। चार घाती कर्म और चार अघाती कर्म। ज्ञा
ज्ञानावरणीय मोहनीय और अंतराय ये चार घाती
वेदनीय, आयु नाम और गोत्र ये चार अघाती ...

भावार्थ

इस सूत्रमें पांच परमेष्ठियोंको नमस्कार किया गया है। इनमेंसे एकको भी सच्चे दिलसे नमस्कार किया जाय, तो वह सब विघ्नोंको दूर कर भविष्यको मंगलमय बनाता है। इस सूत्रका श्रीमहानिशीथसूत्रमें दूसरा नाम **पंचमंगल महाश्रुतस्कंध** है। इस नवकारमंत्रको **श्री नमस्कार महामंत्र** भी कहते हैं। यह चौदह पूर्वोंका सार है। यह शाश्वत अर्थात् अनादि मंत्र है। इसके रचयिता कोई नहीं है तीर्थंकर भगवान तो इसे प्रकाशमें लानेका कार्य करते हैं। सूक्ष्म दृष्टिसे विचार किया जाय, तो एक बात साफ साफ ख्यालमें आएगी कि अरिहंत किसी व्यक्ति विशेषका नाम नहीं है। जो स्वयं संबुद्ध होकर राग और द्वेषरूपी आंतरिक शत्रु (**अरि**) ओंका नाश (**हन्त**) करते हैं, उन वीतराग तीर्थंकरोंका ही यहाँ 'अरिहन्त' पदसे बोध होता है। इस प्रकार मूलमंत्रमें जब कि भगवानका भी नाम नहीं आता तब आचार्य या उपाध्याय महाराजका नाम कहाँसे आएगा? इसीका नाम गुणपूजा है। जैन शासनमें व्यक्तिपूजा और दृष्टिरागको स्थान नहीं है। जिस प्रकार उत्तम औषधिसे रोग दूर होता है, और शरीरकी शक्ति भी बढ़ती है, उसी प्रकार इन पांच परमेष्ठियोंके नमस्कारसे (इस महामंत्रसे) (१) सर्व पापोंका नाश और (२) भविष्यमें श्रेष्ठ मंगलकी प्राप्ति होती है। अर्थात् यह मंत्र भूतकालके पापोंको (पापोंसे उत्पन्न होनेवाले विघ्नोंको) दूर कर भविष्यको उज्ज्वल बनाता है। यह नवकार मंत्र ६८ अक्षरात्मक पूर्ण माना जाता है। इसके जपसे आत्मा पवित्र और शीघ्र कर्मबंधनशाली बनती है। नवकारका नौ लाख जप होनेसे जीवको नारकी योनिमें नहीं जाना पड़ता।

परिमल

★ विधिपुरस्सर ९ करोड़ नवकारका जप होनेसे तीन जन्ममें मोक्ष प्राप्ति होती है। [नवकार जपकी विधि भगवान, उनकी तस्वीर या श्रीसिद्धचक्रके

सन्मुख इरियावही बोलकर ५–१०–१५ इस तरह पाचकी गिनतीसे मागणी करनी चाहिये, अधूरी या कम नहीं। उपक रणस मार– सुधरे एव शुद्ध कपड़े पहनने चाहिये।]

★ शाश्वत नवकार मत्र साधन आत्माको पवित्र बनाकर उसके अनन्त दुर्गुणोंका नाश करता है– इससे इस मत्रका प्रभाव स्पष्ट होता है।

★ नवकार महामंत्रके प्रभावका साक्षात्कार करना हो तो ८ मासतक निर्मत्य नवकार मालाका जप कीजिये।

★ जिस प्रकार तैराक पाँव हिलाकर पीछेसे पानीको हटाता है और हाथसे आगेसे जलप्रवाहका दूर करता हुए आगे बढ़ता है उसी प्रकार नवकार मत्रका जप करनेवाला पूर्वसंचित (पीछके) पापोंका नाश करता है और आनेवाले (आगेके) विघ्नोंको दूर करते हुए आराधनामार्गमें आगे बढ़ता है। नवकार मत्रको हरदम रटनेवाला इस प्रकार और भीषण भवसमुद्रको सहजसे पार करता है।

★ परमेष्ठियोंकी गुणपूजाका उत्तम और व्यापक भाव नवकार महामत्रकी महत्ताका द्योतक है। इसके स्मरणसे आत्मामे परिपूर्ण चैतन्यका आविर्भाव और स्वस्वरूपका ज्ञान होता है। इसके शब्द–शब्दमें— अक्षर–अक्षरमे जीवोंके प्रति वात्सल्यभावना है।

★ चौदह पूरब दोहनरूप नवकार मत्र'के "नमो ही नमो' शब्दसे उपकारियोंको नमस्कार करनेका विधान है इससे एक बात स्पष्ट होती है कि धर्मका मूल विनय है।

★ मालाके १०८ मणियोंसे जप करना और पाच परमेष्ठियोंको नमस्कार करना इसका आदर्श प्रभाव यह है कि इन पाच परमेष्ठियोंके १०८ गुण अपनेमें आ जाते हैं।

★ नवकार मत्रमें ढाई द्वीपप्रमाण मनुष्य लोकके भूत भविष्य और वर्तमान तीनों कालके सब तीर्थंकर भगवान आचार्य महाराज उपाध्यायजी महाराज और साधु महाराजोंकी गुणपूजा है— इस बातका विचार करनेसे भी यह मत्र चमत्कारपूर्ण और प्रभावशाली मालूम पड़ता है।

★ नमो अरिहंताणं पदसे हम यह जान सकते हैं कि जिस प्रकार अभी भरतक्षेत्रमें तीर्थंकरविहीन काल है, उस प्रकार समूचे मनुष्यलोकमें नहीं होता। मनुष्यलोकमें तो २० या उससे अधिक तीर्थपति विद्यमान होते ही हैं। अपने नाथ बिना पृथ्वीदेवी रह ही नहीं सकती। यहाँ भरतक्षेत्रमें नहीं तो महाविदेहक्षेत्रमें तीर्थंकर भगवंत होते ही हैं। इस समय भी महाविदेहक्षेत्रमें ४ घाती कर्मोंका क्षय किया है ऐसे केवलज्ञानी अरिहंत भगवंत विजयके साथ विहार करते हैं। इसी लिए भाव तीर्थंकरोंकी वन्दनासे भी यह पद आज हम गौरवके साथ बोल सकते हैं।

★ नूतन वर्षका अभिनन्दन परिचितोंको ही किया-भेजा जाता है पर जिन्हें हमने देखा नहीं और जिनसे हम बिल्कुल अपरिचित हैं—उन (ढाई द्वीपप्रमाण मनुष्यलोक-कर्मभूमिमें विहार करनेवाले एवं महाव्रतोंका पालन करनेवाले) सब मुनिराजोंको भी हम नमो लोए सव्वसाहूणं इस पदसे नमस्कार करते हैं यह हमारा सौभाग्य है। इससे जैन शासनकी विशाल उदारता (एवं धर्म प्रीति) प्रगट होती है।

★ नवकार महामंत्र १४ पूर्वोंका सार—४५ आगमोंका निचोड़ है एक तरफ ४५ आगमोंके अध्ययनसे विद्वान पुरुष अपना कल्याण करते हैं जबकि दूसरी ओर सर्वसामान्य एवं अज्ञानी लोग श्रद्धापूर्वक नवकार मंत्र जपते ही अपना श्रेय सिद्ध करते हैं। आगमोंको पढ़नेका अधिकार साधु आदि महाराजोंको ही है, शेष श्रावक श्राविका समाजके लिए अधिकतर तो नवकार मंत्र ही परम आधार है।

★ पाँचों परमेष्ठी पूज्य और हम पूजक (पुजारी) हैं—यह भाव 'नमो' शब्दसे निकलता है।

★ व्यक्तिपूजाको छोड़कर गुणपूजाका ही महत्त्वपूर्ण स्थान होनेसे भी नवकार मंत्र 'महामंत्र' कहा जाता है। इससे एक बात स्पष्ट

प्रश्न २—नवकारमंत्रमें किनका स्मरण और किन्हें नमस्कार किया जाता है?

उत्तर —इस महामंत्रसे जगतके परम पवित्र पाच परमेष्ठियोंका स्मरण और उन पाचोंको नमस्कार किया जाता है।

प्रश्न ३—परमेष्ठी माने कौन? उनके नाम कहिये।

उत्तर —उच्चतम स्थानको प्राप्त हुई आत्मा परमेष्ठी है। (१) अरिहंत (२) सिद्ध (३) आचार्य (४) उपाध्याय (५) साधु—ये पाच परमेष्ठी है।

प्रश्न ४—जैन दर्शनकी यथार्थता–गुणग्राहकता अन्य प्रमाणसे बताइये।

उत्तर —बहुश्रुतशिरोमणि पू आ भ श्रीहरिभद्रसूरिजीका एक श्लोक पढनेसे इसका पूरा पूरा ज्ञान हो जायगा।

श्लोक–पक्षपातो न मे वीरे न द्वेष कपिलादिषु।
युक्तिमद्वचन यस्य तस्य कार्य परिग्रह ॥

भावार्थ यह है कि हमें नामसे मतलब नहीं। नाम चाहे कपिल हो या महावीर–नाममात्रसे ही हम पक्षपात नहीं करेंगे। जिसका वचन सयुक्तिक होगा वही हमें मान्य है।

प्रश्न ५—नवकारमंत्रका जप कब करना चाहिये?

उत्तर —सूता, बेसता, उठता, जे समरे अरिहंत,
दु खीयाना दु ख भागशे, ठहेशे सुख अनत।

नवकारमंत्र १४ पूर्वोका सार है। १४ पूर्वधर महामुनिराजोंको भी अन्तसमय (अशाता वेदनीयके उदयसे

पढे हुए पूर्वोको भूल जानेके कारण या उनके मनन चिन्तन करनेका अवसर न रहनेके कारण) इस नवकारमन्त्रका ही आश्रय लेना पडता है। भगवान श्री पार्श्वनाथस्वामीजीने कुमार अवस्थामें जलते हुए नागको यह मंत्र सुनाया था, इसके प्रभावसे मरनेके बाद नाग धरणेन्द्र हुआ था। इस महामंत्रका प्रभाव अनन्त और आश्चर्यकारक है।

प्रश्न ६—३रे, ४थे और ५वें परमेष्ठी तो वीतराग नहीं है, तो वे पूज्य कैसे? इसी प्रकार अन्य छद्मस्थ मनुष्योंको इस मंत्रमें स्थान क्यों नहीं दिया गया?

उत्तर —आकार-प्रकारसे तो ये तीनों परमेष्ठी मनुष्य जैसे ही है; किन्तु संसारियोंसे-रागियोंसे इस संसारके त्यागियोंका कीमत निश्चित ही अधिक माननी पडेगा। वे वीतराग नहीं है, पर वीतराग होनेकी निरंतर चेष्टा कर रहे है और वीतरागकथित मोक्ष मार्ग ही-का उपदेश करते हैं। वे कंचन-कामिनीके त्यागी और मोक्षमार्गके अनुरागी है। अतः एव वे पूजनीय है संसारी मानव ऐसे त्यागी, आत्मार्थी, उपकारी और पूज्य नहीं है, यही कारण है कि जिससे उनका नाम इस पवित्र मंत्रमें नहीं आता।

प्रश्न ७—नवकार महामंत्रका श्री सिद्धचक्र यंत्रके साथ क्या संबंध है?

उत्तर —श्री सिद्धचक्र यत्रमें नौ पद है और पाच परमेष्ठियोंमें पहले दो देव है और पीछेके तीन गुरुपदको सुशोभित करनेवाले है। इस प्रकार धर्मके आगार देव और धर्मके दाता गुरु—ये दोनों नवकारमत्रमें होनेसे गुणगुणी सबधसे धर्मस्वरूप दर्शन, ज्ञान, चारित्र और तप भी इस महामत्रमें है ही। देव और गुरु गुणी है जबकि दर्शन, ज्ञान, चारित्र और तप आत्माके गुण है। 'लाल घडा' कहनेमें लालिमा घडेसे अभिन्न है—यह गुणगुणी सबध हुआ। आश्विन और चैत्रकी ओलीजीमें दूसरे प्रकारसे इस महामत्रका ही आराधन होता है, ऐसा भी कह सकते है। इस प्रकार श्रीसिद्धचक्र यत्र और श्रीनवकार महामत्र वास्तवमें अभिन्न ही है—यही उनका सबध हुआ।

---

२ श्री पंचिदिय (स्थापना) सूत्र

अन्वयार्थ

पंचिदिय–पाँचों इद्रियोंको **सवरणो**–अपने वशमें रखनेवाले **तह**–उसी प्रकार **नवविह**–नौ प्रकारकी **बभचेर**–ब्रह्मचर्यव्रतका **गुत्तिधरो**–गुप्तियोंका धारण (रक्षण) करनेवाले **चउविह**–चार प्रकारके **कसाय**–कषायोंसे **मुक्को**–अलिप्त, दूर, मुक्त

इय–इन अट्ठारस–अठारह गुणहिं–गुणोंसे सजुत्तो–विभूषित [१] पच–पाँच महव्वय–महान् व्रतों (प्रतिज्ञाओं) से जुत्तो–युक्त पचविहायार–पाँच प्रकारके आचारोंके पालण–पालनमें समत्थो–समर्थ पचसमिओ–पाँचों समितियोंका पालन करनेवाले तिगुत्तो–मनोगुप्ति, वचनगुप्ति और कायगुप्ति–इनका आचरण करनेवाले इस प्रकार ये छत्तीस–छत्तीस गुणो–गुणोंसे अलंकृत गुरु–गुरुमहाराज मज्झ–मेरे [२]

सूत्रार्थ

पंचिंदियसंवरणो (५)—पाँचों इन्द्रियोंके विकारोंको अपने वशमें रखनेवाले

तह नवविहबंभचेरगुत्तिधरो (९)–उसी प्रकार नौ प्रकारकी ब्रह्मचर्यकी गुप्तियोंका (शीलव्रतके स्थानोंका) रक्षण करनेवाले

चउविहकसायमुक्को (४)—क्रोध, मान, माया और लोभ इन चार प्रकारके कषायोंसे दूर रहनेवाले

इय अट्ठारसगुणेहिं संजुत्तो—इन अठारह गुणोंसे विभूषित [१]

पंचमहव्वयजुत्तो (५)—१ हिंसा न करना २ असत्य न बोलना ३ चोरी न करना ४ स्त्रियोंको स्पर्श न करना ५ किसी भी प्रकारका (रुपये पैसे आदिका) परिग्रह न करना–इन पाँच महान् व्रतोंसे युक्त

पंचविहायार पालणसमत्थो (५)—ज्ञानाचार, दर्शनाचार चारित्राचार, तपाचार एवं वीर्याचार इन पाँचों प्रकारके

आचारोंके पालनमें समर्थ, सफल अर्थात् पुरुषार्थी एवं शक्तिसम्पन्न

पंचसमिओ तिगुत्तो (५+३)—पाँच समितियोंका पालन करनेवाले और मन, वचन एवं कायाके अशुभ व्यापारोंसे दूर रहनेवाले—तीनों गुप्तियोंका आचरण करनेवाले

छत्तीसगुणो गुरु मज्झ—उपरोक्त छत्तीस गुणोंसे विराजमान मेरे गुरुमहाराज है। (मैं उनका स्थापना करता हूँ।) [२]

भावार्थ

इस सूत्रमें आचार्य महाराजके छत्तीस गुणोंका वर्णन किया है। आचार्य महाराज या गुरु महाराज उपस्थित न हो तो उल्टा हाथ रख कर नवकार एवं पंचिन्दिय सूत्रोंसे उनके गुणोंकी स्थापना कर इस स्थापनाचार्यजीके सामने स्वयं गुरुमहाराज ही सम्मुख बिराजमान है—ऐसी भावनासे हम सामायिक आदि धार्मिक क्रियाएं कर सकते हैं। गुरु महाराजके स्थानपर पुस्तक माला सम्पुट या सम्यग् दर्शन ज्ञान चारित्रके किसी भी उपकरणको उच्च स्थानपर रखकर नवकार और पंचिंदिय सूत्र पढ़कर स्थापनाचार्यजीकी स्थापना की जाती है। इनके समक्ष भी क्रिया करनेसे क्रिया शुद्ध हो सकती है इसी लिये इस सूत्रका दूसरा नाम स्थापना सूत्र भी है।

परिमल

★ शरीर और मनको वश करनेके लिए श्रेष्ठ साधनभूत पांच समितियाँ और तीन गुप्तियाँ शरीरमें रही हुई आत्मापर निरंतर कड़ा पहरा करती है। यदि गुरुमहाराजके आचरणमें ही य न होती तो उनका आदर ही कौन करते? इनके होनेसे ही वे विशुद्ध और निर्मल हृदयके माने जाते है और सारे विश्वमें अपना आदर्श प्रभाव फैला सकते है।

★ मन वचन और कायापर उनका कितना अधिकार है और उनकी मनोगत भावनाऐं कितनी उच्च है—इसका साक्षात्कार हमें गुरु-

महाराजके पाँच समितियों और तीन गुप्तियोंके पालनसे होता है।

★ धार्मिक क्रियाओंमें सम्यग् उपयोगपूर्वक जो प्रवृत्ति की जाती है, उसका नाम समिति यह उसका सरलार्थ हुआ। उसी प्रकार चंचल मन वचन और कायाको स्थिर करनेका उपाय या उनकी अशुभ प्रवृत्तियोंसे दूर रखना—यह है गुप्तिका अर्थ।

★ आज कल संसारमें जिस प्रकार भिन्न भिन्न कार्योंके लिये अलग-अलग समितियाँ बना कर उनके द्वारा व्यवस्थातंत्र सुगमतासे चलाया जाता है उसी प्रकार आत्माका व्यवस्थातंत्र सरलतासे चलानेके लिये केवलज्ञानी श्रीवीतरागी भगवन्तोंने पाँच समितियों और तीन गुप्तियोंका आयोजन किया है। इस हिसाबसे यों भी कहा जा सकता है।

★ दूसरोंको दुःख उत्पन्न हो जाय वैसी कटुता अपने स्वार्थी मनुष्य प्राय बनी रहती है। अत एव प्राणोंमें माधुर्यके संस्कारक लि श्रीवीतरागी भगवन्तोंने मुनिराजोंको भाषा समितिके पालनक लिये विशेषरूपसे दिया है।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १—पंचिंदिय सूत्र किस लिये है? उसमें क्या आता है?

उत्तर —सामायिक लेते समय स्थापनाचार्यजीकी स्थापन करनेके लिये नवकार मंत्रके बाद तुरन्त ही यह सू कहा जाता है। इस सूत्रमें आचार्य महाराजोंके (३६ छत्तीस गुणोंका वर्णन है।

प्रश्न २—आचार्यमहाराजके छत्तीस गुण बताइये।

उत्तर —५ इन्द्रियोंको वश करनेवाले, ९ शीलव्रतके स्थानों रक्षा करनेवाले, ४ कषायोंसे दूर रहनेवाले, ५ मह व्रतोंका धारण करनेवाले, ५ महान् आचारोंका पाल

करनेवाले, ५ समितियों और ३ गुप्तियोंका धारण करनेवाले—इस प्रकार आचार्य महाराजके ३६ गुण है। इन ३६ गुणोंसे विराजमान आचार्य महाराज परमेष्ठीके तीसरे पद—'आचार्य'को उज्ज्वल करते हैं। इन गुणोंसे वे भावाचार्य कहलाते हैं।

प्रश्न ३—पाँच इन्द्रियोंका काम व्यावहारिक भाषामें समझाइये।

उत्तर —(१) स्पर्शेन्द्रिय (चमडा)–स्पर्श जाननेका काम
(२) रसनेन्द्रिय (जीभ)–रसास्वाद चखनेका काम
(३) घ्राणेन्द्रिय (नाक)–गंधज्ञान-सूँघनेका काम
(४) नेत्रेन्द्रिय (आँख)–देखनेकाकाम
(५) श्रोत्रेन्द्रिय या कर्णेन्द्रिय (कान) सुननेका काम
(इन्द्रियोंका क्रम भी इस प्रकार ही होना चाहिये।)
एक इन्द्रियवाले जीवोंमें मात्र स्पर्शेन्द्रिय होता है। दो इन्द्रियवाले जीवोंमें स्पर्शेन्द्रिय और रसनेन्द्रिय होता है। तीन इन्द्रियवाले जीवोंमें घ्राणेन्द्रिय, चार इन्द्रियवालोंमें नेत्रेन्द्रिय और पाँच इन्द्रियवालोंमें श्रोत्रेन्द्रिय क्रमशः ज्यादा होती है।

प्रश्न ४—पाँच महाव्रतोंका स्वरूप समझाइये।

उत्तर —(१) प्राणातिपातविरमण–जीव हिंसा न करना
(२) मृषावादविरमण–झूठ न बोलना
(३) अदत्तादानविरमण–चोरी न करना
(४) मैथुनविरमण–ब्रह्मचर्यका पालन करना

(५) परिग्रहविरमण—धन धान्यादि वस्तुओंका संग्रह न करना।

सूक्ष्म जीवदयाका पालन और कंचन कामिनीका त्याग यही इन महाव्रतोंमें मुख्य तत्त्व है। आज सारी दुनिया स्त्री और धनके पीछे पागल बनी है, अतः उसे ये महाव्रत अति कठिन मालूम होंगे। अर्थ और कामकी उपासना होनेसे दुनिया आज हैरान-परेशान हो गई है। इसी लिये महाव्रतोंका तत्त्व अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, यह बात स्पष्ट हो जाती है।

प्रश्न ५—पाँच समितियोंके नाम और उनका विवरण लिखिये।

उत्तर —(१) इर्या समिति—चलते फिरते समय जीवहिंसासे बचाते हुए चलना।

(२) भाषा समिति—बोलनेमें भी संयमपूर्वक योग्य, आवश्यक, मधुर और हितकारी वचन ही बोलना।

(३) एषणा समिति—आहार जल आदि आवश्यक वस्तुओंको निर्दोष अवस्थामें प्राप्त करना। (जैसे कि मुनिराज गोचरी पानी आदि दूषित न हो जाय वैसा सावधानी रखते हैं।)

(४) आदानभंडमत्तनिक्षेपणा समिति—पात्र आदि उपयुक्त साधनोंको लेते-रखते समय प्रमार्जन करना, यतना रखना, दत्तचित्त(सावधान)रहना।

(५) पारिष्ठापनिका समिति–मल–मूत्र आदि मलिन और त्याज्य वस्तुओंको फेंकते समय जीवयतना करना

प्रश्न ६—तीन गुप्तियोंके नाम और उनका विवरण लिखिये।

उत्तर —(१) मनोगुप्ति–मनके अशुभ विचारोंको काबूमें रखना

(२) वचनगुप्ति–वाणीपर संयम, दूसरोंको दुःख हो वैसा न बोलना

(३) कायगुप्ति–कार्यवश उठते, बैठते, आते, जाते समय प्रमार्जनापूर्वक शरीरका हिल चल रखना

प्रश्न ७—स्थापनाचार्यजीकी स्थापना करते समय हाथ उलटा क्यों रखा जाता है?

उत्तर —कोई वस्तु रखते समय या किसीको देते समय हाथ उलटा ही रहता है। यहां गुणोंकी स्थापना-गुणोंका आरोपण किया जाता है, इस लिये हाथ उलटा रखा जाता है। सूत्रमें कहे हुए गुणोंसे अलंकृतोंको ही मैं गुरु मानकर उन परम पवित्र गुरु महाराजकी साक्षीमें यह धर्मक्रिया करता हूं–यह गुणोंके आरोपण का रहस्य है।

---

३ श्री खमासमण (प्रणिपात) सूत्र

अन्वयार्थ

इच्छामि–मै इच्छा करता हूँ **खमासमणो**–हे क्षमाश्र (क्षमाको धारण करनेवाले मुनिराज), हे तपस्वी महारा **वंदिउं**–वंदन करनेके लिये **जावणिज्जाए**–शक्ति अनुस **निसीहिआए**–पाप व्यापारोंका त्याग कर **मत्थएण**–शिर शिर झुकाकर **वंदामि**–(शरीरसे भी) वंदन करता हूँ।

सूत्रार्थ

इच्छामि खमासमणो वंदिउं–हे क्षमाश्रमण तपस्वी मु राज! मै आपको वन्दन करना चाहता हूँ।

जावणिज्जाए निसीहिआए–मेरी शक्तिके अनुसार (f चुराये बिना), पाप-व्यापारोंका त्याग कर

मत्थएण वंदामि–मै सिर झुकाकर वंदन करता हूँ।

भावार्थ

दो घुटने दो हाथ और सिर इन पाँच अंगोंसे भूमिके स्पर्श होनेवाले प्रणाम वंदनको खमासमण कहते है। इस सूत्रका दूसरा "पंचांग प्रणिपात सूत्र" भी है।

परिमल

★ देव, गुरु महाराज या ज्ञानको वंदन करते समय सिर झुकाया जात यह नम्रता और विनय गुणोंका द्योतक है।

★ जैसे पाश्चात्य देशोंमें सलाम करनेका रिवाज है व आर्यावर्तमें जोड़कर स्नेह प्रगट करनेकी पद्धति है वैसे शास्त्रीय पद्धति प

प्रणिपात कहते हैं। उसमें भी इन शब्दोंके उच्चारणके साथ वंदन करना चाहिए—यह हम इस सूत्रसे ही जान सकते हैं।

★ बड़ोंके सामने या शिष्ट समाजके सभ्योंके सम्मुख बोलते समय बहुतसे आदमी थरथराने कांपने लगते हैं क्योंकि उनके सम्मुख वे बहुत ही अज्ञान हैं। इनका अज्ञान ही इन्हें थरथराता है। उसी प्रकार देव या गुरुको वंदन करनेवालेके कर्म वंदनके समय कांपने लगते हैं। अत एव वंदनसे घोर कर्मोंका नाश होता है इसमें आश्चर्य ही नहीं।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १—खमासमण सूत्रका दूसरा नाम क्या है? उसका उपयोग बताइये।

उत्तर—इसका दूसरा नाम "**प्रणिपात सूत्र**" है। इस सूत्रसे देव गुरुको प्रणाम किया जाता है। स्वयं दोषोंसे परिपूर्ण होनेपर ऐसे गुणोंके आगर मिल जानेसे हृदय विनम्र हो जाता है, तब तो शरीरका श्रेष्ठ अंग—सिर स्वयं झुक पड़ता है। गुणीको प्रणाम करनेसे अपनी अज्ञानता अपनी नजरमें आती है और पूज्योंकी विशेष गुणसम्पन्नता भी स्पष्ट हो जाती है। ऐसे गुण अपनेमें कब आयेंगे—यह आकांक्षा भी पैदा होती है।

प्रश्न २—प्रणाम कैसे होता है? उसका नाम क्या है?

उत्तर—दोनों घुटनोंको जमीनपर टेककर, दोनों हाथ जोड़, भूमिके स्पर्शपूर्वक सिर झुकाकर जो प्रणाम किया जाता है, उसे "**पंचांग प्रणिपात**" कहते हैं। इस प्रकार

नमस्कार करनेके पहले " निसीहि " शब्द कहकर घर या संसारके सब पाप व्यापारोंका त्याग किया जाता है। अन्य प्रवृत्तियोंको भूल जानेसे ही प्रणाममें भावशुद्धि आ सकती है। इसी कारणसे मंदिरमें या उपाश्रयमें (देव या गुरुके पास) जाते समय 'निसीहि' कहनेकी प्रणाली और विधि है। यहाँ व्यापार माने प्रवृत्तियाँ।

प्रश्न ३—क्या नमन और वंदनमें कुछ फर्क है ?

उत्तर —" नमो अरिहन्ताण "से होनेवाला नमस्कार मनसे भी हो सकता है। इस लिये नवकारवालीमें यह नवकार गिना जाता है। भावपूर्वक हार्दिक नमस्कार ही इसमें मुख्य है। इसमें शरीरसे सिर झुकाकर श्री अरिहन्त भगवन्तोंको प्रणाम करनेका नहीं होता, पर केवल भाव नमस्कारसे ही संतोष मानना पड़ता है। खमासमणमें तो शरीर झुकाना ही पड़ता है—शरीर या मस्तक झुकाये बिना " खमासमण " सूत्र कहा ही नहीं जाता। इतना नमन और वंदनमें अन्तर बताया जा सकता है। तत्त्वतः तो दोनों क्रियाओंसे क्रमके शयका ध्येय ही सिद्ध होनेवाला है।

४ इच्छकार सूत्र (सुगुरुकी सुखशातापृच्छा)

अन्वयार्थ

इच्छकार–मैं चाहता हूँ **सुहराई**–सुखमें रात (या **सुहदेवसि** सुखमें दिन) **सुखतप**–सुखपूर्वक तपस्या **शरीर निराबाध**–व्याधिरहित शरीर **सुखसजमजात्रा**–सयमरूपी यात्रामें सुख **निर्वहो छोजी**–(सत्र सुखही) प्रवृत्त है न? **स्वामी**–हे पूज्य! **शाता छेजी**–सुखशाता है न? **भातपाणीनो**–आहारपानी **लाभ देजोजी**–ग्रहण करनेके लिये पधारकर मेरा घर आगन पवित्र कीजियेगा।

सूत्रार्थ

इच्छकार सुहराई (सुहदेवसि)–अर्जी गुरुमहाराज! म जानना चाहता हूँ कि आपने सुखपूवक रात बिताइ? (आपको दिनमें सुखशाता रहा होगी। रात्रीकी सुखशाता प्रात कालमें और दिवसका सुखशाता दोपहरीके बाद पूछी जाता है। अत ये दो शब्द साथ साथ नहीं बोले जाते।)

सुखतप शरीर निराबाध–तपश्चर्या निर्विघ्नतासे हुइ न? शरार रोगरहित हैं न?

सुखसजमजात्रा निर्वहो छोजी?–सयमरूपी यात्रामें सर्वत्र सुख है न?

स्वामी शाता छेजी?–हे पूज्य! आप कुशल हैं न? (मानो कोई अशाता तो नहीं है न? अशान्ति या पीडाका

कोई कारण हो तो उसे दूर करनेका म प्रयत्न करूँ, जिससे मुझे सेवाभक्तिका लाभ मिले—ऐसा मरी भावना है।)

भातपाणीनो लाभ देजोजी—आहार पानी आदि जिस किसी भी वस्तुका आवश्यकता हो, तो गौचरी-ग्रहण करनेके लिये पधारकर मुझे कृतार्थ करें।

भावार्थ

गुरुवंदनके समय इस सूत्रसे गुरु महाराजको सुखशाता पूछी जाती है। दिनमें प्रातःकाल, दोपहरो और सायंको ऐसे तीन बार उपकारक गुरु महाराजको वंदन कर शाता पूछनी चाहिये। रातमें तीन बार वंदन करना गृहस्थके लिए असंभव होनेसे श्रावको दैवसिक प्रतिक्रमणके बाद गुरु महाराजको त्रिकाल वंदना करकर श्रावक घर जाता है।

परिमल

★ गुरुवंदनकी विधि यह बताती है कि गुरुमहाराज मुझसे कितने विशिष्ट गुणगणमंडित हैं? उनके उदात्त गुणोंके स्वाभाविकरूप उनका प्रगटतया बहुमान इस सूत्रसे किया जाता है एवं विनयसे उन गुणोंका आकर्षण होता है।

★ श्री वितरागी भगवंतोंकी आज्ञाका पूर्णतया पालन तो समर्थ गुरुमहाराजही कर सकते है। उनकी तुलनामें हम तो जिनाज्ञाका अनंत भी पालन नहीं कर सकते। इसी लिये अपने लिये गुरुमहाराज पूजनीय है।

★ जैसे बिना शिक्षक पाठशाला नहीं चल सकती वैसे ही प्रतिग्राम विहार करनेवाले गुरु महाराजोंके बिना धर्मका पथ भी नहीं चल सकता। गुरु महाराजोंके सिवा अन्य आत्मार्थीओंको सुधर्मका उपदेश कौन दे सकता है? भोगी विलासीके उपदेशका प्रभाव भी नहीं पड सकता। गुरु महाराज कंचन-कामिनीके त्यागी होनेसे उनके उपदेशका गहरा प्रभाव पड सकता है।

- गुरु महाराजने आमरण असत्य न बोलनेकी प्रतिज्ञा ली है, इसी लिये उनके वचनपर विश्वास रखा जाता है। वे हमें जो उपदेश देते हैं, वह सब श्रीवीतरागी केवलज्ञानी भगवंतोंकी आज्ञानुसार ही है। वे अपने मनके अनुकूल बना बनाया कुछ भी नहीं कह सकते।
- जैसे आप्त मित्र मिलनेपर ' क्यों, घरमें सब कुशल आनंदमें है न? ' इस प्रकार कुशल समाचार पूछते हैं, उसी प्रकार हरेक आराधकको चाहिये कि वह दिनमें तीन बार गुरु महाराजसे 'सुखशाता पूछे। कारण यह है कि आध्यात्मिक दृष्टिसे वे ही अपने तारक सच्चे आप्त हैं और उन्होंने घर संसारका त्याग किया है इस लिये हम ही उनके सच्चे संबंधी हैं—भवभ्रमणके तारक सेवकका यह नाता है। अतः शाता पूछना हमारा कर्तव्य है।
- जिस प्रकार शारीरिक व्याधियोंको वैद्य या डाक्टर दूर करते हैं और मैले कपड़ोंका मल धोबी निकाल देता है उसी प्रकार गुरु महाराज हमारी आत्माके दूषणों और विकारोंको दूर कर हमें शुद्ध बनाते हैं।
- ★ जैसे विमान नियतस्थानपर ले जानेके लिये पायलट रहते हैं, वैसे धर्ममार्गमें हमारे कर्णधार गुरु महाराज हैं। पायलट सुशिक्षित होते हैं, तो पूज्य गुरु महाराज भी जिनाज्ञाके तज्ञ हैं। अशिक्षित—अनभिज्ञ पायलट विमान चलायगा तो नुकसान पहुंचाएगा वैसेही चारित्र्यादिगुणविहीन या अज्ञानी गुरु भी धर्मके कर्णधार होंगे तो अवश्य ही हानि होगी।
- ★ जैसे विमान चलानेवाला पायलट काबिल होनेपर प्रवास निर्विघ्न तासे होता है, वैसेही दृष्टिरागपोषक नहीं किंतु सन्मार्ग बतानेवाले सुगुरुका सुयोग हो जानेपर अपना भवभ्रमण मिटता है और हमें मुक्ति मिल सकती है।
- ★ जिस प्रकार विमानमें हड्रोजन वायु भरी जाती है उस प्रकार धर्मात्माओंमें उच्च भावनारूपी वायु गुरु महाराज भरते हैं। इससे जन्मसाफल्य हो सकता है।

हि प्रा पा

★ जैसे कन्याके ससुराल जानेसे उसका पुराना मयका नाता बदलकर नया ससुरालका नाता शुरू हो जाता है वैसेही समकित प्राप्त होनेके बाद दुनियाका ऐहिक संबंध बदलकर देव, गुरु और धर्मका नया संबंध शुरू होता है। इससे देव और धर्मका संबंध करानेवाले गुरु महाराजके प्रति स्नेह बढता है।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १— इच्छकार सूत्रका उपयोग बताइये।

उत्तर —गुरुमहाराजोंका सुखशाता पूछनेके समय यह सूत्र कहा जाता है। अशातावेदनीय कर्मका उदय हुआ हो अथवा रात, दिन या तपश्चर्यामें संयमकी साधना करते समय कोइ बाधा आइ हो, तो उसे यथाशक्ति दूर करनेकी भावनासे सेवाभक्तिके लिये इस सूत्रसे पूछा जाता है। अन्तमें सुपात्र दानकी उत्कट भावनासे आहार पानी ग्रहण करनेके लिये पधारनेकी बिनती की जाती है।

प्रश्न २—क्या यह बिनती मात्र आहार पानीके लिये ही है?

उत्तर — आहार-पानी' कहनेसे वस्त्र, पात्र, औषध, स्थान आदि आवश्यक वस्तुओंका भी अभिनिवेश कर लेना चाहिये।

प्रश्न ३—देवसि और राइ शब्द क्या बताते हैं? उनकी अवधि कितनी है?

उत्तर —देवसि माने दिनसबंधी। दोपहरके बारह बजेसे रातके बारह बजेतक दिन कहा जाता है। राइ यानी

रात्रिसबधी। रातके बारह बजेसे दोपहरीके बारह बजेतक रात कही जाती है।

[प्र]श्न ४—शाता क्यों पूछना चाहिये ?

[उ]त्तर —अशाता हो तो उसका निवारण करनेकी सेवा भक्तिका लाभ मिल सकता है और सुखशाता हो तो कुशल मगल जानकर आनन्द होता है। यह सेवा भक्तिका एक प्रकार है। गुरुभक्ति भी मुक्तिका आकर्षण करती है।

---

५ श्री इरियावहिय (प्रायश्चित्त) सूत्र

अन्वयार्थ

इच्छाकारेण–आपका इच्छानुसार **सदिसह**–आज्ञा दीजिये भगवन्!–हे पूज्य! **इरियावहिय**–मार्गमें आने-जानेसे लगे हुए पापोंसे **पडिक्कमामि**–मैं प्रतिक्रमण करूँ? माने उन पापोंसे मैं दूर हो जाऊ? **इच्छ**–आपका आज्ञा प्रमाण है **इच्छामि**–मैं चाहता हूँ **पडिक्कमिउ**–प्रतिक्रमण करनेके लिये **इरियावहियाए**–रास्तेपर चलनेसे हुइ **विराहणाए**–विराधनासे **गमणागमणे**–जाने–आनेसे **पाणक्कमणे**–कोइ प्राणी या जीव पैरसे या अन्यथा दबनेसे **बीअक्कमणे**–बीजोंको पैरसे रोंदनेसे **हरियक्कमणे**–हरी वनस्पति कुचला जानेसे **ओसा**–ओस **उत्तिंग**–चींटियोंकी बाँबी, रहनेके स्थान **पणग**–सेवार, लील, काई **दग**–कच्चा

पाना मट्टी-मिट्टी मक्कडा-और मकडाके सताणा-जालोंको सकमणे-पाँवमें दबाने या कुचलनेसे जे-जिन मे-मने जीवा -जावोंका विराहिया-विराधना का हो एगिंदिया-एक इन्द्रियवाले बेइंदिया-दो इन्द्रियवाले तेइंदिया-तीन इन्द्रियवाले चउरिंदिया-चार इन्द्रियवाले पंचिंदिया-और पाँच इन्द्रियवाले जावोंको अभिहया-पाँवकी चोट लगा हो वत्तिया-पाँवसे उडता मिट्टीसे दबाये गये हो लेसिया-जमीनके साथ रगेदे गये हो संघाइया-इकट्ठे किये गये हो संघट्टिया-स्पर्श किये गये हो परियाविया-परिताप या कष्ट पहुँचाया हो किलामिया-थकाये हो उद्दविया-भयभीत या हैरान किये हो ठाणाओ ठाणं-एक जगहसे दूसरी जगह संकामिया-हटाये गये हो जीवियाओ -जानसे ववरोविया-छुडाये हो, तमाम किये गये हो तस्स-वह मिच्छा-मिथ्या होवे मि-मेरा दुक्कड-पाप या दुष्कृत

सूत्रार्थ

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! —हे पूज्य! आपकी इच्छाके अनुसार आज्ञा दीजिये। (ऐसा गुरुमहाराजसे शिष्य पूछता है।)

इरियावहियं पडिक्कमामि? मार्गमें आन-जानेसे जो कुछ पाप लगा हो उससे म निवृत्त होऊ? (इसके उत्तरमें गुरु महाराज पडिक्कमेह" कहते है।)

इच्छं—आपकी आज्ञा शिरसा मान्य है।

इच्छामि पडिक्कमिउं—म पापसे निवृत्त होना चाहता हूँ।

इरियावहियाए विराहणाए—जाने-आनेके समय मार्गमें जो कुछ भी विराधना हुई हो,

गमणागमणे—जाने आनेसे,

पाणक्कमणे बीअक्कमणे हरियक्कमणे—किसी जीवको पाँवसे या अन्यथा दबानेसे, बीजोंको रौंदनेसे, हरी वनस्पति दबानेसे,

ओसा-उत्तिंग-पणग दग-मट्टी मक्कडासंताणासंकमणे—ओस, चींटियोंके बिल, पाँचों रंगकी काई-फूलन, सचित्त पानी, मिट्टी और मकड़ीके जालोंको पाँवसे रौंदनेसे या दब जानेसे

जे मे जीवा विराहिया—जिन जीवोंकी, दु:ख पहुँचाकर मैंने विराधना की हो,

एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया—एक इन्द्रियवाले (स्पर्शेन्द्रियवाले—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति), दो इन्द्रियवाले (स्पर्श और रसनेन्द्रियवाले—शंख, कौड़ी, जोंक, खपरे, सीपी, कीड़े आदि), तीन इन्द्रियवाले (स्पर्श, रसना और घ्राणेन्द्रियवाले—खटमल, चींटियाँ, चिऊँटे वगैरह), चार इन्द्रियवाले (स्पर्श, रसना, घ्राण और चक्षुरिन्द्रियवाले—बिच्छू, भौंरे, मक्खी, डाँस, मच्छर, जुगनू आदि), पाँच इन्द्रियवाले (स्पर्श, रसना, घ्राण, चक्षु और श्रोत्रेन्द्रियवाले नारकी, तिर्यंच, मनुष्य और देव) इन सब एकेन्द्रियसे पंचेन्द्रियतकके जीवोंको

अभिहया वत्तिया लेसिया—सम्मुख आते हुओंको चोट पहुँचाई हो, पाँवसे उडनेवाला मिट्टीसे दबाये हो, जमानके साथ रगेदे हो,

संघाइया संघट्टिया—एक दूसरेको चिपटे किये हो या सभीको इकट्ठे किये हो, थोडे-बहुत स्पर्शसे पीडा पहुँचाई हो

परियाविया किलामिया उद्दविया—परिताप या कष्ट पहुँचाया हो, थकाकर निश्चेष्ट बना दिये हो, भयभीत या हैरान-परेशान किये हो,

ठाणाओ ठाणं संकामिया—एक स्थानसे दूसरे स्थान हटाये या रखे गये हो,

जीवियाओ ववरोविया—जीवितसे नष्ट कर दिये हो अर्थात् मुझसे मारे गये हो

तस्स मिच्छा मि दुक्कडं—इन दुष्कृत्योंसे लगे हुए मेरे पाप मिथ्या होवें—मेरे उन पापोंका नाश होवे।

भावार्थ

चूंकि आत्मशुद्धि करनेवाले आराधकको सब प्रथम स्वयं किये हुए पापोंसे निवृत्त होना नितान्त आवश्यक है, इस सूत्रमें लगे हुए पापोंकी क्षमा याचना है—उन पापोंका मिथ्या-दुष्कृत कहा गया है। विशेषमें किस किस प्रकारसे किन किन जीवोंकी विराधना होती है इसका इस सूत्रमें स्पष्टतया वर्णन किया गया है। पापसे लिप्त आत्मा इरियावहिय सूत्र' से विशुद्ध की जाती है।

परिमल

★ जैन दर्शनकी दया-अहिंसा कितनी गहरे रहस्यसे भरी हुई है—यह इरियावहिय सूत्रसे जान सकते हैं। पराये जीवोंको हम किन

किन प्रकारोंसे कष्ट पहुँचाते हैं और उसी सूक्ष्म हिंसासे भी कैसे कैसे पाप बन्धन हो जाते है, यह भी इस सूत्रसे हम जान सकते हैं। फिर उन पापोंसे छुटकारा भी इसी सूत्रसे पा सकते हैं।

★ "हिंसा केवल पचेन्द्रिय जीवोंकी ही हो सकती है" ऐसा माननेवालोंको यह सूत्र आह्वानके साथ कहता है कि पचेन्द्रियोंके सिवा एकेन्द्रियसे चतुरिन्द्रियतकके जीवोंकी बहुत ही बड़ी दुनिया है। वे जीव भी हिंसाके योग्य नहीं हैं। जीवसृष्टि एकेन्द्रियसे पचेन्द्रिय तक है, यह भी इस सूत्रसे सिद्ध होता है।

★ चूंकि अन्य किसी भी दर्शनकारने एकेन्द्रियसे पचेन्द्रियतकके जीवोंकी इतनी सूक्ष्म अहिंसाका निरूपण नहीं किया है, जैनसिद्धान्त सर्वज्ञ भगवन्त कथित है यह निर्विवाद सिद्ध होता है।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १—'इरियावहिय सूत्र' क्यों बोला जाता है? उसका दूसरा नाम क्या है?

उत्तर —आते जाते, जमीनपर चलते फिरते, ज्ञात या अज्ञात अवस्थामें हमने जो कुछ भी अपराध-पाप किये हों, उनकी क्षमा माँगनेके लिये सामायिकके शुरूमें यह सूत्र कहा जाता है। इसे **'प्रायश्चित्त सूत्र'** भी कहते हैं। यह सूत्र कहते-कहते बालमुनिश्री **आइमुत्ताजीको** पापका प्रायश्चित्त करनेका परमशुद्ध भावनापूर्वक आलोचना करते समय केवलज्ञान प्राप्त हुआ था। जीव विराधनासे मलिन हुई आत्माको पवित्र करनेके लिये यह एक महान् सूत्र है।

प्रश्न २—"तस्स मिच्छा मि दुक्कड"का अर्थ समझाइये।

उत्तर —मेरा वह पाप नष्ट होवे माने मै उस पापकी क्षमा माँगता हूँ, यह उसका सरल अर्थ है।

प्रश्न ३—हरेक क्रियामें प्रथम 'इरियावहिय' सूत्र क्यों बोला जाता है?

उत्तर —रोगीको पौष्टिक औषधि देनेके पहले वैद्य उसे विरेचक औषध देता है, उसी प्रकार आत्मशुद्धि चाहनेवालोंके लिये हरेक धर्मक्रिया शुरू करनेके पहले पूर्वार्जित पापोंका मार्जन करनेके लिये 'इरियावहिय सूत्र' कहनेका विधान है।

---

६ श्री तस्स उत्तरी सूत्र

अन्वयार्थ

तस्स—उसका **उत्तरी**—फिरसे शुद्धि **करणेण**—करनेके लिये **पायच्छित्त**—प्रायश्चित्त **करणेण**—करनेके लिये **विसोही**—विशेष शुद्धि **करणेण**—करनेके लिये **विसल्ली**—आत्माको शल्यरहित **करणेण**—करनेके लिये **पावाणं**—पाप **कम्माणं**—कर्मोंका **निग्घायणट्ठाए**—निघात माने संपूर्णतया नाश करनेके लिये **ठामि**—स्थिर होता हूँ **काउस्सग्गं**—कायोत्सर्ग ध्यान

सूत्रार्थ

तस्स उत्तरी करणेण—उन लगे हुए पापोंका फिरसे शुद्धि करनेके लिये ('इरियावहिय सूत्र'से शुद्ध हुइ आत्माकी विशेष शुद्धिके लिये),

पायच्छित्तकरणेण—प्रायश्चित्त करनेके लिये,
विसोहीकरणेण—आत्माकी विशेष शुद्धिके लिये,
विसल्लीकरणेण—आत्माको मायाशल्य, नियाणशल्य और मिथ्यात्वशल्य—इन तीन शल्योंसे रहित करनेके लिये,
पावाण कम्माण—पाप कर्मोंका
निग्घायणट्ठाए—सपूर्णतया नाश करनेके लिये
ठामि काउस्सग—मैं काउस्सगमें रहता हूँ। (मैं कायोत्सग करता हूँ।)

भावार्थ

पापोंसे लिप्त आत्मा इरियावहिय से पवित्र होती ह, फिर भी जो कुछ अपवित्रता रही हो उसे विशेषरूपसे—दुबारा शुद्ध करनका इस सूत्रमें कहा गया ह। हर समय आत्मा कमबधन करती ह, दोष भी अनेक हुआ करते ह उन पापोंका प्रायश्चित्त करना जरूरी ह एसा शास्त्रोंमें विधान ह।

परिमल

★ इस सूत्रमें आत्माको शुद्ध करनक जो उपाय बताये ह वे बहुत हो महत्त्वपूर्ण हैं। जसे कि—(१) पापोंका प्रायश्चित्त करना चाहिय। (२) पापोंसे आत्मा अशुद्ध रहती ह उसे निर्मल बनानकी जरूरत ह। (३) जबतक शल्य रहते ह तबतक धार्मिक क्रियाएँ बहुधा निष्फल हो जाती ह इस लिये तीनों शल्योंको पहचानकर उन्हें दूर करनका प्रयत्न करना चाहिय। (४) पापनिर्घात कर्म सिद्धान्तको प्रमाणित करता ह। (५) कमका नाश होनेसे आत्मा निज सुखको प्राप्त कर सकता ह।

★ काउस्सग्गसे आत्मशुद्धि हो सकती ह अत वह किस लिये करना चाहिय इसका विधान इस सूत्रमें किया गया ह।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १—'तस्स उत्तरी' सूत्र किस लिये बोला जाता है? शल्य कौन कौनसे हैं?

उत्तर —इरियावही करनेपर भी जो कुछ पाप अवशिष्ट रह गया हो, उसकी विशेष शुद्धि करनेके लिये एव आत्माको विशेष निर्मल बनानेके लिये यह सूत्र कहा जाता है। माया, नियाण और मिथ्यात्त्व ये तीन शल्य हैं।

प्रश्न २—शल्य माने क्या? वह क्या करता है?

उत्तर —जैसे पाँवमें काँटा लगनेपर वह चुभता है और पेटमें शूल होनेपर दर्द होता है वैसे आत्मामें भी पापरूपी शल्य है। इन तीन शल्योंमेंसे एक भी शल्य हो तो वह हमें चुभते रहता है–हैरान परेशान करता है, इस लिये जबतक शल्य हैं तबतक आत्मशुध्दि असभव है। अत एव आत्माको शल्यरहित बनानेकी इस सूत्रमें सूचना दी गई है। शल्योंका नाश हो जानेसे सरलता या निष्कपटीपन नामक गुण प्रगट होता है।

प्रश्न ३—माया, नियाण और मिथ्यात्त्व इन तीनों शल्योंके अर्थ समझाइये।

उत्तर —(१) मायाशल्य–सरलताको छोडकर पाप छिपानेके लिये कपट या छल प्रपच करना (२) नियाणशल्य–(नियाणु) मोक्ष देनेवाली धर्मक्रियाओंके बदलेमें मोक्ष नहीं किन्तु ऐहिक सुखोंकी याचना करना.

(३) मिथ्यात्वशल्य कुदेव, कुगुरु और कुधर्ममें विश्वास रखना (केवल ज्ञानी न हों वे कुदेव, पचमहाव्रतधारी न हों वे कुगुरु और विषय कषायोंको बढानेवाला व जीवदयाविहीन कुधम)—यह इन तीनों शब्दोंकी संक्षिप्त व्याख्या है।

७ श्री अन्नत्थ सूत्र

अन्वयार्थ

अन्नत्थ—(इतने आगारों-अपवादोंके सिवा) अन्यत्र, दूसरे स्थानपर **ऊससिएण**—उच्छ्वास लेनेसे **नीससिएण**—नि श्वास छोडनेसे **खासिएण**—खाँसी आनेसे **छीएण**—छींक आनेसे **जभाइएण**—जँभाइ आनेसे **उड्डुएण**—डकार आनेसे **वायनिसग्गेण**—अपानवायु छूटनेसे **भमलीए**—सिर घूमनेसे **पित्तमुच्छाए**—पित्त विकारके कारण बेहोशी आ जानेसे **सुहुमेहिं**—सूक्ष्म मानसे. **अगसचालेहिं**—शरीर हिल जानेसे **खेलसचालेहिं**—थूँक या कफ निगल जानेसे **दिट्ठिसचालेहिं**—दृष्टि हिलनेसे **एवमाइएहिं**—इत्यादि, ऊपर बतलाये हुए वगैरह **आगारेहिं**—आगारोंसे, नियत अपवादोंमे (जो काउस्सग्गमें मेरा शरीर हिल जाय तो) **अभग्गो**—अभग्न, अखडित, सपूर्ण **अविराहिओ**—विराधनारहित, सम्यक् आराधनापूर्वकका **हुज्ज**—होवे **मे**—मेरा **काउस्सग्गो**—कायोत्सर्ग ध्यान (ध्यानपूर्वक कायाका-शरीरका उत्सर्ग त्याग माने

काउस्सग्ग) जाव–जबतक अरिहंताण–अरिहंत भगवंताण–भगवन्तोंको नमुक्कारेण–नमस्कार कर न पारेमि–न पारूँ ताव–तबतक काय–शरीरको ठाणेण–एक ही स्थानमें स्थिर कर मोणेण–मौन धारण कर झाणेण–ध्यानमें रहकर अप्पाण–मेरे (शरीरको) वोसिरामि–बिलकुल अलग करता हूँ (मनको समग्र प्रवृत्तियोंसे रोककर शरीरका त्याग करता हूँ।)

सूत्रार्थ

अन्नत्थ ऊससिएण नीससिएण––इन (आगारों) के सिवा अन्यत्र (दूसरी कोइ भी प्रवृत्ति क्रिया होनेसे काउस्सग्ग ध्यानका भग होता है।) (१) उच्छ्वास लेनेसे (२) निःश्वास छोडनेसे (काउस्सग्गके समय मेरा शरीर हिल जाय तो भी)

खासिएण छीएण जभाइएण––(३) खाँसी आनेसे (४) छींक आनेसे (५) जँभाइ आनेसे

उड्डुएण वायनिसग्गेण––(६) डकार आनेसे, हिचकी आनेसे (७) अपानवायु छूट जानेसे

भमलीए पित्तमुच्छाए–(८) सिर घूमनेसे (९) पित्तविकारके कारण बेहोशी आ जानेसे या कै (उल्टी) हो जानेसे

सुहुमेहिं अगसचालेहिं सुहुमेहिं खेलसचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसचालेहिं––(१०) सूक्ष्ममानसे [जैसे कि आँखकी पलक] शरीर हिलनेसे (११) सूक्ष्ममानसे थूँक या कफ निगल जानेसे (१२) सूक्ष्ममानसे दृष्टि हिलनेसे

एवमाइएहिं आगारेहिं––ऊपर बतलाए हुए इन १२ आगार-अपवाद आदिको रखकर मैं काउस्सग्ग करता हूँ। (आदि शब्दसे सर्प, अग्नि जैसे उपद्रव समझ लेना चाहिये।) इस कारण

अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो––(इनमेंसे कुछ भी हो जाय तो भी) मेरा काउस्सग्ग अखंडित और विराधनारहित अर्थात् शुध्द, परिपूर्ण और आराधना युक्त होवे।

जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि––जबतक मैं अरिहंत भगवन्तोंको 'नमो अरिहन्ताणं' कहकर नमस्कार करके (काउस्सग्गको) पूर्ण न करूँ

ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि––तबतक शरीरको एक ही स्थानमें स्थिर कर, मौन धारण कर (मुँहसे एक भी शब्द बोले बिना) और शुभ ध्यानपूर्वक (विचारशून्य बैठकर नहीं) मेरा आत्माको (अर्थात् काउस्सग्गको छोड अन्य चचल वृत्तियोंको) बिलकुल अलग करता हूँ, माने हरक प्रकारका बाह्य प्रवृत्तियोंसे मेरा आत्माको रोकता हूँ। या मन, वचन और काया इन तीनोंकी चचल वृत्तिको छोडकर मैं स्थिर हो जाता हूँ।

भावार्थ

इस सूत्रमें काउस्सग्ग करते समय होनेवाली कुदरती हलनोंके (जिन्हें रोकना असम्भव है, ऐसी शारीरिक प्रवृत्तियां) अपवादोंका

वर्णन किया गया है। ऐसे अपवादोंको 'आगार' कहा जाता है। सर्व, अग्नि आदि अन्य चार आगारोंके मिलनेसे कुल सोलह आगार हो जाते हैं। जैसे मालिककी अनुमतिसे दो दिन अनुपस्थित रहनेपर भी पगार चालू रहता है एवं कोई बाधा नहीं आती वैसे ही पहलेसे ही आगारोंकी छूट माँग लेनेसे काउस्सग्ग अभग्न अखंड रह सकता है।

परिमल

★ एकाग्रताके साथ आत्माको अपने स्वरूपमें स्थिर करनेका समय—यह हुआ काउस्सग्गका सीधा-सादा और संक्षिप्त अर्थ।

★ मन वचन और काया इन तीनोंकी क्रियाएँ मनुष्यमें हरदम गतिमान ही रहती है निद्रावस्थामें भी इनका कार्य जारी रहता है। उनको शुभ ध्यानमें लगानेकी प्राथमिक शिक्षा—ऐसा काउस्सग्गका विधान है।

★ योगी बननेकी काउस्सग्ग पहली सीढ़ी है।

★ शरीरपरकी ममता कितनी कम हुई है इसका परिमाण जानने (निकालने) का काउस्सग्ग मानदंड है। मालिककी आज्ञा बिना उसके घरमें प्रवेश नहीं हो सकता उसी प्रकार अरिहंत भगवंतोंको नमस्कार किये बिना काउस्सग्ग नहीं पारा जाता।

★ भगवान श्री महावीरदेव जैसे तीर्थंकर भगवंत भी छद्मस्थावस्थामें बहुत दीर्घकालतक काउस्सग्ग-मुद्रामें रहते थे उनके अनुकरणमें हमें बार बार काउस्सग्ग करनेकी आवश्यकता है। काउस्सग्ग एक अभ्यंतर तप है।

★ जैसे सिग्नल न दिया जाय तबतक रेलगाड़ी आगे नहीं चलती यह मुकर्रर है वैसे ही यहाँ भी जबतक 'नमो अरिहंताणं' कहकर अरिहंत भगवंतोंके नमस्कारका उच्चारण नहीं होता तबतक काउस्सग्गध्यानमें रहना चाहिये ऐसा निश्चय किया जाता है।

★ शरीरपरकी ममता क्रमशः घटानेके लिये शरीरको स्थिर क… असहाय एवं चंचल मनको वश करनेके लिये और एकाग्रता… साथ ध्यानमें रहकर आत्माकी सुषुप्तावस्थामें रही हुई शक्तियों… सजीवन बनानेके लिये काउस्सग्ग यह एक सर्वोत्तम साधन है

★ 'वोसिरामि' शब्दसे यह भाव निकलता है—'हे जीव! अपने दोष देख, स्थिर हो जा, दूसरोंकी पचाइत दूसरोंकी निंदा और दूसरोंके दोष निकालनकी वृत्ति—इनका सवथा त्याग कर।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १—अन्नत्थ सूत्र किस लिये बोला जाता है ?

उत्तर —काउस्सग्ग करते समय छींक, जँभाई, खाँसी, डकार आदि अपरिहार्य दोष शरीरसे हो जानेकी सभावना रहता है। उन्हे रोकना अशक्य होनेसे आगारोंमें—अपवादोंमें उनका निवेश किया गया है। यह सूत्र अनेक क्रियाओंमें जरूरी है। यदि यह आगार सूत्र न बोला जाय या यह सूत्र बोलनेका विधान ही न होता तो शारीरिक पूर्ण शक्ति बिनाके आजके मानवियोंका काउस्सग्ग तो कभी भी सवथा शुद्ध हो हा नहीं सकता।

प्रश्न २—काउस्सग्ग माने क्या ? एक नवकारमत्रके काउस्सग्गसे लाभ क्या ?

उत्तर —एक निश्चित समयतक शरीरपरकी ममताका त्याग कर आत्मध्यानमें स्थिर होना ही काउस्सग्ग है। ६८ अक्षरके नवकार महामत्रकी आठ सपदाएँ और नौ पद हैं। एक पद एक श्वासोच्छ्वास प्रमाणात्मक है। ९ श्वासोच्छ्वास प्रमाण नवकारमत्रका काउस्सग्ग विशुद्ध भाव और रीतिसे करनेवाला पुण्यात्मा १९,६३,२६७ पल्योपम देवगतिके आयुष्यको प्राप्त करके [illegible] भाग्यशाला बनता है—इस प्रकार नवकारके

काउस्सग्गका भावफल स्पष्ट कहा गया है। इ
प्रकार बड़े-बड़े काउस्सग्गोंका फल अधिका
जाना लेना चाहिये।

प्रश्न ३—काउस्सग्गमें दृष्टि कैसा होना चाहिये ?

उत्तर —काउस्सग्गमें दृष्टि नासिकाके अग्रभागपर अ
स्थापनाजी या प्रभुप्रतिमाजीके सम्मुख होना चाहि
इधर-उधर देखते रहनेसे काउस्सग्गध्यान शुद्ध नहीं
सकता। नवकारके काउस्सग्गमें परमेष्ठी भगवन्तों
स्मरण, चिन्तन और उन्हींका शरण लेना श्रेष्ठ है

प्रश्न ४—अन्नत्थ सूत्रमें बताये हुए १२ आगारोंके उपरके
चार आगार कौनसे है ?

उत्तर —(१) दीपकका प्रकाश पड़नेपर ओढनेके लिये
लेना या अग्निके भयसे हट जाना (२) चूहा, बि
आदिका बीचमें आ जानेसे चलित होना (३)
या राजाके भयसे अस्वस्थ होना (४) साँपके भ
या दिवाल गिरनेसे आगे पाछे इधर उधर होना
इस प्रकार सब मिलकर (१२+४=) १६ आ
शास्त्रमें बताये है।

प्रश्न ५—काउस्सग्गमें त्याग करनेके १९ दोष है, उन्हें लिखिये

उत्तर —काउस्सग्गमें त्याग करनेके १९ दोष निम्न प्रकार
(१) एक पाँव ऊंचा या टेढा रखना (२) श
हिलाते रहना (३) खंभा आदिका सहारा ले

(४) दिवाल आदिपर सिर रखकर सहारा लेना (५) पैरोंके अँगूठे और एड़ियाँ सटाकर रखना (६) पाँव बहुत फैलाना (७) गुप्त अंगोंपर बार-बार हाथ फेरना (८) घोड़ेकी लगामके समान हाथमें चरवला रखना (९) अति लज्जितकी भाँति सिर झुकाना (१०) विधि-मर्यादासे अधिक ऊँचा या नीचा वस्त्र पहनना (११) मच्छर आदिके उपद्रवसे या शमके मारे दिलपर वस्त्र ओढ़ना (१२) शीत आदिके कारण सारे बदनको वस्त्रसे ढँकना (१३) गिनती करनेके लिये अँगुलियाँ या पलक हिलाना अथवा नवकारवाली गिनना (१४) कौएकी भाँति आँखोंकी पुतलियोंको हिलाना (१५) कपड़े मैले हो जायेंगे इस डरसे तहोंमें रखकर उनकी रक्षा करना (१६) पागलकी नाईं सिर हिलाना (१७) गूँगेकी तरह 'हूँ हूँ' जैसा उच्चार करना (१८) आलापक करते समय मदोन्मत्तकी तरह बक बक करना (१९) बंदरकी भाँति चपल होकर इधर उधर देखना या होंठ फड़फड़ाना।

---

८ श्री लोगस्स (नामस्तव) सूत्र

अन्वयार्थ

लोगस्स–लोकमें, तीनों लोकमें रहे हुए जीवोंमें उज्जोअगरे–उद्योत प्रकाश करनेवाले धम्म–धर्मरूपी तित्थयरे (तारण–करने वाला–तीर्थ) तीर्थका स्थापन करनेवाले जिणे–भीतरके राग और द्वेषरूपी शत्रुओंको जीतनेवाले अरिहन्ते–४ घाती कर्मोंका नाश करनेवाले अरिहंत भगवन्तोंकी कित्तइस्सं–स्तुति (कीर्तन–स्तवन) करूँगा चउवीसं पि–इस अवसर्पिणीमें इस भरतक्षेत्रमें हुए २४ तीर्थपतियोंका तथा (अपि शब्दसे) एरवतक्षेत्र और महाविदेह–क्षेत्रके तीर्थपतियोंकी केवली–केवलज्ञानी भगवन्तोंकी (स्तुति करूँगा) उसभ–(१) ऋषभनाथ भगवानको अजिअ–(२) अजित नाथको च–और (सर्वत्र यही अर्थ है।) वंदे–वंदन करता हूँ (इसका संबंध सभी पदोंके साथ है।) संभव–(३)संभवनाथको अभिणंदण–(४) अभिनंदनस्वामीको सुमइ–(५) सुमतिनाथको पउमप्पहं–(६) पद्मप्रभ जिनको सुपास–(७) सुपार्श्वनाथको जिण–राग द्वेषको जीतनेवाले केवली भगवन्तको (सर्वत्र यही अर्थ है।) चंदप्पहं–(८) चन्द्रप्रभस्वामीको सुविहिं–(९) सुविधि नाथको पुप्फदंत–जो पुष्पदंत भगवान नामसे भी प्रसिद्ध हैं सीअल–(१०) शीतलनाथको सिज्जंस–(११) श्रेयांसनाथको वासुपुज्ज–(१२) वासुपूज्यस्वामीको विमल–(१३) विमल नाथको अणंत–(१४) अनंतनाथको धम्म–(१५) धर्मनाथको संति–(१६) शान्तिनाथको वंदामि–मैं वंदन करता हूँ

कुंथु–(१७) कुंथुनाथको **अर**(१८) अरनाथको **मल्लि**–(१९) मल्लिनाथको **मणिसुव्वय**–(२०) मुनिसुव्रतस्वामीको **नमि**—(२१) नेमिनाथको **रिट्ठनेमि**–(२२) अरिष्टनेमि नेमिनाथजीको. **पास**–(२३) श्रीपार्श्वनाथ भगवानको **तह**–तथा **वद्धमाण**–(२४) श्रीवर्द्धमानस्वामीजीको (श्रीमहावीरस्वामी भगवानको)- [मैं नमस्कार करता हूँ।] **एव**–इस प्रकार **मए**–मैंने **अभिथुआ**–स्तुति किये हुए **विहुय**–दूर किया है **रयमला**–(कर्म) रज और (कर्म) मैलोंको जिन्होंने, ऐसे **पहीण**–क्षय किया है **जर**–जरा, वृद्धावस्था, बुढापा और **मरणा**–मौतका जिन्होंने, ऐसे **चउवीस पि**–(भरतक्षेत्रके) चौबीस और (अपि शब्दसे) ऐरवतक्षेत्र और महाविदेहक्षेत्रके भी **जिणवरा**–सामान्य केवलियोंमें श्रेष्ठ **तित्थयरा**–तीर्थंकर भगवन्त **मे**–मुझपर **पसीयंतु**–प्रसन्न होवें **कित्तिय**—देवेन्द्रोंद्वारा भी स्तवन (कीर्तन) **वंदिय**–वंदन और **महिया**–पूजन किये हुए **जे ए**–जे इस **लोगस्स**–लोकमें **उत्तमा**–उत्तम, श्रेष्ठ **सिद्धा**–सिद्ध हुए हैं, वे मुझे **आरुग्ग**–आरोग्यके साथ **बोहिलाभ**–(बोधि माने समकित) सम्यग् दर्शनका लाभ **समाहि**–समाधि,मनका स्वस्थता **वर**–श्रेष्ठ **उत्तम**–उत्तम **दिंतु**–देवें **चंदेसु**–चन्द्रोंसे भी **निम्मलयरा**–विशेष निर्मल **आइच्चेसु**–सूर्योंसे भी **अहिय**–अधिक **पयासयरा**–प्रकाश करनेवाले **सागरवर**–बडेसे बडा जो स्वयंभूरमण महासमुद्र है,उसके समान या उससे भी अनंतगुण अधिक **गंभीरा**–गंभीर **सिद्धा**–सिद्ध भगवंत **सिद्धि**–मोक्ष **मम**–मुझे **दिसंतु**–देवें

सूत्रार्थ

लोगस्स उज्जोअगरे—लोकमें-तीनों भुवनोंमें उ॰
करनेवाले

धम्मतित्थयरे जिणे—धर्मरूपी तीर्थके (साधु, साध्वी
और श्राविकारूपी चतुर्विध श्रीसंघके) स्थापक तथा
और द्वेष इन दो महाशत्रुओंको जीतनेवाले

अरहंते कित्तइस्सं—अरिहंत भगवंतोंका स्तुति (कीर्तन)

चउवीसं पि केवली—(भरतक्षेत्रके) चौबीस भगवन्तोंक
वैसे दूसरे भी केवलज्ञानी भगवन्तोंकी (स्तुति करूँगा।

उसभमजिअं च वंदे—श्रीऋषभदेव और श्रीअजितनाथ ॰
मैं वंदन करता हूँ।

संभवमभिणंदणं च सुमइं च—श्रीसंभवनाथ, श्रीअभि
स्वामीजी और श्रीसुमतिनाथ भगवानको

पउमप्पहं सुपासं—श्रीपद्मप्रभजिन और ॰
स्वामीजीको

जिणं च चंदप्पहं वंदे—और राग द्वेषको जीतनेवाले
तीर्थंकर श्रीचन्द्रप्रभ जिनेश्वरको मैं वंदन करता हूँ।

सुविहिं च पुप्फदंतं—श्रीसुविधिनाथ, जिनका दूसरा
श्रीपुष्पदंत प्रभु भी है, उनको

सीअलसिज्जंसवासुपुज्जं च—श्रीशीतलनाथ, श्रीश्रेय
और श्रीवासुपूज्यस्वामीको

वमलमणत च जिण—श्रीविमलनाथ, श्रीअनंतनाथ तथा राग द्वेष आदि अत शत्रुओंको जीतनेवाले

म्म संति च वंदामि—श्रीधर्मनाथजीको और श्रीशान्तिनाथ भगवानको मैं वंदन करता हूँ। [३]

कुंथु अर च मल्लि—श्रीकुंथनाथ, श्रीअरनाथ और श्रीमल्लिनाथ जिनेश्वर भगवन्तोंको

वंदे मुणिसुव्वय नमिजिण च—श्रीमुनिसुव्रतस्वामीजीको, राग और द्वेषका नाश करनेवाले श्रीनमिनाथजी प्रभुको

वंदामि रिट्ठनेमि—और श्रीनेमिनाथ प्रभुको (श्रीअरिष्ट नेमिजीको) मैं वंदन करता हूँ।

पास तह वद्धमाण च—भगवान श्रीपार्श्वनाथस्वामीजीको और श्रीमहावीरस्वामी (वर्धमानस्वामी) को (मैं वंदन करता हूँ।) [४]

एव मए अभिथुआ—इस प्रकार मेरे द्वारा स्तुति किये हुए

विहुयरयमला पहीणजरमरणा—जिन्होंने कर्मरूपी रज और मलको दूर किया है, ऐसे और जिनके वृद्धावस्था और मरणके दुःख नष्ट हो गये हैं, ऐसे

चउवीस पि जिणवरा—चौवीस जिनेश्वर भगवंत (अपि शब्दसे ऐरवतक्षेत्र और महाविदेहक्षेत्रके भी)

तित्थयरा मे पसीयंतु—तीर्थंकरदेव मुझपर प्रसन्न होवें। [५]

कित्तियवंदियमहिया–(देव और देवेन्द्रोंने भी) जिनकी वा
स्तुति की है, कायासे वंदन किया है और देव तथा म
समाजने जिनकी पूजा भक्ति की है, ऐसे

जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा–जो इस लोकमें उत्तम श्रेष्ठ
हुए हैं, ऐसे

आरुग्गबोहिलाभं–मुझे आरोग्यपूर्वक (शुद्ध देव, गुरु और
परकी श्रद्धा स्वरूप) समकितकी प्राप्ति और

समाहिवरमुत्तमं दितु–प्रधान और सर्वोत्कृष्ट ऐसी चि
स्थिरतायुक्त समतारूपी समाधि देवें या उनके प्रतापसे
समाधि मिले। [६]

चंदेसु निम्मलयरा–चन्द्रोंसे भी अधिक निर्मल

आइच्चेसु अहियं पयासयरा–अनेक सूर्योंसे भी अधिक (ज्ञ
प्रकाश देनेवाले

सागरवरगंभीरा–स्वयंभूरमण महासमुद्र जैसे गंभीर

सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु–सिद्ध भगवंत मुझे मोक्ष दें
उनकी इस स्तुतिरूपी आराधनाका फल–मोक्ष मुझ
हो। [७]

भावार्थ

इस सूत्रका दूसरा नाम 'नामस्तव' है। इस सूत्रमें इस क्षेत्रमें अवसर्पिणीमें हुए २४ तीर्थंकर भगवंतोंकी नामपूर्वक स्तु गई है। इन चौबीस तीर्थंकरोंमें १६ वें, १७ वें और १८ वें —इन तीर्थंकरोंने चक्रवर्ती और तीर्थंकर ये दोनों ऋद्धियाँ प्राप्त की प्रतिक्रमणादि क्रियाओंमें अधिकतर २५ श्वासोच्छ्वासका लोगस्सका स्मरण होता है इस लिये चंदेसु निम्मलयरा तक ही किया जात

क्योंकि तबतक लोगस्सके २५ पद हो जाते हैं। इस सूत्रमें जिनेश्वर भगवानोंके गुणोंका स्मरण कर उनकी प्रार्थनाएँ की गई हैं।

परिमल

★ चूंकि उनका नामपूर्वक गुणस्मरण हमें पवित्र बनाता है, काउस्सग्गमें पाँच परमेष्ठी, सिद्धचक्र या २४ तीर्थंकरोंका गुण चिंतन-स्मरण करनेका विधान है। इसी लिये काउस्सग्गमें 'नवकार' या 'लोगस्स' करनेका विधान है, नहीं कि 'करेमि भंते' या 'उवसग्गहरं' का।

★ तीर्थंकर प्रभुओंके पास जाकर क्या क्या मांगना चाहिये इसकी थोडी बहुत शिक्षा लोगस्समें भी दी गई है। जैसे कि—मुझपर प्रसन्न हूजिये, धर्माराधनके लिये मुझे आरोग्य दीजिये, समकित और समाधि प्रदान कीजिये और अन्तमें मोक्ष भी जरूर दीजिये।

★ जबतक मोक्षकी प्राप्ति नहीं होगी तबतक अनेकविध कुयोनि परिपूर्ण इस संसारके प्रवासमें हमें समाधिकी भी जरूरत रहती है, धर्माराधन करनेके लिये आरोग्य भी आवश्यक है, अतः ही इन २४ उत्तम पुरुषोंकी—वीतरागी भगवन्तोंकी स्तुति करना भी जरूरी है – इन सब बातोंको हम इस सूत्रसे जान सकते हैं।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १—लोगस्स सूत्रका दूसरा नाम क्या है? उसमें क्या क्या आता है?

उत्तर —लोगस्सका दूसरा नाम 'नामस्तव' है। इसमें श्री ऋषभदेवप्रभुसे श्रीमहावीरस्वामीतकके २४ तीर्थंकर भगवंतोंको वंदन किया गया है। इसमें २४ तीर्थंकर देवोंके नाम होनेसे इसे 'नामस्तव' कहा जाता है।

प्रश्न २—एक लोगस्सका काउस्सग्ग कितने श्वासोच्छ्वास प्रमाणका होता है?

उत्तर —लोगस्सके २८ पद होनेसे पूर्ण लोगस्सका काउस्सग्ग २८ श्वासोच्छ्वास प्रमाण होता है (एक पद = एक श्वासोच्छ्वास)। किन्तु विशेष प्रसंगोंको छोड़कर सामान्यतः अधिकतर लोगस्सके काउस्सग्गका प्रमाण २५ श्वासोच्छ्वासका होनेसे 'चंदेसु निम्मलयरा' तक हो किया जाता है।

प्रश्न ३—पुष्पदंत, अरिष्टनेमि और वर्धमान—ये किन किन प्रभुओंके नाम हैं ?

उत्तर —पुष्पदंत श्रीसुविधिनाथजीका, अरिष्टनेमि श्रीनेमिनाथ प्रभुका व वर्धमान श्रीमहावीरस्वामीका दूसरा नाम है।

प्रश्न ४—नवकार आदिके स्मरण बिना काउस्सग्ग सफल हो सकता है या नहीं ?

उत्तर —मन बहुत ही चंचल होनेसे किसी आलंबन बिना मौन मूक और शून्य बैठे रहनेसे वह शुभ योग या ध्यानमें रहेगा ऐसा कहना अशक्य है, वह अशुभ चिंतन भी करेगा। अतः वैसा काउस्सग्ग कर्मबंधनोंको काटनेमें समर्थ नहीं हो सकता। इसी लिये शुद्ध स्थान और श्रेष्ठ-उत्तम ध्यानपूर्वकके मौनको ही काउस्सग्ग कहा गया है।

---

९ श्री करेमि भंते (सामायिक) सूत्र

अन्वयार्थ

करेमि–मै करता हूँ **भंते**!–हे भगवान! **सामइयं**–सामायिक **सावज्जं**–सावद्य, पापयुक्त **जोगं**–व्यापारोंका, क्रियाओंका **पच्चक्खामि**–त्याग करता हूँ **जाव**–तबतक **नियमं**–नियमका **पज्जुवासामि**–पर्युपासन-सम्यक् पालन करता हूँ, तबतक **दुविहं**–दो प्रकारसे **तिविहेणं**–तीन योगोंद्वारा **मणेणं**–मनसे **वायाए**–वचनसे **काएणं**–और शरीरसे **न करेमि**–नहीं करूँगा **न कारवेमि**–और दूसरोंद्वारा कराऊँगा भी नहीं **तस्स**–उन (पहलेके पापोंसे) **भंते**!–हे भगवंत! **पडिक्कमामि**–मै प्रतिक्रमण करता हूँ निवृत्त होता हूँ **निंदामि**–(उन पापयोगोंका) मैं आत्मसाक्षीसे निंदा करता हूँ **गरिहामि**–गुरुमहाराजकी साक्षीमें विशेष निन्दा करता हूँ **अप्पाणं**–और पापसे युक्त मेरी आत्माको **वोसिरामि**–(पापोंमे) बिलकुल अलग करता हूँ

सूत्रार्थ

करेमि भंते! सामाइयं—हे भगवान! क्रोध मान आदिसे मुक्त और समतास्वरूप सामायिक व्रत मैं करता हूँ।

सावज्जं जोगं पच्चक्खामि—सावद्य–पापयुक्त व्यापारोंका मैं प्रत्याख्यान करता हूँ, माने इस सामायिकमें मैं पापयुक्त प्रवृत्तियोंका आचरण नहीं करूँगा।

जाव नियमं पज्जुवासामि—जबतक मैं नियमका पालन करता हूँ तबतक (दो घडीके इस सामायिकमें)

दुविहं तिविहेणं—दो प्रकारसे और तीन योगोंद्वारा (विवरण निम्न प्रकार)

मणेणं वायाए काएणं—मनसे, वचनसे और कायासे (३ योग)

न करेमि न कारवेमि—(पाप-व्यापारोंको) नहीं करूँगा और दूसरोंसे कराऊँगा भी नहीं। (२ प्रकार) [मनसे करूँगा नहीं, कराऊँगा नहीं, वचनसे करूँगा नहीं, कराऊँगा नहीं और कायासे भी करूँगा नहीं, कराऊँगा नहीं।]

तस्स भंते! पडिक्कमामि—हे भगवन्त! इन तीन योगोंसे और दो करणोंसे पहले जो पाप किये हैं, उनसे (तस्स) मैं प्रतिक्रमण करता हूँ, उन पापोंसे मैं पीछे हटता हूँ।

निंदामि गरिहामि—आत्मसाक्षीसे मैं उनकी निंदा करता हूँ और गुरुमहाराजकी साक्षीमें विशेष निंदा करता हूँ। (गुरु महाराजके समक्ष पापोंको स्वीकार कर उन्हें न करनेकी प्रतिज्ञा लेनेसे विशेषतया पापकर्मोंका क्षय होता है।)

अप्पाणं वोसिरामि—और मेरी आत्माको पापसे बिलकुल अलग करता हूँ। (पापकर्मोंकी वासनाओंके त्यागपूर्वक समता-रूपी समाधिका आस्वाद मेरी आत्माको कराता हूँ।)

भावार्थ

इस सूत्रका दूसरा नाम सामायिक सूत्र है। सब सूत्रोंका सार समता होनेसे यह सूत्र द्वादशांगीका सारभूत सूत्र माना जाता है। यह सूत्र सामायिक लेते समय सामायिकमें स्थिर होनेके लिये बोला जाता है। इस सूत्रमें अलग अलग दृष्टियोंसे छहों आवश्यकोंका अन्तर्भाव है। जैन धर्मके करणीय आचारोंको प्रतिपादन करनेवाला यह मुख्य सूत्र है।

परिमल

★ देव सामायिक नहीं कर सकते तिर्यंचोंको भी वह दुर्लभ है, केवल मनुष्यके भाग्यमें ही प्रधानत: सामायिक है। इसी लिए मनुष्य भाग्यशाली माना जाता है। ऐसा उत्तम सामायिक न करनेसे मनुष्य भाग्यशाली मिट जाता है।

★ सावद्य प्रवृत्तियोंपर अरुचि पापका पश्चात्ताप समता और मुक्तिके लिए प्रयास—ये सब इस सूत्रके महत्त्वपूर्ण रहस्य हैं।

★ 'अहिंसा परमो धर्म' इस उक्तिका संपूर्ण पालन सामायिकमें ही हो सकता है। हिंसा न करना सो अहिंसा—यह उसकी सरल व्याख्या है। इससे भी अधिक विशदतासे कहा जाय तो प्राणी मात्रकी हिंसा न करनेकी प्रतिज्ञा लेना यही सच्ची, शुद्ध और सारगर्भित अहिंसा है।' ऐसी प्रतिज्ञा लेनेका और उसका पालन करनेका यह सूत्र हमें सिखाता है।

★ दूसरेसे हिंसा करानेवाला या दूसरेको झूठ बोलनेकी सलाह देनेवाला भी अपराधी है और पापका भागी भी—यह 'करेमि भंते' का गूढार्थ है।

★ करेमि भंते अहिंसाका मूलभूत सूत्र है।

★ गुरु महाराजके सम्मुख पापका पश्चात्ताप करना यही मोक्षमार्गका सच्चा प्रयाण है।

★ मन वचन और काया—इन तीन स्वेच्छाविहारी और उद्दाम घोड़ोंको वश करनेके लिए 'करेमि भंते' सूत्र एक वशीकरण सूत्र (१ सूत्र २ लगाम) ही है।

★ विचारशून्य बनकर एक स्थानपर बैठे रहना ही सामायिक नहीं कहा जा सकता। क्रोध द्वेष गर्व आदिपर नियंत्रण कर पापयुक्त क्रियाओंको रोककर, समस्त चराचर जीवोंके साथ समभाव रख कर 'करेमि भंते' की प्रतिज्ञा लेकर और आधिव्याधियोंको भूलकर किया जानेवाला सामायिक ही श्रेष्ठ-उत्तम फल देनेवाला है।

★ किये हुए गुप्त पापकर्मोंको अमुक समक्ष प्रगट करनेमें अधिकतर लोगोंको शर्म आती है। इस हिसाबसे गुरुमहाराजके सम्मुख

दोषोंको प्रगट करना अत्यत ही कठिन काय ह जिसे यह सूत्र सरल बना देता ह।

★ अपने पापका पाप ह एसा कहकर स्वीकार करनेवाला ही सच्चा साहसी है। लज्जाको छोड गुरुमहाराजके सम्मुख अपने पापोंका पश्चात्ताप करनेमें सरलता और उदारताकी बहुत ही जरूरत ह। इस आवश्यकताको यह सूत्र पूर्ण करता ह।

★ मन वचन और कायाको स्थिर कर समत्वयोगकी प्राप्तिके मार्गमें प्रयाण करना ही सामायिक ह। ३२ दोषोंसे मुक्त होनेपर ही सामायिक यथार्थ कहा जा सकता ह। साधक गृहस्थोंके लिये तो, सामायिक यह एक श्रेष्ठ साधना ही ह। सामायिकके अभ्याससे मनकी चचल चित्तवृत्तियाँ काबूमें आती रहती ह जिससे साधकका साधना माग सरल बनता जाता ह।

★ जितने समयतक सामायिक क्रिया जाय, उतने समयतक ससारका त्याग किया माने उतने अंशोंमें त्याग वसिपर अनुराग हुआ ऐसा श्रमण कह सकते ह। जसे अपना गाँव छोड बिना दूसरे गाँव नहीं जा सकते वसे ही रागवृत्ति छोड बिना वीतराग कसे बन सकते ह ' राग दशा छोडनसे समता प्रगट होती ह। एस रागरहित सामायिकमें वीतराग भगवानको जाननका स्वय अवसर प्राप्त होता ह। एस सामायिकसे तो अमेरिका आफ्रिका आदि विदेशोंमें भी बार बार लाभ उठा सकते ह।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १—तीन योग और दो करण क्यों ?

उत्तर —मन, वचन और काया—इन तीन योगोंमे स्वय न करना और दूसरेसे न कराना—ये दो करण ह। पूज्य मुनिराजोंके लिये सामायिकके पच्चक्खाणमें तीन योग और (स्वय न करना और दूसरेसे न कराना—इन

दो करणोंके साथ पापका अनुमोदन भी न करना ऐसे) तीन करण होते हैं। श्रावकवर्ग महाजनोंमें दी हुई रकमका सूद या कॉन्ट्राक्टसे तैयार होनेवाला अपना मकान आदिकी अनुमति पौषध या उपधानमें नहीं छोड सकता अर्थात् श्रावक सावद्यकी अनुमतिका त्याग नहीं कर सकते। अत एव साधु महाराजोंके लिये त्रिविध-त्रिविध और श्रावकोंके लिये द्विविध-त्रिविध पच्चक्खाण होता है।

प्रश्न २–सामायिक उत्तम क्यों माना जाता है ?

उत्तर –सामायिकमें किसी भी पाप प्रवृत्तिका प्रवेश नहीं हो सकता, इसी लिये सामायिक उत्तम माना जाता है। रुपये पैसे खर्च किये बिना धर्म करनेवालोंको भी यह सामायिक धर्ममें स्थिर करता है, इस लिये भी सामायिक सर्वोत्तम है। स्वयं भगवान श्रीमहावीरदेवने तो अत्यंत निर्धन ऐसे **पुणिया श्रावकके सामायिककी** प्रशंसा की थी।

प्रश्न ३–'करेमि भंते' सूत्रमें महत्त्वपूर्ण उल्लेखनीय कौन-कौनसी बातें हैं ?

उत्तर –इस सूत्रमें नीचे लिखी हुई बातें विशेषरूपसे उल्लेखनीय हैं। (१) पाप व्यापारोंका प्रत्याख्यान करनेका विधान (२) दो घडी माने ४८ मिनटतक एक ही स्थानपर समतापूर्वक बैठनेका विधान (३) अपने स्वयंके

मुताबिक अन्य व्यक्तियोंसे भी पाप न करानेके पुण्यका सपादन (४) पूर्वकृत अतीत कालके पाप-कर्मोंका क्षय करानेका उपाय---उन सावद्य कर्मोंकी निन्दा कर उनके लिये पश्चात्ताप करना (निन्दा कर पश्चात्ताप करनेका शिक्षा) (५) सामायिकका देन---धर्मध्यान व शुक्लध्यानकी झलक, समताका आस्वाद और आत्म-रमणके अभ्यासकी शिक्षा।

प्रश्न ४–'दुविह तिविहेण' माने क्या ?

उत्तर –मन, वचन और कायासे पाप करूँगा नहीं और कराऊँगा भा नहीं ; अथात मनसे पाप करूँगा नहीं व कराऊँगा नहीं, वचनसे पाप करूँगा नहीं व कराऊँगा नहीं और कायासे भा पाप करूँगा नहीं व कराऊंगा नहीं। इस प्रकार २ × ३ = ६ प्रकारसे सावद्य प्रवृत्तियोंका निषेध किया गया है।

---

१० सामाइयवयजुत्तो सूत्र

अन्वयार्थ

सामाइय–सामायिक **वय**–व्रतसे **जुत्तो**–युक्त **जाव**–यावत्, जबतक **मणे**–मन **होइ**–होगा, रहेगा **नियम**–नियमसे **सजुत्तो**–सयुक्त, प्रतिज्ञाबद्ध ; तवतक **छिन्नइ**–छेदता है, क्षय करता है **असुह**–अशुभ **कम्म**–कर्मोंको **सामाइय**–सामायिक **जत्तिआ**–

जितनी वारा-बार [१] सामाइयम्मि-सामायिक उ-ही कए-किया जाय तबतक (हीं) समणो-श्रमण, साधुमहाराजके इव-जैसा, समान सावओ-श्रावक हवइ-होता है जम्हा-जिस कारणसे एएण-इस कारणेण-कारणसे बहुसो-अनेकवार सामाइय-सामायिक कुज्जा-श्रावकोंको करना चाहिये [२].

सूत्रार्थ

सामाइयवयजुत्तो—सामायिक व्रतको धारण करनेवाला श्रावक

जाव मणे होइ नियमसजुत्तो-जबतक मनसे नियममे युक्त (माने ' करेमि भंते ' सूत्रकी प्रतिज्ञामें प्रतिबद्ध) हो तबतक

छिन्नइ असुह कम्म—स्वय पहले किये हुए अशुभ कर्मोंको काटता है, (अथात् सामायिक कमनाश करनेकी महान् क्रिया है ।)

सामाइय जत्तिआ वारा—जितनी वार सामायिक करे उतना वार । [१]

सामाइयम्मि उ कए—और सामायिक किया जाता है उतनी बार ही (माने श्रावक सामायिक करे या करता रहे तभी, अन्यथा नहीं ।)

समणो इव सावओ हवइ जम्हा—जिस कारणसे श्रावक साधु जैसा बनता है, होता है । [जिसने (१२ या कुछ कम) व्रतोंको ग्रहण किया हो, वही श्रावक है; जैनकुलमें जन्ममात्रसे ही नहीं ।]

एएण कारणेण—इस कारणसे

बहुसो सामाइय कुज्जा—श्रावकोंको अनेक बार सामायिक करना चाहिये। [२]

सामायिक विधिसे लिया, विधिसे पारा, विधि करते जो कोई अविधि हुई हो, वह सब मन-वचन-कायाकरके मिच्छा मि दुक्कडम्।

१० मनके, १० वचनके, १२ कायाके एव ३२ दोषमेंसे जो कोई दोष लगा हो, वह सब मन-वचन-कायाकरके मिच्छा मि दुक्कडम्।

भावार्थ

यह सूत्र सामायिक पारते (पूर्ण करते) समय बोला जाता है। इसमें ३२ दोषोंके त्यागके साथ बार बार विशुद्ध सामायिक करनेका कहा गया है। सामायिक करते समय श्रावक श्रमणके साधु जैसा बनता है—ऐसा वचन होनेसे श्रावकोंको श्रावक-अवस्थामें भी सामायिकद्वारा साधु जीवन जीनेका सौभाग्य प्राप्त होता है। इस सूत्रका उच्चारण करते समय दाहिना हाथ आसन या चरवलेपर रखा जाता है जो सामायिककी प्रतिज्ञाकी पूर्णतासूचक है। इस सूत्रकी दोनों गाथाएं १४ पूर्वधर श्रीभद्रबाहुस्वामीजी महाराज विरचित श्रीआवश्यकनियुक्ति की है।

परिमल

★ सामायिकव्रत पूर्ण होनेके समय हर्षित न होना चाहिये क्योंकि जो समता और शांति सामायिकमें प्राप्त हुई थी वह बिना व्रतके सर्वथा राग द्वेष स्वार्थ व चिंतासे परिपूर्ण और क्लेशमय इस संसारमें कहाँ? अत एव सामायिक पारनेके समय पुनः पुनः-बार बार सामायिक करनेकी उत्कट अभिलाषा रखनी चाहिये ऐसा इस सूत्रमें भी बतलाया गया है।

★ स्थापनाचार्यजीकी स्थापना करते समय गुणोंका आरोपण अभिनिवेश करनेका हाथसे ऊपर (दान देते समय रखा जाता है वैसा) उल्टा (दाहिना) हाथ रखकर नवकार और पंचिंदिय पढ़कर गुणोंकी स्थापना की जाती है। सामायिक पूर्ण होनेके बाद दाहिना हाथ नीचे (किसीके पास मांगते समय या किसीसे कुछ वस्तु हाथमें लेते समय रखा जाता है वैसा) सीधा रखकर नवकार पढ़कर स्थापित गुणोंको वापस लेकर स्थापनाचार्यजीका विसर्जन किया जाता है।

★ सामायिकका रहस्य समझनेके बाद, सामायिक लेते समय आनंद और पारते समय दुःख होनेका विचाररूपसे ध्यान रहना चाहिए।

★ सामायिकमें श्रावक साधु महाराजकी तरह छहों जीवनिकायकी हिंसासे दूर रह सकता है। साधु महाराजकी तरह सत्य और हितकारक ही बोलना, शीलव्रतके स्थानोंका रक्षण करना, चोरी न करना, अपने पास रुपये पैसे न रखना—ऐसी अनेक तुलनाएँ सामायिकव्रतमें हो सकनेके कारण सामायिक यह साधुधर्मकी एक वानगी ही मानी जाती है। धन्यवाद हो! सामायिकव्रतकी प्ररूपणा करनेवाले महापुरुषोंको!

★ जैसे भैंस खूंटेसे बांधी जाती है वैसे ही सामायिकसे मन समतामें स्थिर रहता है। माने अन्य अनेकविध चिंताओंसे दूर होनेके कारण सामायिकमें चंचल मन भी शुभ प्रवृत्तियोंमें स्थिर किया जा सकता है। इसी लिये सामायिक करनेवाले पुण्यात्माके अशुभ कर्म चकनाचूर क्यों न होंगे?

★ इस संसारमें जिन जीवात्माओंके पास सामायिक जैसा मोक्षप्राप्तिका साधन नहीं होता और जो अविरतिमें या अव्रता अवस्थामें व्यग्र है, उनको मुक्ति नहीं मिल सकती—यह भाव 'समणो इव सावओ' मेंसे निकलता है। यहाँ श्रावकके सामायिककी पाँच महाव्रतधारी श्रमण साधु महाराजके साथ तुलना अपेक्षित है।

★ पाँचों परमेष्ठियोंमें कोई भी बिना सामायिकके नहीं है माने पूज्य साधु साध्वीजी महाराज भी इस सामायिकसे ही मुक्तिकी प्राप्तिके लिये प्रयास करते हैं। बार बार सामायिक करने हो-से यहाँ श्रावकोंको उन (आराधक) साधु महाराजोंके साथ तुलना की गई है। श्रावक सामायिकके ममत्त प्रेमी हैं तब मुनिराज भी सामायिकके यथार्थ नमी हैं और ममत्त प्रेमी भी। इतनी ही यहाँ तुलना समझनी चाहिये।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १–सामायिक पारते समय यह सूत्र क्यों बोला जाता है?

उत्तर –'सामाइयवयजुत्तो' यह सूत्र बोलते समय दाहिना हाथ आसन या चरवलेपर रखा जाता है। स्थापनाका उत्थापन करते समय जो सीधा हाथ रखा जाता है। वह स्थापित गुणोंको वापस ले लेनेका सूचक है, अर्थात् स्थापनाचार्यजीका विसर्जन विधिकी मानों सूचना ही है। इसी लिये सामायिक पारते समय यह सूत्र बोला जाता है।

प्रश्न २–सामायिकमें कौन कौन से दोष त्यागनेके हैं?

उत्तर –सामायिकमें मनके १०, वचनके १० और कायाके १२ कुल ३२ दोष त्यागनेके हैं। सामायिक इन दोषोंसे रहित–विशुद्ध होना चाहिये।

प्रश्न ३–मनके १०, वचनके १० और कायाके १२ दोष बताइये।

उत्तर –(अ) मनके दस दोष–(१) शत्रुको देखकर द्वेष करना (२) अविवेकका चिन्तन करना (३) सूत्रोंके अर्थका मनन न करना (४) जीमें घबड़ाहट रखना

(५) यश कीर्तिका अभिलाषा करना (६) विनयका त्याग करना (७) भयका चिन्तन करना (८) व्यापारका चिन्ता करना (९) फलप्राप्तिमें संदेह रखना (१०) फलकी इच्छासे धर्म करना (आ) **वचनके दस दोष**–(१) बुरे वचन बोलना (२) हुँकार तुकार करना (३) सावद्य पापयुक्त आदेश करना (४) बक-बक करना (५) कलह करना (६) 'आइये, जाइये' कहना (७) गालिया देना (८) बालकोंको खिलाना (९) विकथा–व्यर्थकी बातें करना (१०) हँसी-मजाक करना (इ) **कायाके बारह दोष**–(१) बैठनेमें चपल होना (२) चारों ओर देखना (३) सावद्य पापयुक्त काम करना (४) अगड़ाना (५) अविनयसे बात करना (६) आड़ ले, सहारा लेकर बैठना (७) शरीरका मैल निकालना (८) खुजली खुजलाना (९) पैरपर पैर चढाना (१०) अग खुले करना (११) अग ढाँकना (१२) सोना

प्रश्न ४ –क्या सामायिकसे ही मानवभवकी सफलता होती है?

उत्तर –हाँ, और कहा भी है कि–

सामाइय पोसह सठिय, जीवस्स जाइ जो कालो
सो सफलो बोधव्वो, सेस ससार फल हेउ ॥

'मानवियोंका सामायिक और पौषधमें जो समय व्यतीत होता है, उतना ही समय सफल मानना चाहिये। शेष

समय भव भ्रमण करानेवाला हो है।' इस प्रकार श्री तीर्थंकर भगवंतोंने सामायिकको अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बतलाया है।

---

११ श्री जगचिंतामणि (चैत्यवंदन) सूत्र

शब्दार्थ

इच्छाकारेण-इच्छानुसार संदिसह-आज्ञा दीजिये भगवन्! -हे भगवान! चैत्यवंदन-जिनवंदना करूँ-करूँ? (गुरुमहाराज या कोई बडेबूढे आज्ञा देते है-करो।) इच्छं-जैसी आपकी आज्ञा

जगचिंतामणि-विश्वके भव्य जीवोंको वांछित देनेवाले चिंतामणि रत्नसमान जगनाह-त्रिभुवनके स्वामी जगगुरु-समस्त विश्वके गुरु (हितकारक उपदेश देकर सत्यमार्ग बतलाने वाले) जगरक्खण-विश्वका रक्षा करनेवाले जगबंधव-विश्व छहों जीवनिकायके बंधु समान जगसत्थवाह-तीनों लोकके प्राणियोंके लिये सार्थवाह समान जगभावविअक्खण-विश्व रहे हुए चराचर जीवात्माओंके भाव जाननेमें विचक्षण-अति कुशल अट्ठावयसंठविअरूव-जिनके रूप (माने बिम्ब, प्रतिमाएँ, मूर्तियाँ) अष्टापद पर्वतपर स्थापित हुए है, कम्मट्ठविणासण-जिन्होंने आठों कर्मोंका नाश किया है, चउवीस पि-चौबीस भी जिणवर!-हे तीर्थंकर भगवन्

जयतु–आपकी जय हो **अप्पडिहयसासण**–अखंडित शासनवाले, जिनका शासन किसीसे भी प्रतिहत पराभूत नहीं है (माने शाश्वत है) ऐसे [१] **कम्मभूमिहिं**–५ भरत, ५ ऐरवत और ५ महाविदेह-क्षेत्र, इस प्रकार कुल १५ कर्मभूमियोंमें **पढम**–वज्रऋषभनाराच नामक प्रथम **संघयणि**–संघयण (शरीरकी गठन) वाले **उक्कोसय**–उत्कृष्टतया, अधिकसे अधिक **सत्तरिसय**–एक सौ सत्तर (१७०) **जिणवराण**–जिनेश्वर भगवंत **विहरंत**–विहार करते हुए **लब्भइ**–पाये जाते हैं **नवकोडिहिं**–नौ (९) करोड **केवलीण**–केवलज्ञानी मुनिराज **कोडिसहस्सनव**–और नौ (९) हजार करोड माने नब्बे (९०) अरब **साहु**–साधु महाराज **गम्मइ**–होते हैं, पाये जाते हैं **संपइ**–वर्तमान समयमें **जिणवर वीस**–(सीमंधरस्वामी आदि) बीस (२०) जिनेश्वर भगवंत (पाँच महाविदेहक्षेत्रोंमें विहरमाण हैं।) **मुणि बिहु कोडिहिं**–दो करोड मुनिराज **वरनाण**–श्रेष्ठ केवल ज्ञानवाले **समणह**–और त्यागी श्रमण साधु महाराज **कोडिसहस्सदुअ**–दो हजार करोड माने बीस अरब इन सबका **थुणिज्जइ**–स्तुति की जाती है **निच्च विहाणि**–प्रतिदिन नित्य प्रातःकालमें उठकर [२] **जयउ**–जय हो **सामिय**!–हे स्वामीजी! **रिसह**!–हे श्रीऋषभदेवस्वामीजी! **सत्तुंजि**–(पालिताणामें) महातीर्थ श्रीशत्रुंजय गिरिराजपर **उज्जिंति**–(जुनागढमें) महातीर्थ श्रीगिरनारजीपर **पहु**–हे प्रभु **नेमिजिण**!–श्रीनेमिनाथ भगवान्! **वीर**!–हे महावीरस्वामीजी! **सच्चउरि**–सत्यपुरा (साचोर) नगरीका **मंडण**–शोभा बढानेवाले

भरुअच्छहि–भडोंचमें मुणिसुव्वय !–हे श्रीमुनिसुव्रतस्वामीजी ! मुहरि पास !–(टिंटोइ गावमें स्थित) हे श्रीमुहरिपार्श्वनाथ भगवान ! दुह–भक्तोंके दुःख और दुरिय–दुरितपापोंका खंडण–नाश करनेवाले अवर–अन्य विदेहिं–महाविदेहक्षेत्रोंमें तित्थयरा–तीर्थंकर भगवंत चिहुं दिसि–पूर्व आदि चार दिशाओंमें विदिसि–और ऐशानी आदि चार विदिशाओंमें जिं के वि–जो कोइ भी तीआ–अतीत (भूत) काल अणागय–अनागत (भविष्य) काल संपइ अ–और वर्तमानकालके वंदु–मैं वंदन करता हूँ जिणसव्वे वि–सभी जिनेश्वर भगवंतोंको [३] सत्ताणवइ–सत्तानवे (९७) सहस्सा–हजार, लक्खा छप्पन–छप्पन (५६) लाख अट्ठकोडीओ–आठ करोड बत्तीसय–बत्तीस (३२) सौ बासियाइं–बियासी (८२) तिअलोए–देव, मनुष्य और पाताल–इन तीनों लोकके चेइए–जिनेश्वर भगवंतोंके चैत्योंको वंदे–मैं वंदन करता हूँ [४] पनरस–पंद्रह (१५) कोडि–करोड सयाइं–सौ कोडी बायाल–बयालीस (४२) करोड लक्खा–लाख अडवना–अट्ठावन (५८) छत्तीस–छत्तीस (३६) सहस्स–हजार असीइ–अस्सी (८०) सासय–शाश्वत बिंबाइं–जिन-प्रतिमाओंको पणमामि–मैं सिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ [५]

सूत्रार्थ

जगचिंतामणि ! जगनाह !–तीनों भुवनके प्राणियोंका (सुखी होनेकी) कामनाएं पूरी करनेमें चिंतामणि रत्न समान, ओ त्रिभुवनके स्वामीजी !

जगगुरु ! जगरक्खण !—पचेंद्रिय जीवोंको उपदेश देकर उनका उद्धार करनेवाले हे गुरुदेव ! अभयदानके अत्यत आश्चर्यकारक चमत्कारपूर्ण सूत्रसे छहों कायके जीवोंका रक्षण करनेवाले

जगबंधव ! जगसत्थवाह !—(वैर-वैमनस्यको दूर कर विश्व-बंधुत्वका अमूल्य और आदर्शमय उपदेश देनेवाले) हे विश्व-बंधो ! मोक्षाभिलाषियोंको मोक्ष ले जानेवाले हे सार्थवाह ! (मुक्तिपुरीके सघके अगुआ सघवी !)

जगभावविअक्खण !—छ द्रव्य, नौ तत्त्व आदि रहस्योंको समझानेमें विचक्षण माने चकोर एव महाज्ञानी !

अट्ठावयसंठविअरूव !—जिनका प्रतिमाएँ महाराजा भरतने अष्टापद पवतपर स्थापित की हैं, ऐसे

कम्मट्ठविणासण !—और जिन्होंने ज्ञानावरणाय आदि आठों कर्मोंका नाश (कर मोक्ष प्राप्त) किया है, ऐसे

चउवीस पि जिणवर !—ओ चौबीसों जिनेश्वर भगवतो !

जयतु अप्पडिहयसासण !—जिनका शासन कभी भी किसीसे भी प्रतिहत पराभूत या ओझल नहीं हो सका है, ऐसे (हे श्रीजिनेश्वर देव !) आपकी सर्वत्र विजय हो। [१]

कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं पढमसंघयणि—असि, मसि और कृषि इन तीनकी वृत्तियोंसे जहाँके लोगोंकी आजीविका चलती है, ऐसी पद्रह कर्मभूमियोंमें पहला (वज्रऋषभनाराच नामक) शरीरकी गठनवाले

उक्कोसय सत्तरिसय–उत्कृष्टतया–अधिकसे अधिक एक सौ सत्तर

जिणवराण विहरत लभइ–श्रीतीर्थंकर देव विहरमाण–विहार करते हुए पाये जाते हैं।

नवकोडिहिं केवलीण–उन १७० तीर्थपतियोंके केवलज्ञानियोंका परिवार नौ करोडका

कोडिसहस्सनव साहु गम्मइ–और सामान्य साधु महाराजोंका नौ हजार करोड (९० अरब) का होता है।

सपइ जिणवर वीस–वर्तमान समयमें पाँच महाविदेहक्षेत्रोंमें विहार करनेवाले श्रीसीमंधरस्वामी भगवान आदि बीस तीर्थंकर भगवंत

मुणि बिहु कोटिहिं वरनाण–दो करोड केवलज्ञानी महामुनिराज

समणह कोडिसहस्सदुअ–दो हजार करोड (२० अरब) सामान्य साधुमहाराज––इन सबका

थुणिज्जइ निच्च विहाणि–नित्य प्रतिदिन मगल प्रात कालमें स्तुति की जाती है। [२]

जयउ सामिय! जयउ सामिय! रिसह! सत्तुजि–हे स्वामीजी! आपकी जय हो! तीर्थाधिराज श्रीशत्रुंजय गिरिराजपरके भगवान श्रीऋषभदेव स्वामीजी! आपकी जय हो!

उज्जिंति पहु नेमिजिण!–श्रीगिरनार महातीर्थपरके श्रीनेमिनाथ प्रभुजी!

जयउ वीर ! सच्चउरिमडण !–और सत्यपुरी (साचोर नगरी)के आभूषणसमान चरमतीर्थपति, श्रीमहावीरस्वामीजी ! आपका जय हो !

भरुअच्छहि मुणिसुव्वय !–भडोंच (भृगुकच्छ) के देवाधिदेव श्रीमुनिसुव्रतस्वामीजी !

मुहरिपास ! दुहदुरिअखडण !–भक्तवर्गके दु ख और दुरित पापकर्मोका नाश करनेवाले (टिटोइ गाँवके) श्रीपार्श्वनाथ स्वामीजी ! (आपकी जय हो !)

अवर विदेहि तित्थयरा–(आपको तथा) दूसरे पाँचों महा विदेहक्षेत्रोंमें विचरनेवाले तीर्थंकर भगवतोंको

चिहु दिसि विदिसि जि के वि–और चारों दिशाओं और चारों विदिशाओंके जो कोइ भी (तीर्थंकरदेव) हो उनको

तीआणागयसपइ अ–और भूतकालमें हो गये है, भविष्यकालमें होनेवाले है तथा वतमानकालमें विद्यमान है, ऐसे

वदु जिण सव्वे वि–सभी तीर्थकर देवोंको मै वदन करता हूँ। [३]

सत्ताणवइ सहस्सा–सत्तानब्बे हजार +

लक्खा छप्पन्न अट्ठकोडीओ–आठ करोड छप्पन लाख +

बत्तीसय बासियाइ–तीन हजार दो सौ बियासी = आठ करोड, सतावन लाख, दो सौ बियासी (८,५७,००,२८२)

तिअलोए चेइए वदे–इतने (स्वर्ग, मृत्यु और पाताल इन) तीनों लोकके जिन प्रासादोंको मै वदन करता हूँ। [४]

पन्नरसकोडिसयाइ–पद्रह सौ करोड (१५ अरब),

कोडी बायाल लक्ख अडवन्ना–बयालीस करोड अट्ठावन लाख, छत्तीस सहस्स असीइ–छत्तीस हजार, अस्सी (१५,४२,५८,३६,०८०)

सासयबिंबाइ पणमामि–कुल इतने शाश्वत जिनबिंबोंको मैं प्रणाम करता हूँ। [५]

भावार्थ

ऐसा कहा जाता है कि जब गणधर भगवान श्रीगौतमस्वामीजी श्रीअष्टापदतीर्थकी यात्रा करने गये थे तब उन्होंने इस सूत्रकी रचना की है। चैत्योंमें वंदना इस प्रकार ही होनी चाहिये ऐसा यह सूत्र बताता है। इस सूत्रका दूसरा नाम चैत्यवंदन है। इस सूत्रमें बहुतसे चैत्योंकी वंदना आती है। भगवानके समक्ष बैठकर बाँया घुटना थोडा (आधा) ऊंचा रखकर दोनों हाथकी कुहनियोंको पेटके पास रखकर और दोनों हाथोंको कमलाकृति मुद्रामें जोडकर यह चैत्य वंदन किया जाता है।

परिमल

★ दिनके घण्टे २४ से आगे नहीं बढते बस वैसे ही ढाई द्वीप प्रमाण मनुष्यलोकमें तीर्थंकर देव भी १७० से अधिक कभी नहीं होते।

★ गणधर भगवान श्रीगौतमजीकी यह तीर्थयात्रा हमें बार बार महा तीर्थोंकी यात्रा करनेको प्रेरित करती है।

★ उपदेशसे गुरुतत्त्व (असली ज्ञान) और अभयदानसे वास्तविक रक्ष —ये दोनों इस सूत्रके अति गूढ तत्त्व हैं।

★ वीतरागियोंके साथ किस प्रकार और कौन कौनसी बातें करनी चाहिये? —इसका ज्ञान इस सूत्रसे होता है।

★ 'सपइ' माने अभी संप्रति वर्तमान समयमें अर्थात श्रीमहावी भगवानके शासनकालमें। यह 'सपइ' शब्द हमें युग-युगा तर प्राचीन इतिहासको देखनेके लिये प्रेरित करता है। भगवान श्री अजितनाथ प्रभुके समयमें १७० विजयोंमें १७० तीर्थंकर भगवा

विहार करते थे उस असंख्यात वर्षोंके अतिप्राचीन अतीत (भूत) कालका निरीक्षण करनेकी मानो यह सूचना ही है।

★ राजाके घर पुत्रजन्म होता है उसे देख सब प्रजाजन हर्ष निर्भर होते हैं राजा सभीको प्रीति भोज देता है, बादमें उसकी शिक्षा दीक्षा पूरी हो जानेपर उसका राज्याभिषेक होता है, तब वह सुशोभित होता है। बस ही जिन प्रतिमाजीकी अंजनशलाका होती है उस समय पहले मूर्तिमें प्राण प्रतिष्ठा होती है बादमें मूर्तिकी चैत्य-मंदिरमें स्थान प्रतिष्ठा होती है तभी भगवान अपने प्रभावसे वहाँ विलसित होते हैं। उनके सम्मुख वदन स्तुति भजन आदि किया जाता है उसे चैत्यवन्दन कहते हैं।

★ इस सूत्रसे हम जान सकते हैं कि — १ जिनमंदिर होने ही चाहिये। २ प्रभुजीकी मूर्तिके सम्मुख प्रतिदिन भक्ति करनी ही चाहिये। ३ यह वदन स्तवनात्मक भक्ति भी मुक्तिकी साधनाका एक प्रकार ही है।

★ हरेक महाविदेहक्षेत्रमें ३२ तथा भरतक्षेत्र और एरवतक्षेत्रमें १-१ विजय होती है। अतः पंद्रह कर्मभूमियोंमें उनकी संख्या [पाँच महाविदेहकी (५ × ३२ =) १६० + पाँच भरतकी (५ × १ =) ५ + पाँच एरवतकी (५ × १ =) ५ कुल] १७० होती है। केवलज्ञानी भगवंताने इतना विशाल विस्तार तो मानवियोंकी दुनियाका ही देखा और बताया है। और इसके अतिरिक्तकी दुनिया तो परार्धों योजनोंकी बतायी है।

★ शाश्वत बिम्ब और शाश्वत धाम है — यह बात इस सूत्रमें सूत्रकार स्वयं गणधर भगवान हमें बताते हैं। कृतस्थानियोंको छोड़ त्रिभुवनके शाश्वत जिनालयों इस प्रकार गणना कौन कर सकता है? यहाँ बैठ बैठ उन सब चतिम आदि वदन करनेका लाभ उठाओ यह सूचन है।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १—जगचिंतामणि सूत्र क्या है? किसने बनाया है? और क्यों?

उत्तर –जगचिंतामणि सूत्र चैत्यवदन है। गणधर भगवा श्रीगौतमस्वामीजी महाराज अष्टापदकी यात्रा करने ग थे। वहाँ प्रभुभक्तिके लिये उन्होंने यह सूत्र बनाया इसमें त्रिभुवनके शाश्वत और अशाश्वत जिनालयों और उनमें स्थित जिनेश्वर भगवंतोंकी प्रतिमाओं नमस्कार किया है।

प्रश्न २–अष्टापदके जिन बिंबोंके बारेमें आप क्या जानते हैं

उत्तर –चक्रवर्ती भरत महाराजाने चौबीसों तीर्थंकर देवोंकी म और रत्नमयी मूर्तियाँ बनाकर अष्टापद पर्वतपर स्थापि की है। मूर्तियाँ हरेक तीर्थंकरके आकार, प्रकार अं प्रमाणकी और चारों दिशाओंमें २, ४, ८ और (कुल २४) की संख्यामें हैं। हरेक भगवानका नासि एक सरल श्रेणीमें रखकर उच्च नीच आसनपर मूर्ति विराजमान की है।

प्रश्न ३–सातों लोकके नाम बताइये।

उत्तर –१ स्वर्गलोक, ऊर्ध्वलोक या देवलोक २ मृत्युलो तिर्च्छालोक या मनुष्यलोक ३ पाताल या अधोल

प्रश्न ४–'कम्मभूमिहिं' माने क्या ?

उत्तर –असि तलवार (अनेक प्रकारके हथियार), मसि-स्य (लिखा पढ़ीके सब साधन) और कृषि खेती (खे बारी, गोपालन, व्यापार आदि)—इन तीन प्रवृत्तिय त्रिविध व्यापारसे जहाँ जीवन निर्वाह किया जाता उसे 'कर्मभूमि' कहते हैं।

प्रश्न ५–कर्मभूमिके क्षेत्र कहाँ आये हैं ? उनके नाम बताइये ।

उत्तर –भरत, ऐरवत और महाविदेह इन तीन नामके पाँच-पाँच (कुल १५) क्षेत्र हैं । इनमेंसे जम्बुद्वीपमें हरेक नामका एक-एक (माने कुल ३) और धातकी खंड एवं पुष्कराधद्वीप इन दोनोंमें हरेक नामके दो-दो (माने कुल ६ + ६ = १२) इस प्रकार १५ कर्मभूमिके क्षेत्र हैं । (इनके अलावा इस ढाई द्वीपमें ३० अकर्मभूमि क्षेत्र भी हैं, जहाँ केवल यमल जोड़े ही होते हैं ।)

प्रश्न ६–'जगचिंतामणि' की पाँच गाथाओंका संक्षेपमें वर्णन कीजिये ।

उत्तर –पहली गाथा सवैयामें और बादकी गाथाएँ वस्तुछंदमें हैं । पहली गाथामें अष्टापदपरके चौबीसों तीर्थंकरोंको वंदन किया गया है । दूसरी गाथामें उत्कृष्ट कालमें विहरमाण १७० एवं सांप्रत जघन्यतया विहरमाण २० तीर्थंकरोंको वंदन किया गया है । तीसरी गाथामें नाम और स्थान निर्देशपूर्वक पाँच भगवंतोंको और तीनों कालके प्रसिद्ध या अप्रसिद्ध भगवंतोंको वंदन किया गया है । चौथी और पाँचवीं गाथामें क्रमशः तीन लोकके शाश्वत जिनालयोंको और जिनबिंबोंको वंदन किया गया है ।

प्रश्न ७–अष्टापद-तीर्थ कहाँ है ? क्या वह बहुत ही ऊँचा है ?

उत्तर –अभीके हिमालयके कैलास शिखरपर अष्टापद तीर्थ है, ऐसा प्रायः माना जाता है । वह बहुत ही ऊँचा है ।

उसके आठ साढियाँ है। देवता वहाँ सेवा भक्ति करते हैं। वहाँ लब्धिधर चरमशरीरी बिना कोई नहीं जा सकता।

प्रश्न ८–अष्टापद तीर्थकी यात्राके लिये श्रीगौतमस्वामीजी भगवान गये थे, तो फिर हम क्यों नहीं जा सकते ?

उत्तर –श्रीगौतमस्वामीजी अनंतलब्धिनिधान थे। अष्टापद तीर्थकी यात्राके समय उन्होंने अपने लब्धि बलसे सूर्यके किरणोंको पकडकर उनके सहारे यात्रा की थी। उस समय भी अन्य तपस्वी तो उस पर्वतपर न चढ सके। अपने पास वैसी सिद्धियाँ न होनेसे हम वहाँ नहीं जा सकते।

प्रश्न ९–क्या मूर्तिको वंदन करनेसे लाभ होता है ?

उत्तर –हाँ, बहुत ही लाभ होता है। 'हम चेतन हैं, जड पाषाणको वंदन क्यों करें?' ऐसा कहनेवाले हरेक संप्रदायके लोग भी एक विशिष्ट आकार प्रकारकी तस्वीर अथवा लकडेका या पत्थरकी मूर्तिको वंदन करते है, उनका सम्मान करते है और अपना लाभ देखकर भजन भी करते है। रुपया या सौका नोट भी क्या जड नहीं होता ? औषध भी तो जड ही है न ? वह पीनेसे शरीरका रोग दूर होता है, वैसे ही इस प्रभुकी मूर्तिको नमन, दर्शन, वंदन भक्ति आदि करनेसे दुर्गतिका नाश होता है। गहने, मकान, सोना, चांदी, जवाहर आदि

जडकी भी कीमत (प्रभाव) होती ही है। वीतरागी प्रभुजीकी यह मूर्ति तो हमें वीतराग होनेका सिखाती है, तो फिर उसका महत्त्व-मूल्यांकन कितना होना चाहिये ? जिनेश्वर भगवानकी प्रतिमा यदि आँखोंके सामने न हो तो मुक्तदशा या वीतरागी अवस्थाके प्रत्यक्ष दर्शन कौन करावे ? मिठाई देखते ही बालकोंके मुँहमें पानी भर आता है, वैसे ही वीतरागी जैसे विरक्तकी मूर्ति दर्शनमात्रसे ही वैराग्य पिपासुओंमें विरक्ति उत्पन्न कराती है। क्या मूर्तिसे होनेवाला यह लाभ कम है ? इसी लिये कल्याणकी प्राप्ति करानेवाली देवाधिदेव जिनेश्वर भगवानकी मूर्ति नैयाकी तरह भवसागरके पार तारनेवाली ही है। रागीकी मूर्ति मोक्ष नहीं ही दे सकती। जिनेश्वर देवकी मूर्ति वीतरागीपन बतानेवाली होनेसे वह तारक और पूज्य ही है। स्त्री, त्रिशूल आदिके साधकी मूर्ति राग द्वेष-दर्शक होनेसे उसमें मोक्ष देनेकी शक्ति हो ही नहीं सकती।

---

१२ श्री जं किंचि सूत्र

अन्वयार्थ

जं किंचि-जो कोई, जितने भी नामतित्थं-नामतीर्थ सग्गे-स्वर्गलोकमें पायालि-इस पृथ्वीके नीचे-पातालमें माणुसे लोए-मनुष्यलोकमें जाइ-जो जो या जितनी जितनी

जिण-जिनेश्वर भगवतोंका बिंबाइं-प्रतिमाएँ (हों) ताइं-उन या उतना सव्वाइं-सब (प्रतिमाओंको) वंदामि-मैं वंदन करता हूँ।

सूत्रार्थ

जं किंचि नामतित्थं-जो जो नामतीर्थ (जैसे कि श्रीशत्रुंजयतीर्थ। तीर्थ ४ प्रकारके होते हैं—१ नामतीर्थ २ स्थापनातीर्थ ३ द्रव्यतीर्थ ४ भावतीर्थ। इनमें नामतीर्थ प्रथम है।)

सग्गे पायालि माणुसे लोए-स्वर्ग, पाताल और मनुष्य इन तीन लोकमें हों (और उन तीर्थोंमें)

जाइं जिणबिंबाइं-जिनेश्वर भगवतोंकी जितनी भी छोटी बडी प्रतिमाएं हों।

ताइं सव्वाइं वंदामि-उन सब (नामतीर्थों और शाश्वत जिन प्रतिमाओं)को मैं भावपूर्वक वंदन करता हूँ।

भावार्थ

स्वर्ग (ऊर्ध्व) पाताल (अधो) और मृत्यु (मध्य)—इन तीनों लोकमें जो जो तीर्थस्थान हैं और उन तीर्थोंमें जिनेश्वर देवोंकी जितनी जितनी प्रतिमाएं हैं—उन सबको इस सूत्रसे वंदन किया जाता है। तीर्थयात्राएँ बार बार करनी चाहिये यह तत्त्व इस सूत्रसे स्पष्ट होता है। स्थानिक मंदिरोंसे भी तीर्थभूमिमें विशेष लाभ है यह ज्ञान भी हमें इस सूत्रसे होता है।

परिमल

★ स्वर्ग वैसे ही पातालमें भी तीर्थ और जिन प्रतिमाएँ हैं यह इस सूत्रसे हम जान सकते हैं।

★ सम्यक्त्वी आत्माका देव और गुरुके साथ सबंध होता है। इस वह निरंतर तीर्थोंका स्मरण और उनकी स्तुति करता है।

★ जबकि मनुष्यलोकको ही सभी तीर्थयात्राएं—जिन प्रतिमाओंके दर्शन हम नहीं कर सकते तब पाताल या स्वर्गकी यात्राएं करना हमारे लिये कैसे संभव हो सकता है? पर उन्हें भी वंदन करनेका लाभ इस सूत्रसे हम उठा सकते हैं।

★ महान तीर्थोंका स्मरण कर वहाँकी शानदार जिन प्रतिमाओंको वंदन करनेकी और घर बैठे बैठे ही तीर्थयात्राका पुण्य प्राप्त करनेकी इस सूत्रमें शिक्षा दी गई है।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १—'जं किंचि' का भावार्थ समझाइये।

उत्तर —तीनों भुवनके समस्त नामतीर्थ और वहाँका जिन प्रतिमाओंको इस सूत्रद्वारा वंदन किया जाता है। [illegible] जैसा ही लाभ होनेके कारण इस सूत्रद्वारा [illegible] तीर्थोंको और वहाँकी प्रतिमाओंको वंदन [illegible] किसी दिन प्रमादीको भी हो सकती है, [illegible] सूत्र बहुत ही महत्त्वका है।

प्रश्न २—क्या तीर्थवंदना जैसा ही 'जं किंचि' [illegible]?

उत्तर —हाँ, इस सूत्रसे भी यहाँ घर बैठे-बैठे ही [illegible] तीर्थोंका स्मरण कर उन्हें वंदन किया जाता है, [illegible] भी एक तरहका तीर्थवंदना ही है। [illegible] थोडेमें ही बहुत [illegible] होता है। [illegible] पत्रमें विस्तारपूर्वक लिखा जाता है, किन्तु तारमें संक्षिप्त शब्दोंमें ही समझाया जाता है, वैसे ही यह सूत्र तार जैसा संक्षिप्त है।

१३ श्री नमुत्थु ण (शक्रस्तव) सूत्र

अन्वयार्थ

नमुत्थु ण–मैं नमस्कार करता हूँ **अरिहंताण**–अरिहंत **भगवंताण**–भगवंतोंको [१] **आइगराण**–पुनश्च चतुर्विध श्रा संघका स्थापना कर शासनका प्रारंभ (आदि) करनेवालोंको **तित्थयराण**–तीर्थंकरोंको **सयं**–स्वयं, आपसे आप **संबुद्धाण**–सर्वज्ञ ज्ञाना हो गये हैं, उनको [२] **पुरिस**–पुरुषोंमें **उत्तमाण**–उत्तमोंको, श्रेष्ठोंको **पुरिससीहाण**–पुरुषोंमें सिंह समान हैं, उनको **पुरिस वरपुंडरीआण**–पुरुषोंमें श्रेष्ठ पुंडरीक श्वेत कमलके समान जो उत्तम हैं, उनको **पुरिस वरगंधहत्थीण**–(हाथियोंमें जैसे गंधहस्ती श्रेष्ठ माना जाता है वैसे ही) जो पुरुषोंमें श्रेष्ठ गंधहस्ती समान उत्तम हैं, उनको [३] **लोगुत्तमाण**–लोकमें जो उत्तम हैं उनको **लोगनाहाण**–लोगोंके नाथोंको–स्वामियोंको **लोगहियाण**–लोगोंका हित करनेवालोंको (भविजीवोंका कल्याण करनेवालोंको) **लोगपईवाण**–विश्वमें जो प्रदीप–ज्ञानदीप जैसे हैं, उनको **लोगपज्जोअगराण**–सारे विश्वमें प्रद्योत ज्ञानप्रकाश फैलानेवालोंको [४] **अभयदयाण**–अभयदान देनेवालोंको (अभयदानद्वारा सदा जीवन प्रदान करनेवालोंको) **चक्खुदयाण**–विवेकरूपी आँखें देनेवालोंको **मग्गदयाण**–मुक्तिमार्ग बतलानेवालोंको **सरणदयाण**–शरण आश्रय देनेवालोंको **बोहिदयाण**–बोधि सम्यक्त्व देनेवालोंको [५] **धम्मदयाण**–धर्मके

प्राप्ति करानेवालोंको **धम्मदेसयाण**–धर्मोपदेश देनेवालोंको **धम्मनायगाण**–धर्मके स्थापक-नायकोंको **धम्मसारहीण**–धर्म-रूपी रथके सारथियोंको (रथ चलानेवालोंको) **धम्मवर**–धर्म-स्वरूप जो श्रेष्ठ **चाउरत**–और चारों गतिओंका नाश करनेवाला धर्मचक्र है, उसे धारण करनेवाले **चक्कवट्टीण**–धर्मचक्रवर्तियोंको [६] **अप्पडिहय**–सवत्र अप्रतिहत अस्खलित ऐसे **वरनाण**–श्रेष्ठ ज्ञान **दसण**–और दर्शनको **धराण**–धारण करनेवाले **विअट्ट**–संपूर्णतया नष्ट हुइ है **छउमाण**–छद्मस्थावस्था जिनकी, उनको (केवलज्ञान पूर्वकी अवस्था छद्मस्थावस्था है।) [७] **जिणाण**–स्वय राग और द्वेष इन अत शत्रुओंको जीतनेवालोंको **जावयाण**–दूसरोंको राग द्वेषरूपा शत्रुओंको जितानेवालोंको **तिन्नाण**–जो स्वय ससारसमुद्र तैर गये हैं, ससारसमुद्रके पार गये हैं, उनको **तारयाण**–दूसरोंको ससारसमुद्रसे तारनेवालोंको **बुद्धाण**–ज्ञानियोंको **बोहयाण**–अन्य भव्य आत्माओंको ज्ञान देनेवालाको **मुत्ताण**–घाती और आघाती कर्मोंसे जो रहित मुक्त हैं, उनको **मोअगाण**–अन्य लघुकर्मी आत्माओंको उन कर्मबंधनोंसे छुडानेवालोंको [८] **सव्वन्नूण**–सर्वज्ञ-केवलज्ञानियोंको **सव्वदरिसीण**–(केवलदर्शन नामक गुण प्रगट होनेसे) सभी देखनेवालोंको **सिव**–निरुपद्रव **अयल**–अचल–स्थिर **अरुअ**–रोगरहित **अणत**–अनत, अतरहित **अक्खय**–अक्षय, जिसका नाश ही नहीं होता ऐसे **अव्वाबाह**–व्याबाधा-पीडारहित **अपुणरावित्ति**–जहाँसे फिर इस पृथ्वीपर आकर जन्म लेना नहीं

पहता ऐसे सिद्धिगइ–सिद्धिगति मोक्षगति नामधेय–नामक ठाण–स्थानको संपत्ताण–प्राप्तहुए है, ऐसे नमो जिणाण–जिनेश्वर भगवतोंको मै नमस्कार करता हूँ जिअभयाण–भ भयोंपर जिन्होंने जय प्राप्त की है, उनको [९] जे अ–और जो अईआ–भूतकालमें सिद्धा–सिद्ध भगवत हो गये हैं जे अ –और जो भविस्सति–होंगे अणागए कालें–आगत–भविष्य कालमें संपइ अ–और जो साम्प्रतकालमें, वर्तमानकालमें, अभी वट्टमाणा–(महाविदेहक्षेत्रमें) विहार कर रहे हैं सव्वे–उन सबको तिविहेण–(मन, वचन और कायासे) त्रिविध वंदामि –मैं वंदन करताहूँ [१०]

सूत्रार्थ

नमुत्थु ण अरिहंताण भगवंताण–श्रीअरिहंत भगवंतोंको मैं नमस्कार करता हूँ। [१]

आइगराण तित्थयराण सय संबुद्धाण–शासनकी स्थापना क (उनकी) अपनी दृष्टिमें धर्मका प्रारंभ करनेवालोंको, तीर्थंकर नाम कर्म धारण करनेवालोंको (और) जो आपसे आप ही शुद्ध बुद्ध ज्ञानी हो गये है, उनको (मै वदन करता हूँ)। [२]

पुरिसुत्तमाण पुरिससीहाण–पुरुषोंमें श्रेष्ठोंको, पुरुषोंमें सिंह सदृश (प्रतापियोंको)

पुरिसवरपुडरीआण पुरिसवरगंधहत्थीण–पुरुषोंमें उत्तम पुंडरीक श्वेत कमलके समान उत्कृष्टोंको (और जैसे हाथियोंमें

गधहस्ती श्रेष्ठ माना जाता है वैसे ही) पुरुषोंमें उत्तम गधहस्तीके तरह श्रेष्ठोंको (मैं वंदन करता हूँ।) [३]

लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं–लोगमें जो उत्तमके नाते सुप्रसिद्ध हुए हैं, उनको, अनाथ और अशरण जनोंके शिरपर जो छत्ररूप माने नाथ या स्वामी हैं, उनको, जीव मात्रका हित चाहनेवालों और करनेवालोंको,

लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं–लोकमें जो प्रदीप ज्ञानदीप समान हैं, उनको (और) भविजीवोंको उपदेश देकर उद्योत ज्ञानप्रकाश फैलानेवालोंको (मैं वंदन करता हूँ।) [४]

अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं–छहों कायके सभी जीवोंको अभयदान देनेवालोंको, विवेक और ज्ञानरूपी चक्षु प्रदान करनेवालोंको, मुक्तिमार्ग बतानेवालोंको,

सरणदयाणं बोहिदयाणं–भवभ्रमणसे ऊबे हुओंको शरण देनेवालोंको (और शुद्ध देव, गुरु एवं धर्मकी श्रद्धास्वरूप) सम्यक्त्वका दान देनेवालोंको (मैं वंदन करता हूँ।) [५].

धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं–सर्वविरति और देशविरति–इन दोनों प्रकारसे धर्म बतानेवालोंको, समवसरणमें धर्मका उपदेश देनेवालोंको, धर्मके नायकोंको,

धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं–धर्मरूपी रथको चलानेवाले धर्मसारथियोंको (जिस प्रकार मेघकुमारके शिथिल हुए भावरूपी रथको भगवान श्रीमहावीरदेवने सन्मार्गमें स्थिर किया था वैसे ही) और चारों गतियोंके जन्म मरण आदि

समस्त दुःखोंका अंत-नाश करनेवाले धर्मचक्रको धारण करनेवाले धर्मचक्रवर्तियोंको (मैं वंदन करता हूँ।) [६]

अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं–सर्वत्र अप्रतिहत अस्खलित ऐसे केवलज्ञान और केवलदर्शनको धारण करनेवालोंको (केवलज्ञानी भगवंतोंको प्रथम ज्ञान और बादमें दर्शन होता है, यह भी यहाँ सूचित किया गया है।)

वियट्टछउमाणं–जिनका अज्ञानमय छद्मस्थावस्था अब व्यावृत्त निवृत्त माने संपूर्णतया नष्ट हो गई है अर्थात् जिन्होंने चार घाती कर्मोंका क्षय किया है, उनको (मैं वंदन करता हूँ।) [७]

जिणाणं जावयाणं–राग और द्वेषरूपी शत्रुओंके जितनेवालोंको और दूसरोंको राग द्वेषरूपी शत्रुओंको जितानेवालोंको,

तिन्नाणं तारयाणं–संसारसमुद्रको जो स्वयं तैर गये हैं माने संसारसमुद्रके जो पार पहुँचे हैं, उनको और लघुकर्मी आत्माओंको जागरूक बनाकर संसारसमुद्रके पार तैराने-ले जानेवालोंको,

बुद्धाणं बोहयाणं–जो स्वयं ज्ञानी हैं, उनको और दूसरे असंख्य आत्माओंको ज्ञान प्रदान करनेवालोंको

मुत्ताणं मोअगाणं–एवं जो स्वयं कर्मबंधनोंसे मुक्त हैं, उनको और दूसरोंको उन कर्मोंसे मुक्त कर मोक्ष पहुँचानेवालोंको (मैं वंदन करता हूँ।) [८]

सवन्नूण सव्वदरिसीण—केवलज्ञानके प्रभावसे सर्वभावोंको जाननेवालोंको, अनत दर्शन नामक गुण प्रगट होनेसे समूचे विश्वको यथार्थतया देखनेवालोंको,

सिवमयलमरुअमणतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति—उपद्रव रहित, स्थिर, रोगरहित, अत बिनाके, क्षयरहित, सर्व प्रकारकी पीडाओंसे मुक्त और जहाँ पहुँचनेपर इस ससारमें फिरसे कभी भी जन्म लेना ही नहीं पडता ऐसे (ये सब मोक्षके विशेषण हैं।)

सिद्धिगइ नामधेय—सिद्धिगति मोक्षगति नामक

ठाण सपत्ताण—श्रेष्ठ स्थानको पहुँचे हुए

नमो जिणाण जिअभयाण—और राग-द्वेष एव समूचे भयको जीतनेवाले श्रीजिनेश्वर भगवतोंको मैं भक्तिभावसे नमस्कार करता हूँ। [९]

जे अ अईआ सिद्धा—अतीत भूतकालमें जो (तीर्थंकर पदको प्राप्त कर) सिद्ध हो गये हैं,

जे अ भविस्सतिणागए काले—जो भविष्यकालमें सिद्ध होंगे

सपइ अ वट्टमाणा—और वर्तमानकालमें जो २० विहरमाण तीर्थंकर भगवत हैं,

सव्वे तिविहेण वदामि—उन सबको मैं मन, वचन और कायासे वदन करता हूँ। [१०]

भावार्थ

प्रभुजीके कल्याणकके समय इद्रमहाराज इद्रसभामें यह सूत्र पढकर श्रीतीर्थंकर भगवतोंकी स्तुति करते हैं। इस लिए यह शाश्वत सूत्र

बहुत ही प्रसिद्ध है। श्री जिनेश्वर भगवंतोंके यथार्थ गुणोंको अनेक उपमा अलंकारोंसे सजाकर ललित शब्दोंमें इस सूत्रमें संग्रह किया गया है। प्रभुजीके सन्मुख इन शब्दोंके उच्चारणके साथ ही जब अर्थका विचार करते हैं तब हमारा हृदय भक्तिभावके हिलोरोंकी कल्लोलोंसे गूंज उठता है। जिनमन्दिरमें (जाकर) प्रभुजीके सन्मुख (किये जानेवाले) चैत्यवन्दनके बाद भी बांये घुटनेको ऊंचा रखकर हाथ जोड़कर नम्रता-विनयके साथ यह सूत्र बोलनेका विधान है। प्रतिक्रमण देववन्दन आदि क्रियाओंमें भी यह सूत्र इसी प्रकार (मुद्रासे) ही बोलनेका विधान है।

परिमल

★ यदि जानकारी एकत्रित की जाय तो सामान्य आदमी अपने बड़े बूढ़ोंके नाम अधिकसे अधिक सात पुश्तोंतक जाननेवाला मिल सकता है और जनताका यथाशक्य परमोत्कृष्ट हित सम्पन्न करनेवाले महाराजा कुमारपाल या शिवाजी महाराज जैसे किन्हीं किन्हीं नेताओंके नाम इतिहासके पन्नोंपर अंकित हो जानेके कारण शताब्दियोंतक जनताके स्मरणमें रहे हैं और रहेंगे भी। इसी प्रकार इस सूत्रमें वर्णित अनंत सद्गुणसम्पन्न और छहों जीवनिकायके परमोपकारी तीर्थंकर भगवंतोंके शुभ नाम तीन चौबीसीतक आगमोंमें रहते ही हैं। यह भी वीतरागियोंकी श्रेष्ठताका सूचक ही है।

★ अभयदान, ज्ञानचक्षुका दान और मोक्षमार्गका दान ये सब उन शरणागतवत्सल प्रभुके भक्ति वृक्षके विकसित पुष्प हैं—और यही इस सूत्रका परिमल है।

★ धर्म रथ है और तीर्थंकर भगवंत सारथी हैं। हमें तो इन दोनोंकी जरूरत है।

★ केवलज्ञानियोंके महान गुण, मोक्षके लिये होनेवाला प्रयास, सुनने या जाननेके बाद होनेवाला ज्ञान और अन्तमें ध्येयका सिद्ध होना— ये सब बातें इस सूत्रके रहस्यस्वरूप बन जाती हैं।

★ उन्मार्गसे जानेवाले रथको सीधी राहपर लानेमें जो कुशल होता है, वह सारथी कहलाता है। संसारके विषय कषाय हमें उन्मार्गकी

ओर आकर्षित करते हैं। प्रभुजी हमारा यहाँसे छुटकारा कर सत्यके मार्गपर (धार्मिक क्रियाओंद्वारा मोक्षकी ओर) खींचते हैं। इसी लिये वे यथार्थ धर्मसारथी हैं और निष्कारणबन्धु भी।

★ जैसे चक्रके बलसे चक्रवर्ती छहों खण्डोंका आधिपत्य सिद्ध करता है, वैसे ही तीर्थंकर भगवान धर्मचक्रसे अपनी चारों गतियोंका अंत करते हैं और भव्यात्माओंकी चारों गतियोंका अंत भी कर देते हैं।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १–'नमुत्थु णं' के रचयिता कौन हैं? इसकी रचना कब हुई?

उत्तर –जब इंद्रका सिंहासन कंपित हो जाता है तब इंद्र महाराज यह सूत्र बोलते हैं। वैसे ही इन्द्र महाराज तीर्थंकर भगवंतोंका जन्म कल्याणक मनानेके लिये उन्हें मेरु शिखरपर ले जाते हैं, वहाँ कलशाभिषेकके बाद भावभक्तिसे जो प्रभुजीकी स्तुति करते हैं, वह स्तुति इस सूत्रमें है। तथापि गणनासे 'नमुत्थु णं' के रचयिता गणधर भगवान हैं, लेकिन सूत्र तो शाश्वत ही है। इस सूत्रमें ३५ विशेषणोंसे भगवानकी स्तुति की गई है।

प्रश्न २–'नमुत्थु णं' का दूसरा नाम क्या है?

उत्तर –शक्रस्तव या इन्द्रस्तुति।

प्रश्न ३–इस सूत्रमें भगवानके इतने सब विशेषण क्यों हैं?

उत्तर –इस जगतमें भी देखा जाता है कि जितना आदमी अधिक पढ़ा लिखा होता है, उतना उसको अधिक उपाधियाँ (डिग्रियाँ) दी जाती हैं। फिर भी जगतके ये सभी

पढे–लिखे लोग अपूर्ण ज्ञानवाले ही होते हैं, औ
भगवान तो पूर्णज्ञानी–केवलज्ञानी हैं। जो अपूर्ण
उन्हें ही जब बहुतेरी उपाधियाँ दी जाती हैं, तब पू
ज्ञानियोंको कितना देना चाहिये? इससे यह बा
ख्यालमें आवेगा कि इस सूत्रमेंके तीर्थंकर देवोंके स
विशेषण अधिक नहीं है। उनमेंसे एक भी विशेषण
भगवंतोंका वास्तवमें अधिक महत्ता बतानेके लिये न
है। अनंत गुणसंपन्न प्रभुजीके अनंत गुणोंके सम्मुख
विशेषण तो अत्यंत ही कम हैं (जैसेकि ऊँटके मुँ
जीरा) और जो भी विशेषण हैं, वे गुणनिष्पन्न ही
प्रभुजीके चुने हुए खास–खास गुणोंका यह
संग्रहस्थान है।

प्रश्न ४–३५ विशेषण क्या सूचित करते हैं?

उत्तर –तीर्थंकर भगवंतोंको छोड अन्यत्र कहीं भी उनके जै
उत्तमता हो ही नहीं सकती। जैसे दूसरोंको अ
उपदेशकी जरूरत होती है, वैसे तीर्थंकरदेवोंको किस
उपदेशकी आवश्यकता नहीं रहती। उनके जि
ऋद्धि (ऐश्वर्य) उनके बिना कोई भी नहीं पचा सक
उनके मार्गदर्शन बिना कहीं भी किसीका भी
नहीं हुआ और होगा भी नहीं। उ
बिना लोकहित हो ही नहीं सकता
घबडाये हुए और अशरण जीव प्र

बिना भव-सागरको पार ही नहीं कर सक्ते। संसार-सागरको तैरनेकी शिक्षा देनेके लिये उनके बिना दूसरा कोई भी समर्थ नहीं है। ऐसी ऐसी अनेक बातें इन विशेषणोंसे हम जान सकते हैं।

१४ श्री जावंति चेइआइं सूत्र

अन्वयार्थ

जावंति–जितने चेइआइं–चैत्य, जिनालय उड्ढे–ऊर्ध्व-लोकमें, स्वर्गमें अ–और अहे–अधोलोकमें, पातालमें तिरिअलोए–तिर्च्छालोकमें, मनुष्यलोकमें सव्वाइं–सबको ताइं–उनको वंदे–मैं वंदन करता हूँ इह–यहाँ संतो–रहा हुआ (रहकर भी) तत्थ–वहाँ संताइं–रहे हुए (चैत्योंको)

सूत्रार्थ

जावंति चेइआइं–जितने जितने (जितने भी) जिनमंदिर उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ–ऊर्ध्व, अधो और तिर्च्छा इन तीनों लोकमें हैं,

सव्वाइं ताइं वंदे–उन सब (जिनालयों)को मैं वंदन करता हूँ।

इह संतो तत्थ संताइं–यहाँ रहकर (भी) वहाँ तीनों लोकमें स्थान स्थानपर रहे हुए (चैत्योंको मैं वंदन करता हूँ। यद्यपि मैं यहाँ एक नियत स्थानपर हूँ, फिर भी तीनों लोकके भव्य जिनालयोंकी भावयात्राका लाभ प्राप्त हो इस लिये सभी चैत्योंका समष्टिरूपमें स्मरण कर मैं उन्हें वंदन करता हूँ

भावार्थ

तीनों भुवनके जिनालयोंको इस सूत्रसे वंदन किया जाता है। त्रिभुवनके जिनमंदिरोंके वंदनके लिये मनुष्यको जाना संभव नहीं है इसी लिये यहीं मंदिर आदिमें चैत्यवंदन करनेके समय उन सुदूरस्थ सभी चैत्योंका स्मरण करनेकी शिक्षा यह सूत्र हमें देता है।

परिमल

★ शुभ कार्योंमें जितनी अनुमोदना भी की जाती है उतना पुण्य प्राप्त होता है। यहाँ—इस सूत्रद्वारा तीर्थयात्राकी अनुमोदना करनेसे भी आत्माको बहुत बड़े लाभकी प्राप्ति होती है। उत्तम कार्योंकी अनुमोदना न करनेसे—उनके प्रति उपेक्षाभाव रखनेसे भी पापका बंध होता है ऐसा शास्त्रोंका कथन है। ढाल हो तो पानीको नीचे आनेमें देरी नहीं लगती किंतु यदि पानीको ऊपर चढ़ाना हो तो इलेक्ट्रिक मशीनका उपयोग करना पड़ता है, उसी प्रकार धर्मीको उत्तेजन न मिलनेसे या उसके कार्यमें अंतरायरूप हो जानेसे या उसकी उपेक्षा करनेसे या उसे पूरा-ठीक-ठीक सहकार न मिलनेसे उसका पतन होनेमें देरी नहीं लगती। इसी लिये अनुमोदन भी एक प्रोत्साहन ही है। अनुमोदन करनेवालेको स्वयंको भी लाभ होता ही है। इस प्रकार शुभ कार्योंकी अनुमोदना करनेसे शुभ कार्य करनेवाला भव्यात्मा उच्च भावनासे युक्त बनता है। वैसे ही इन सब चैत्योंकी वंदना करनेसे और वंदन करनेवालेकी अनुमोदना करनेसे भी बहुत ही लाभ होता है।

★ स्वजन संबंधियोंकी याद मन सहजमें कर ही लेता है क्योंकि उनके लिये हमारे दिलमें प्रीति है। उसी प्रकार सम्यक्त्वका संबंध देव गुरु धर्मसे प्रीति कराता है इससे धर्मको याद करनेका मन सहजमें ही हो जाता है अत एव मंदिरमें जाकर इन सब सुदूरस्थ चैत्योंको या जिनेश्वर देवकी प्रतिमाओंको (जैसे कि स्वजन-संबंधियोंके साथ टेलिफोनद्वारा बातचीत करते हैं उस प्रकार) नमन करनेका मन हो जाता है। इस सूत्रसे ऐसे अनेक लाभ होते हैं।

★ ऊर्ध्व और अधो लोकमें भी जिनालय है, यह बात यदि ज्ञानियोंने हमें इस सूत्रद्वारा न बताई है तो ता हम यह बात कहांसे जान सकते? माने हमारे लिये यह जानकारी असंभव ही बनी रहती।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १– 'जावंति चेइआइं' का अर्थ विस्तारसे समझाइये।

उत्तर – तीनों लोकके भूत, भविष्य और वर्तमानकालके जिनालयों और जिनप्रतिमाओंको इस सूत्रमें वंदन किया गया है। यहाँ रहते हुए भी उन सुदूरस्थ चैत्योंको और वहाँके अलौकिक जिनबिंबोंको इस सूत्रमें स्मरणद्वारा वंदन किया गया है। प्रतिदिन यात्रा करना असंभव है, इस लिये घरपर रहकर ही इस प्रकार स्मरणद्वारा ही यात्रा कर संतोष मान लेना पडता है। पर शक्य यात्राएँ किये बिना मन ही नहीं मानता इस लिये वहाँ जाकर ही तीर्थयात्राका लाभ उठानेका मन निसर्गत ही हो जाता है।

प्रश्न २– ऊर्ध्वलोक और अधोलोक तो हमने देखे नहीं हैं, तो क्या वहांके चैत्योंको श्रद्धासे ही मान लेनेके या कैसे?

उत्तर – ये चैत्य सुदूर है और हमने देखे नहीं है, इससे क्या हुआ? मानिये, कोई भील या गँवार कहे कि "मैंने अमेरिका देश देखा नहीं है, इस लिये मैं उसका अस्तित्व ही नहीं मान सकता।" इससे अमेरिका देश ही नहीं है, ऐसा कभी माना भी जाता है? छद्मस्थोंके बनाये हुए मानचित्र आलेखमें अमेरिका होनेसे हम

उसे मान लेते हैं, तब तो ऊर्ध्व और अधोलोकके दर्शक ज्ञानी देव हैं, तो फिर उन्हें क्यों न माना जाय? कोई अनुभवी जानकार कुछ कहे तो आज भी हम कहाँ नहीं मानते? नौकरके किये हुए कामपर या पत्नीकी पकाई हुई रसोईपर जैसे विश्वास रखा जाता है, वैसे यदि इन केवलज्ञानियोंके वचनपर विश्वास रखा जाय तो क्या बाधा है? अज्ञानियोंके वचनमें तो (कहीं गलती हो, ऐसा) शंकाको भी स्थान रहता है, किन्तु केवलज्ञानी देवोंके वचनमें शंकाको स्थान ही कहाँ? व्यवहारमें भी अध्यापकपर विश्वास रखनेसे ही विद्यार्थी विद्वान बन सकता है।

---

१५ श्री जावंत के वि साहू सूत्र

अन्वयार्थ

जावंत–जितने के वि–कोई भी साहू–(महाव्रतधारी) साधु महाराज भरह–५ भरतक्षेत्र एरवय–५ ऐरवतक्षेत्र महाविदेहे अ–और ५ महाविदेहक्षेत्रोंमें (हैं) सव्वेसिं–सब (साधु महाराजों) को तेसिं–उनको पणओ–मैं प्रणाम करता हूँ तिविहेण–तीन प्रकारसे, तीन करणोंसे, मन वचन कायासे तिदंड–(मनदंड, वचनदंड और कायदंड–इन) तीनों दंडोंसे विरयाण–विरत, निवृत्त (उन पूज्योंको)

सूत्रार्थ

जावन के वि साहू–जितने कोइ भी (पाँच महाव्रतोंसे युक्त) साधु महाराज

भरहेरवयमहाविदेहे अ–५ भरतक्षेत्र, ५ ऐरवतक्षेत्र और ५ महाविदेहक्षेत्र–इन १५ कर्मभूमियोंमें (और वहाँ भी आर्य क्षेत्रोंमें हा विहार करते हैं,)

सव्वेसि तेसि पणओ–उन सब साधु महाराजोंको मैं प्रणाम करता हूँ।

तिविहेण तिदडविरयाण–(अशुभ कर्मबंध करानेवाले) मन, वचन और काया इन तीनोंके दडसे–अशुभ योगसे निवृत्त (परमपूज्य साधु महाराजोंको मैं त्रिकरणसे वदन करता हूँ।)

भावार्थ

ढाई द्वीपप्रमाण मनुष्यलोककी केवल १५ कर्मभूमियोंमें और उनमें भी अनार्यक्षेत्रोंको छोड सिर्फ आर्यक्षेत्रोंमें ही मुक्तिकी आराधना साधना हो सकती है। अर्थात् उन आर्यक्षेत्रोंमें ही मुनिराज विहार करते है। उन मुनिराजोंका स्मरण कर इस सूत्रसे उन्हें नमस्कार किया गया है।

परिमल

★ श्रीजिनेश्वर देव और उनकी प्रतिमाओंकी तरह मुनिराज भी आत्म भावनाको प्रदीप्त करनेमें असाधारण निमित्त साधन होनसे यह सूत्र जिनचैत्योंमें भी बोलनमें किसी बाधाको स्थान ही नहीं है।

★ यह सूत्र जिनालयमें भगवानके सम्मुख बोलनका विधान है। इसका कारण यह भी है कि इस सूत्रद्वारा जिन मुनिवरोंकी वदना की जाती है उनमें सामान्य केवली मुनिराज परमावधिसम्पन्न लब्धिनिधान १४ पूर्वधर अन्य महाज्ञानी मुनिराज और महान् श्रुतधरोंका भी

समावेश होता है और जब कि सामान्य केवली मुनि भी पाँच परमेष्ठियोंमें है तब जिनाज्ञानुसार उन्हें जो नमन किया जाता है वह पाँचवें पदमें जायगा।

★ मनदण्ड वचनदण्ड और कायदण्ड ये तीनों मनुष्य दुनियाके हरदम पाप पहुँचाते हैं। किन्तु साधु महाराज इस दण्डमें नहीं आते।

★ पन्द्रह क्षेत्रोंके मुनिवरोंको नमस्कार किया जाता है उसमें केवलज्ञानी महान श्रुतधर १४ पूर्वधर अन्य सर्वोत्कृष्ट मुनिराज और पूज्य साध्वीजी महाराजोंको भी वन्दन होता ही है। इनसे सब महा महिमाशालियोंको वन्दन करनेवाला स्वयं ही वन्दनीय बन जाता है।

★ जैन देवतत्त्व जैसे गुरुतत्त्व भी तारक माना गया है। गुरु महाराजही हमें देवतत्त्व और धर्मतत्त्वका ज्ञान कराते हैं अतः इस तारक पदोंमें गुरुतत्त्व न भूला जाय इस हेतुसे यह सर्वसाधु सूत्र क्रिया समयमें बोलनेका विधान होना ही चाहिये।

★ जिस प्रकार रेलगाडीमें इंजन गार्ड और डब्बे ये तीनों उसी प्रकार शासनमें (शासनरूपी मोक्षमार्गकी गाडीमें क्रमशः) देव गुरु और धर्म यह तत्त्वत्रयी परस्पर संबंधित (और अपेक्षित यात्रा निर्विघ्नतासे पूरी करानेवाली) है।

★ पाँचों परमेष्ठियोंमें साधुका पद सबसे अन्तिम होनेसे देवोंके साथ गुरु महाराजका भी स्मरण करना उचित समझकर क्रियाओंमें यह सूत्र बोलनेका विधान होना आवश्यक है।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १—'जावंत के वि साहू' सूत्र किस लिये है? तीन दंड कौनसे और किनके?

उत्तर —१५ कर्मभूमियोंके याने ढाई द्वीपके आर्यक्षेत्रोंमें विहरमाण सब साधु महाराजोंको प्रणाम करनेके लिये यह सूत्र

है। मन, वचन और कायाके अशुभ व्यापारस्वरूप तीन दड हैं। साधुमहाराज 'तिदडविरयाणं'-त्रिदडविरत अर्थात् इन तीनों दडोंसे रहित (मुक्त) है।

प्रश्न २–'तिदडविरयाण' माने क्या ?

उत्तर –मनसे भी बहुत कुछ अशुभ चिंतन होता है और उससे पापबध भी होता है—यह बात अधिक्तर लोग समझते भी नहीं। वाणीसे भी बहुत वैर विरोध और पापबंध होते हैं। शरीरसे होनेवाले पापोंको तो लोग रोक भी नहीं सकते। इसी लिये यहाँ बताया है कि मुनिराज इन तीना पापदडोंसे अलिप्त रहकर पवित्र जीवन व्यतीत करते हैं। अत एव तीनों दड बिनाका जीवन व्यतीत करनेमें बहुत ही महत्त्व गौरव समाविष्ट है। तीन दडोंसे पीडित जीवोंको तीन दडोंसे मुक्त जीवनके साथ अपने जीवनका तुलना करनेकी यहाँ परोक्ष (गर्भित, गूढ) सूचना है। पवित्र कौन और अपवित्र कौन ?—यह सोचने-देखनेकी इच्छा भी हमें इसी सूत्रसे होती है।

---

१६ श्री पंचपरमेष्ठिनमस्कार सूत्र

अन्वयार्थ

नमो–मैं नमस्कार करता हूँ अर्हत–अरिहंत सिद्ध–सिद्ध आचार्य–आचार्य उपाध्याय–उपाध्याय सर्वसाधुभ्य –(और) सभी साधु महाराजोंको

सूत्रार्थ

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य –अरिहंत भगवंत, सिद्ध भगवंत, आचार्य महाराज, उपाध्यायजी महाराज और सभी साधु महाराज–इन पाँचों परमेष्ठियोंको मैं नमस्कार करता हूँ।

भावार्थ

यह सूत्र संस्कृत भाषामें नवकार महामंत्रका संक्षेप है। १४ पूर्वोंका सार नवकार है और इस छोटे से सूत्रमें नवकार भी थोड़ेमें ही–संक्षेपमें आ जाता है।

परिमल

★ नवकार महामंत्र सभी मांगलिकोंका मूल है श्री जैन शासनका सार है ११ अंग और १४ पूर्वोंका रहस्य है त्रिकाल शाश्वत ऐसा महामंत्र है सब मंत्रोंमें श्रेष्ठ है सभी मनोरथोंको पूरा करनेवाला है और अत्यंत चमत्कार पूर्ण है। इस मंत्रका संक्षेप कर पूर्वोंमेंसे उद्धृत कर श्री सिद्धसेन दिवाकरसूरिजी महाराजने यह सूत्र संस्कृत भाषामें बनाया है।

★ नवकारका संक्षेप नमोऽर्हत् सूत्र है उसका संक्षेप असिआउसा है और उसका भी संक्षेप ॐ कार है इस लिये ॐकार ध्येय स्वरूप और मंत्रबीज है।

★ दुनियामें ये पाँच परमेष्ठी ही सारभूत हैं, जैन शासनका मूलाधार हैं और विरतिका मूल स्थान भी ये ही हैं—ऐसा यह सूत्र साफ-साफ बतलाता है।

★ केवल मुक्तिके ही आराधक इन पाँच परमेष्ठियोंके बिना सारी दुनियामें दूसरा कोई भी हमारे लिये नमस्कार करने योग्य नहीं है, ऐसी जानकारी यह संक्षिप्त सूत्र हमें देता है। इनके अतिरिक्त दुनियामें सब असत् ही है याने मुक्ति साधनके सिवा अन्य किसी भी प्रकारकी प्रवृत्ति भव भ्रमण करानेवाली (बढानेवाली) है—ऐसी शिक्षा यह सूत्र हमें परोक्षतया देता है।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १–'नमोऽर्हत्' सूत्रके रचयिता कौन है? सूत्रके बारेमें आप क्या जानते हैं?

उत्तर –यह सूत्र माने नवकार महामन्त्रका संस्कृत भाषामें किया हुआ संक्षिप्त रूप। इसमें पाँचों परमेष्ठियोंको नमस्कार किया गया है। सम्राट श्रीविक्रमादित्य महाराजके प्रतिबोधक पूज्य श्री सिद्धसेन दिवाकरसूरीश्वरजी महाराज इस सूत्रके रचयिता (माने दृष्टिवादमेंसे उद्धृत कर पेश करनेवाले) हैं।

प्रश्न २–स्त्रियोंको 'नमोऽर्हत्' बोलनेकी मनाही क्यों है?

उत्तर –यह सूत्र दृष्टिवादमेंसे उद्धृत किया हुआ होनेसे बोलनेकी मनाही है। ऐसा नियम है कि स्त्री जातिको दृष्टिवादके सूत्र बोलनेका अधिकार नहीं होता, इसी लिये स्त्रियोंको 'नमोऽर्हत्' सूत्र बोलनेकी मनाही है।

---

१७ श्री उवसग्गहर स्तोत्र

अन्वयार्थ

उवसग्ग–(जिनके शासनमें भक्तोंके) उपसर्गोंका, सवर्गोंके उपद्रवोंका हर–नाश करनेवाला पास–पार्श्व नामक प (जिनका भक्त सेवक है, ऐसे) पास–श्रीपार्श्वनाथ भगवान् वदामि–मैं वदन करता हूँ कम्मघण–आठों कर्मोंके समूह मुक्क–(जो प्रभुजी) मुक्त है विसहर–विषको धारण क वाले साँपके विस–विषका (उदाहरणामें मिथ्यात्वरूपी विषका भ निन्नाम–जिनके प्रभावसे नाश होता है मगल–और मं कल्लाण–एव सुखका वृद्धि करनेवाले कल्याणका आवास– आवास, मूलस्थान या घर है [१]. विसहरफुलिंगमंत–'विष स्फुलिंग' नामक मत्रको कंठे–कठमें, गलेमें, हृदयमें धारे धारण करता है माने प्रतिक्षण स्मरण करता है जो–जो सया–स निरंतर मणुओ–मनुष्य तस्स–उसके गह–मंगल, शनै आदि पीड़ा देनेवाले ग्रह रोग–रोग मारी–महामारी, दु दुट्ठ–दुष्ट जरा–ज्वर, बुखार जंति–होते है उवसाम– शात, नष्ट [२] चिट्ठउ–रहो दूरे–दूर मंतो–वह मंत्र उस मंत्रका प्रभाव तो तुज्झ–आपको पणामो–(केवल भ पूर्वक) किया हुआ प्रणाम वि–भी बहुफलो–बहुत ही उ फल देनेवाला होइ–होता है नर–(फिर चाहे प्रणाम करनेवाल मनुष्य हो या तिरिएसु–तिर्यंच (मनुष्य या तिर्यंच गति प्राप्त हुए) जीवा–जीव (भी) पावंति–पाते न–न

दुक्ख-दु:ख दोगच्च-दुर्गति या दारिद्रय (माने उत्तम सुखोंको प्राप्त करते हैं।) [३] तुह-आपके सम्मत्ते-महार्ह सम्यक्त्व रत्नको लद्धे-पाकर चिंतामणि-(जो शुद्ध देव, गुरु और धर्ममें श्रद्धास्वरूप सम्यक्त्व-रत्न) चिंतामणि रत्न कप्पपायव -या कल्पवृक्षसे भी अब्भहिए-अभ्यधिक, ज्यादा कामतवाला है (वह मिलनेके बाद) पावंति-पाते हैं अविग्घेण-बिना विघ्नोंके अर्थात् शीघ्र ही (विघ्न बाधा आनेसे ही देरी होती है।) जीवा-भक्तिसम्पन्न जीव अयरामर-अजर-अमर माने जहाँ जरा और मरण नहीं है, ऐसे सर्वश्रेष्ठ मोक्ष नामक ठाण -स्थानको [४] इअ-इस प्रकार संथुओ-मेरे द्वारा स्तुति किये हुए महायस!-जिनका विपुल यश तीनों भुवनोंमें फैला है, ऐसे ओ यशस्वी प्रभुजी! भत्ति-भक्तिके ब्भर-समूहसे निब्भरेण-सपूर्ण भरे हुए हियएण-हृदयसे, दिलसे ता-अत: इस लिये देव! -हे देव! दिज्ज-मुझे दीजिये बोहिं-बोधि, सम्यक्त्वरूपी रत्न भवे भवे-इस जन्ममें और आगेके जन्मोंमें, हरेक जन्ममें पास! -हे पार्श्वनाथ भगवान! जिणचंद!- सामान्य केवलीरूपी तारागणमें चंद्रकी तरह शोभनेवाले [५].

सूत्रार्थ

उवसग्गहरं पासं-जिनके शासनमें भक्तजनोंके अनेक संकटोंका नाश करनेवाला पार्श्वनामक यक्ष जिन प्रभुका सेवक है (माने यह यक्ष पार्श्वनाथ भगवानका और भगवानके भक्तोंका भी भक्त है।)

पास वदामि कम्मघणमुक्क–उन समस्त कर्म-बधनोंसे मुक्त श्रीपार्श्वनाथ भगवानको म वदन करता हूँ।

विसहरविसनिन्नास–साँपके विषका (और मिथ्यात्वरूपी विषको भी) देशनामृतसे नाश करनेवाले

मगलकल्लाणआवास–मगल और कल्याणके धामस्वरूप भगवान हैं, उनको [१]

विसहरफुलिंगमत–'विषधरस्फुलिंग' नामक मत्र जो श्रीपार्श्वना प्रभुजाके नामगर्भित चमत्कारोंसे परिपूर्ण है, उस मत्रको

कठे धारेइ जो सया मणुओ–जो पुरुष या स्त्री अपने हृदय निरंतर धारण करता है माने जो इस मत्रको हरदम रट रहता है,

तस्स गहरोगमारी–(यदि) उसे राहु, मंगल या शनैश्चर ग्रह पीडा पहुँचाते या हानि करते हो, कोइ रोग या महामा प्लेग हो गया हो

दुट्ठजरा जति उवसाम–या दुष्ट ज्वर (जैसेकि अवधिका, वा का) हो तो भा इस मत्रके स्मरणसे शात हो जाते है। [

चिट्ठउ दूरे मतो–मत्रके प्रभावका बात तो दूर रहे, यह अपूव है हा। (चूकि मत्र और औषधियोंका चमत्कार बहुत गहरा होता है, अत मत्रका चमत्कार दूर ही रहे।)

तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ–(पर हे अशरणोंके शरण ! अनाथोंके नाथ ! और हे अनत प्रभावशाली प्रभो ! म राधनका फल-प्रभाव प्रगट है हा किन्तु विना कुछ

उठाये, बिना आराधना किये, आपके मात्र नामस्मरणसे या) आपको भक्तिभावसे एक हा प्रणाम करनेसे भी बहुत ही लाभ होता है। बहुफल माने सौभाग्य, आरोग्य, धन, धान्य, स्त्री, पुत्र, वैभव, चक्रवर्ति इन्द्र आदिका ऋद्धि आदिकी प्राप्ति।

नरतिरिएसु वि जीवा–मनुष्य और तिर्यंचगतिके जीव भी

पावंति न दुक्खदोगच्च–दुःख और दारिद्रय-दुर्दशाको प्राप्त नहीं होते। (जीव जहाँ कहीं भी मानव या तिर्यंच गतिमें भी गया हो, वहाँ भी इस भक्तिभावसे किये हुए प्रणामके प्रभावसे यथाशक्य सर्व सुखोंको प्राप्त करता है।) [३]

तुह सम्मत्ते लद्धे चिंतामणिकप्पपायवन्भहिए–मनोवाछित पूर्ण करनेवाले चिंतामणिरत्न या कल्पवृक्षसे भी अभ्यधिक माने मोक्षतककी इच्छा पूर्ण करनेवाला (सुदेव, गुरु और धर्मपरकी अचल श्रद्धा स्वरूप) आपका सम्यग्दर्शन (सम्यक्त्व) रत्न पानेके बाद

पावंति अविग्घेण–किसी भी अंतराय, कठिनाइ या विघ्न-बाधाकी रुकावट बिना पाते हैं।

जीवा अयरामर ठाणं–भवी जीव (जरा और मरणसे रहित ऐसे) अजरामर मोक्षस्थानको (पहुँचते हैं।) [४]

इअ संथुओ महायस!–हे महायशस्वी पार्श्वनाथ भगवान! इस प्रकार मने आपकी स्तुति की।

भत्तिब्भरनिब्भरेण हियएण–भक्तिके उद्रेकसे परिपूर्ण हृदयसे (नितांत भक्तिभावसे)

ता देव ! दिज्ज बोहिं–अतः हे देवाधिदेव ! मुझे बोधिबीज समकित दीजियेगा। (सम्यक्त्वसे मोक्ष मिलता है, इस लिये मैं सम्यक्त्व ही चाहता हूँ।)

भवे भवे पास जिणचंद ! –(श्रेय करनेवाले, विघ्नका नाश करनेवाले, धरणेन्द्र और पद्मावतीद्वारा पूजित, परम कारुणिक और) सामान्य केवलियोंमें चंद्रमा समान हे श्रीपार्श्वनाथ भगवान ! इस जन्ममें और आगेके जन्मोंमें (इस भक्तिके प्रभावसे मुझे सम्यक्त्व दीजियेगा।) [५]

भावार्थ

इस सूत्रमें श्रीपार्श्वनाथ प्रभुकी महिमाका वर्णन किया गया है। संकट समय यह स्तोत्र २१ बार पढनेसे बहुत ही फायदा होता है। यह स्तोत्र महामंत्रगर्भित है। कहा जाता है कि इस सूत्रमें पहले सात गाथाएँ थीं, पर इसके रचयिता १४ पूर्वधर श्रीभद्रबाहुस्वामीजी महाराजने स्वयं ही कई कारणोंसे बादमें दो गाथाओंका तिरोभाव कर दिया था। इस सूत्रमें सम्यक्त्वकी प्राप्तिपर बहुत ही महत्त्व दिया गया है।

परिमल

★ किसी भी जीवको दुःख दारिद्र्य संकट कठिनाई आदिकी इच्छा नहीं होती फिर भी कुछ न कुछ उसके पीछे लगा हुआ रहता ही है। अतः उनसे छुटकारा पाने के लिये श्रीपार्श्वनाथजीको प्रणाम करनेका और विषधरस्फुलिंग मंत्र हृदयमें रटनेका परामर्श विधान इस सूत्रमें किया है।

★ समकितकी प्राप्ति होना माने मुक्तिके प्रयाणकी दिशा तय होना–मार्गका और जानेवाला रास्ता मिल जाना। धीरे धीरे आत्माके गुणोंकी प्राप्ति होना, महाप्रभुसे स्वयं प्राप्त किये हुए सम्यक्त्व रत्नको निर्मल रखनेके लिये योग्य अवसर और परि-

स्थितिके लिये आत्माका प्रयास करना, आहिस्ते किन्तु स्थिर चित्तसे प्रयाण करते करते मोक्षके निकट निकट पहुँचते रहना और अंतमें मुक्ति प्राप्त करना —यह भाव बतलानेके लिये चौथी गाथामें मुक्ति और सम्यक्त्वका "कार्यकारण भाव" बताया गया है। समकित कारण है और मुक्ति कार्य है।

★ चूँकि दाय २३ तीर्थकर देवोंकी अधिष्ठायिका देवियोंका च्यवन हो गया है पर श्रीपार्श्वनाथ प्रभुजीकी शासन रक्षिका देवी (पद्मावती) अभी भी स्वस्थानमें विद्यमान हैं, जहाँ जहाँ श्रीपार्श्वनाथ प्रभुजीकी प्रतिमाएं होती है वहाँ वहाँ चमत्कार पूर्ण घटनाएँ सुनी जाती है। स्वयं अभी अपने स्थानमें विद्यमान होनेसे पद्मावती देवी प्रभुजीका उपकार मानकर उनके भक्तोंकी मदद करती है। भगवानपर अत्यंत श्रद्धा और अमित पूज्यभाव रखनेवाले उनके अनेक सेवकोंमेंसे (शिष्योंमेंसे) जो जो देव गतिको प्राप्त हुए है वे सब देव भी पार्श्व प्रभुके भक्तोंकी गुप्तरूपसे बहुत ही सहायता करते है —उन्हें संकटसे छुडाते है उनके मनोवाछित पूर्ण करते है और धर्माराधना करनेकी अनुकूलता कर देते है। इसी लिये कई लोग नवकारकी तरह 'उवसग्गहरं'की माला फेरते है।

★ समकितकी प्राप्ति और उसकी प्राप्तिके बाद उसे निर्मल रखनेका प्रयास —इनपर इस सूत्रमें बहुत ही महत्त्व दिया गया है। इसी लिये किसीको सम्यक्त्वका लाभ करानेमें विपुल पुण्यकी प्राप्ति होती है, यह बात भी यहां स्पष्ट होती है।

★ मूर्तिके दर्शनसे भी समकितकी प्राप्ति होती है इसी लिये अनेक भक्त दूर दूरकी तीर्थयात्राएँ करते है मूर्तिजीकी अंजनशलाका और मूर्तिजीकी प्रतिष्ठा भी कराते हैं।

★ सम्यक्त्वकी प्राप्तिके बाद श्रीवीतराग प्रभुजीपर भक्तिभाव दृढ होता है और उस भक्तिसे मुक्ति प्राप्त होती है।

★ इतने सब श्रीपार्श्वनाथ प्रभुजीके चमत्कारपूर्ण तीर्थ मौजूद होनेपर भी मूर्तिको न माननेवाले वर्गका इस दुनियामें अस्तित्व है, यह एक बड़ी ही आश्चर्यकी बात है।

★ मंत्रबल भी आध्यात्मिकबलका एक पूरक तत्त्व है, ऐसा इस सूत्रसे सिद्ध होता है।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १–'उवसग्गहर' शब्दका अर्थ बताइये।

उत्तर –उवसग्ग माने उपसर्गोंको विघ्नोंको और हर माने हरनेवाला, दूर करनेवाला। अर्थात् किसी भी विघ्नका नाश करनेवाला।

प्रश्न २–उवसग्गहर स्तोत्रकी रचना कैसे समयमें हुई? उसके रचयिता कौन है?

उत्तर –श्रीभद्रबाहुस्वामीजीके भाई वराहमिहिर उज्जयिनी नगरीमें एक विद्वान ब्राह्मण थे। वे मरनेके बाद व्यंतर (भूत, पिशाच, राक्षस आदिको व्यंतर कहते हैं।) हुए और उन्होंने द्वेषभावसे श्री जैन संघमें महामारी प्लेग आदि उपद्रव फैलाये। उस समय श्रीसंघकी विनंतिसे १४ पूर्वधर श्रीभद्रबाहुस्वामी महाराजने उपद्रवोंके निवारणार्थ इस स्तोत्रकी रचना की। स्तोत्रसे अभिमंत्रित जल छिड़कनेसे रोगका नाश हुआ और सर्वत्र शांति हो गई।

१८ श्री जय वीयराय (प्रार्थना) सूत्र

अन्वयार्थ

जय–जय हो वीयराय!–हे वीतराग! जगगुरु!–हे त्रिभुवनको सच्चा मार्ग बतानेवाले विश्वके गुरुदेव! होउ–

प्राप्त हो **मम**–मुझे **तुह**–आपके **पभावओ**–प्रभावसे **भयवं**–भगवान ! **भवनिव्वेओ**–इस असार ससारसे निर्वेद माने वैराग्य उदासीनता या अरुचि **मग्गाणुसारिया**–मार्गानुसारित इट्ठफल–मोक्षरूपी वाछित फलकी **सिद्धि**–प्राप्ति [१] **लोग विरुद्धच्चाओ**–लोकमें भी जो जो निंद्य काम कहे जाते हैं उनका त्याग **गुरुजणपूआ**–गुरु-महाराजोंकी एव माता पिता आदि गुरजनोंकी पूजा (विनयादिसे बहुमान करना) **परत्थ करण च**–और निरे स्वार्थको छोड परार्थ माने परोपकार भी करनेका महान् गुण **सुहगुरुजोगो**–उपकार करनेवाले, चारित्रके दाता और सदुपदेश करनेवाले पवित्र गुरु महाराजका सुयोग (प्राप्ति) **तव्वयण**–उनके वचनोंका (गुरु महाराज भी भगवानकी आज्ञा विरुद्ध नहीं कहते, अत उनका वचन भी प्रमाण है।) **सेवणा**–सपूर्णतया पालन करनेकी तैयारी **आभव**–जीऊगा तबतक, सारे जीवनभर **अखडा**–अखडित रीतिसे (एक भी आज्ञाका थोडा भी विरोध या भग किये बिना) [२] **वारिज्जइ**–निषेध किया गया है **जइ वि**–यद्यपि **नियाणबधण**–निदान करनेका (तप पूजा या अन्य किसी धार्मिक क्रियाओंके बदलेमें ऐहिक फल माँगनेकी इच्छा करना ही निदान [नियाण] है।) **तुह**–आपके **समये**–सिद्धान्तोंमें, आगमग्रथोंमें **तह वि**–तथापि, तो भी **मम**–मुझे **हुज्ज**–होवे, प्राप्त हो **सेवा**–आज्ञाका पालन पूजा भक्ति **भवे भवे**–इस जन्ममें और आगेके जन्मोंमें, हरेक जन्ममें **तुम्ह**–आपके **चलणाण**–चरण कमलोंकी (सेवा) [३]

दुक्खक्खओ–(मुझे दुःख अप्रिय है, इसलिये) दुःखोंका नाश, अंत या क्षय **कम्मक्खओ**–जो कर्म चार गतियोंमें भ्रमण कराते है, उनका सर्वथा नाश **समाहिमरण**–मरणके समय समाधि (जिससे दुर्गतिके दुःखोंका अनुभव नहीं करना पड़ता) **बोहिलाभो**–सम्यक्त्वकी प्राप्ति **सपज्जउ**–प्राप्त होवें **मह**–मुझे **एअ**–ये सब **तुह**–आपको **नाह**!–हे नाथ! **पणामकरणेण**–भक्तिभावसे किये हुए इस प्रणामसे [४] **सवमगल**–सभी मंगलोंमें **मांगल्य**–जो मंगल श्रेष्ठ है **सवकल्याण**–सभी कल्याणोंका **कारण**–मूल कारण है **प्रधान**–प्रधान श्रेष्ठ है **सवधर्माणा**–सभी धर्मोंमें **जैन**–श्रीजिनेश्वर (तीर्थंकर) प्रभुजीका **जयति**–विजयी है **शासन**–श्रीचतुर्विध संघ(साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका)रूपी शासन, सुदेव, सुगुरु और सुधर्मकी सुंदर ढंगसे सम्पन्न होनेवाली आराधना ही 'जैन शासन' है। [५].

सूत्रार्थ

जय वीयराय! जगगुरु!–हे वीतराग भगवान! समूचे विश्वका कल्याण करनेकी भावनासे उपदेश देकर संसार समुद्रसे पार लगानेवाले ओ त्रिलोकके गुरुदेव! आपकी जय हो।

होउ मम तुह पभावओ भयवं!–हे भगवान! (मैं आपकी शुद्ध भक्ति भावसे यह प्रार्थना करता हूँ, इसके फलस्वरूप) आपके अचिन्त्य प्रभावसे मुझे ये गुण शीघ्र ही प्राप्त होवें। माने आप मुझे ये गुण दीजियेगा।

भवनिव्वेओ–(१) जन्म मरण आदि दु खोंसे परिपूर्ण भयावने और असार ऐसे इस ससारसे वैराग्य (अरुचि)

मग्गाणुसारिया इट्ठफलसिद्धि–(२) मार्गानुसारिता–मोक्षकी ओर जानेका योग्यताके साधनभूत ३५ लक्षण (गुण) स्वरूप मार्गानुसारीपन (३) मोक्षप्राप्तिका मेरा जो उत्कट अभिलाषा है, उसकी सिद्धि (प्राप्ति) [१]

लोगविरुद्धच्चाओ–(४) इस लोकमें और परलोकमें (परलोकके लिये) भी जो जो कार्य निंद्य और निषिद्ध माने गये हों, उन सब लोकविरुद्ध कर्मोंका त्याग

गुरजणपूआ परत्थकरण च–(५) माता, पिता, विद्यागुरु आदि बडे, बूढे और आदरणीयोंका पूजा–सेवा भक्ति, आदर, विनय, बहुमान आदि (६) अपना स्वार्थ छोडकर भी दूसरे किसी योग्य व्यक्तिका कार्य करनेका परोपकारका गुण (स्वय दु ख उठाकर भी दु खीका मदद करना)

सुहगुरुजोगो–(७) शुभगुरुयोग–महाव्रतधारी, नि स्पृही, नि स्वार्थी, परमोपकारी और अत्यत पवित्र ऐसे गुरु महाराजोंका सुयोग

तव्वयणसेवणा आभवमखडा–(८) सपूर्ण जीवनपर्यंत अखडित रीतिसे (एकाध छोटी आज्ञाका भी उल्लघन या भग किये बिना) उन सुगुरुदेवके (जो जिनाज्ञाके विरुद्ध कभी भी उपदेश नहीं करते ऐसे परम पवित्र और नि स्पृह गुरु महाराजके) वचनोंका सेवा–पालन करनेका ... गुण मुझे दीजियेगा।) [२].

वारिज्जइ जइ वि नियाणबंधण–(९) यद्यपि निदान बाँधनेका (करनेका) निषेध किया गया है,

वीयराय! तुह समये–हे वीतराग भगवान! आपके आगमग्रंथोंमें (सिद्धान्तोंमें)

तह वि मम हुज्ज सेवा–तो भी (मैं आज इतनी प्रार्थना-याचना जरूर करूँगा। उसे यदि निदान कहा जाय तो भी इतना मैं विवश होकर माँग ही लेता हूँ कि) मुझे सेवा-भक्ति प्राप्त हो

भवे भवे तुम्ह चलणाण–हरेक जन्ममें आप जैसे वीतराग देवाधिदेवोंके चरण-कमलोंकी (मुझे सेवा-भक्ति प्राप्त हो।) [३]

दुक्खक्खओ कम्मक्खओ–(१०) दुःखोंका संपूर्ण नाश हो (११) कर्मोंका सर्वथा नाश हो

समाहिमरणं च बोहिलाभो अ–(१२) मरणके समय संसारकी नश्वर वस्तुओंपर ममत्व मोह न रहकर मन समता-समभावमें रहे, वैसा समाधि मरण (जिसे पंडित मरण भी कहते हैं, वह) और (१३) सम्यक्त्व रत्नका लाभ (और वह रत्न सदैव निर्मल रहे वैसी अनुकूल परिस्थिति भी)

संपज्जउ मह एअं–ये सब गुण मुझे प्राप्त हों

तुह नाह! पणामकरणेणं–हे नाथ!

प्रणाम कर रहा हूँ,

सब गुण दीजियेगा

सर्वमंगलमांगल्य–सभी मंगलोंमें जो मंगल-श्रेष्ठ है, (जो मंगलोंका भी मंगल है),

सर्वकल्याणकारण–दुनियामें कल्याणमयी और सुख पहुँचाने वाली जो जो वस्तुएँ है, उन सब कल्याणकारी वस्तुओंका जो प्रधान और प्रथम कारण (मूल स्रोत) है,

प्रधान सर्वधर्माणां–और जो (अहिंसा, संयम और तपस्वरूप होनेसे) सभी धर्मोंमें प्रधान–श्रेष्ठ है, ऐसा

जैनं जयति शासनं–श्री जिनेश्वर देवोंद्वारा स्थापित और आगम, चैत्य तथा (साधु–साध्वी–श्रावक–श्राविका–स्वरूप) श्रीचतुर्विध संघरूपी जैन शासन सर्वत्र विजयशाली है। [५]

भावार्थ

देवाधिदेव वीतराग भगवानके पास जो अनेक प्रकारकी याचनाएँ करनी होती है, उनकी शिक्षा इस प्रार्थना सूत्रमें दी गई है। प्रभुजीकी प्रतिमाको भाव भक्तिसे जो नमस्कार किया जाता है उसका क्या क्या फल मिल सकता है (मिलना चाहिये)––यह भी इस सूत्रमें बतलाया गया है। चैत्य वंदन और स्तवनके बाद दोनों हाथ ललाटके पास जोड़ कर यह प्रार्थना सूत्र बोलनेकी विधि है। चैत्य वंदनमें जिन स्तुति की जाती है, स्तवनमें देवाधिदेव श्रीजिनेश्वर भगवंतोके आदर्श गुणोंका गान होता है और प्रार्थना (जय वीयराय सूत्र)में भक्तिके फलस्वरूप याचनाएँ की जाती है। इस सूत्रका दूसरा नाम 'प्रणिधान सूत्र' भी है।

परिमल

★ अन्न वस्त्र घर औषध व्यावहारिक अध्ययन धन आदि देकर किसीकी सहायता करना 'द्रव्य उपकार' है और मोक्षका सत्यमार्ग बतलाकर उसका उपदेश देना यह 'भाव उपकार' है। द्रव्यसे भाव अनंतगुना अधिक लाभ देनेवाला है।

★ संसारी आदमी संसारियोंके पास क्या क्या माँगता है यह तो इस दुनियामें नित्य प्रतिदिन देखने जानने (समझने) और सुनने मिलता ही है पर वीतरागियोंके पास क्या क्या माँगना चाहिये यह इस जय वीयराय सूत्रसे हम जान सकते हैं।

★ शासन माने आत्माकी उन्नतिके लिये स्थापित एक महान सरकार या साम्राज्य ही समझियेगा। अन्य शासन साम्राज्य थोड़े ही दिनों तक रहते हैं, जब कि आत्मशासन अनादि अनंत है। अकेले भगवान श्रीमहावीर देव ही का शासन २१००० वर्षों तक रहनेवाला है।

★ वीतराग माने कौन? वे क्या देते हैं? उनके पास क्या क्या माँगना चाहिये? मोक्ष माने क्या? वीतराग अवस्था यह क्या है? — इन सब बातोंको समझनेका मौका हमें इस सूत्रसे प्राप्त होता है।

★ देव-गुरुकी सेवा माता पिता आदि गुरुजनोंका बहुमान परोपकार करनेकी वृत्ति तारक और श्रेष्ठ गुरु महाराजोंका सुयोग जिन वचन और गुरुवचन पालन करनेकी भावना आदि सद्गुण जो भवी जीवोंमें देखे जाते हैं वे सब चौंतीस अतिशय सम्पन्न श्री तीर्थंकर भगवंतोंकी भक्तिके प्रभावसे ही होते हैं —ऐसा इस सूत्रसे साफ साफ मालूम होता है।

★ पापका स्वीकार करना सच्चे दिलसे पापका पश्चात्ताप करना सभी जीवोंसे क्षमापना देना, अपने और दूसरोंके धार्मिक शुभ कर्मोंकी अनुमोदना करना अरिहंत सिद्ध साधु और धर्म—इन चारोंका शरण स्वीकारना प्रत्याख्यान करना आदि शुभ भावनाओंको समाधि कहा जाता है। समाधि सद्गतिकी ओर ले जानेवाली होनेसे उसकी याचना करना उचित-योग्य ही है।

★ क्षुद्र आत्मा क्षुद्र याचना ही करता है और वह भी सामान्य (छोटे) व्यक्तिके पास, पर बड़े (गुणी लोग) महान और ज्ञानी भगवंतोंके पास बड़ी याचनाएँ ही करते हैं। ये बड़ी-बड़ी याचनाएँ इच्छाएँ कभी होती हैं—इस बातकी हमें इस सूत्रसे शिक्षा मिलती है।

★ लोकोत्तर और पारमार्थिक परोपकार करना एवं शुद्ध सत्यमार्गदर्शक उपदेश करना ही उन्नति करानेवाले गुरुका वास्तविक लक्षण होनेसे श्रीतीर्थंकरदेवोंको हम परमगुरु कह सकते हैं और वह योग्य भी है।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १—'जय वीयराय सूत्र' कब बोला जाता है? उसका संक्षेपमें अर्थ बताइये।

उत्तर —चैत्यवंदनमें स्तवन बोलनेके बाद यह सूत्र बोला जाता है। इस सूत्रमें जन्म जन्मान्तरमें श्रीतीर्थंकर प्रभुजीकी सेवा भक्ति और अनेकानेक याचनाएँ की गई हैं।

प्रश्न २—'जय वीयराय सूत्र' बोलते समय किस प्रकार बैठना चाहिये?

उत्तर —चैत्यवंदन करते समय बाँयाँ घुटना ऊँचा रक्खा जाता है। जय वीयराय बोलते समय मुक्ताशुक्ति मुद्रामें (दोनों हाथ कमलके डोंडेके समान जोडकर ललाटके पास रखना और दोनों कुहनियोंको कमलनालके सदृश सटाकर सरल रखना—यह हुई मुक्ताशुक्ति मुद्रा) दोनों हाथ रखने चाहिये। आधा सूत्र बोलनेके बाद 'आभवमखंडा' बोलते समय हाथ नासिकातक नीचे लिये जाते हैं।

प्रश्न ३—निदान माने क्या? निदान करनेकी मनाही क्यों की गई है?

उत्तर —की हुई धार्मिक क्रियाओंके बदलेमें भगवानके पास कुछ ऐहिक सुखप्राप्तिकी इच्छा करना ही निदान या नियाण है। शास्त्रोंमें निदान करनेकी मनाही इस लिये

की गई है कि उसका मतलब होता है–ऐसी मोक्षप्र
करानेवाली और उच्च धार्मिक क्रियाओंको बहु
क्षुद्र ऐसे ऐहिक सुखोंके लिये बेचना। 'जय वीयर
सूत्रमें श्रीजिनेश्वर भगवंतोंकी जन्म-जन्मान्तरमें
भक्ति आदि जो याचनाएँ की गई हैं, उनमें धा
क्रियाओंको बेचनेका भावना नहीं है, अपितु
क्रियाओंको विकसित करनेका ही शुभ आशय है

प्रश्न ४–भवर्नि उदासीनता और मार्गानुसारीपन माने क्य

उत्तर –(१) भवका उदासीनता (भवनिर्वेद)—संसारकी
वस्तुओंपरसे मोह आसक्ति कम होना (२) मार्ग
सारिता—(अ) सामान्य मार्गानुसारीपन–धर्मके म
जानेकी योग्यता प्राप्त करनेके आचारके ३५
नियमोंका पालन करना (आ) विशिष्ट मार्गानुसारीप
सम्यग्दर्शनपूर्वक विरतिके आचारोंका पालन करना।

प्रश्न ५–समाधि मरणकी याचना करनेकी क्या जरूरत है

उत्तर –यहाँ मरणकी नहीं, किन्तु मरण समय समा
अवस्थाकी याचना की गई है। जो पैदा होता है,
मरता ही है, परंतु मरण समयके जीवके विच
अनुसार आगामी (भविष्य)के जन्मकी योनिका नि
होनेके कारण यदि मरणासन्न जीव बुरे चिन्तनमें
तो वह किसी दुर्गतिके आयुष्यका बंध करता है।
मरण-समय समाधि समताकी अवस्था रहे तो कि

सुगतिकी प्राप्ति होती है और उत्तरोत्तर उत्तम गतिकी प्राप्तिसे मुक्ति निकट आता है—यही कारण है, यही आत्मोन्नतिका उत्कट अभिलाषा है कि जिससे समाधि-मरणकी याचना का गई है।



१९ श्री अरिहंतचेइयाण (चत्यस्तव) सूत्र

अन्वयार्थ

अरिहंतचेइयाण–(सवज्ञ जिनेश्वर देवोंका प्रतिमाएं जहाँ स्थापित हुइ हैं, ऐसे जिनालय भा पूज्य होनेसे उनके लिये तथा) श्रीअरिहंत भगवंतोंकी प्रतिमाओंके सम्मुख **करेमि**–मैं करता हूँ **काउस्सग्ग**–कायोत्सग (शरीरपरकी ममताका त्याग कर समतापूवक धम ध्यानमें रहूँगा।) [१] **वंदणवत्तियाए**–वंदनका भावनासे **पूअणवत्तियाए**–पूजा, सेवा-भक्तिकी भावनासे **सक्कारवत्तियाए**–सत्कार करनेकी भावनासे **सम्माणवत्तियाए**–स्तवन कीर्तन आदिसे हृदयद्वारा (सच्चे दिलसे, हार्दिक) सम्मान करनेका भावनासे **बोहिलाभवत्तियाए**–शुद्ध देव, गुरु और धमपरकी श्रद्धास्वरूप बोधिबीज (सम्यक्त्व) की प्राप्तिकी भावनासे **निरुवसग्गवत्तियाए**–संकटों और विघ्नोंका नाश कर किसी उपसगके बिना आराधना (सेवा भक्ति) करनेकी भावनासे या जहाँ उपसर्गोंका उपद्रवोंका नाम निशान नहीं है, ऐसा मुक्ति प्राप्त करनेकी भावनासे (भगवानकी मूर्तिके सम्मुख

में काउस्सग्ग करता हूँ।) [२] सद्धाए-(प्रतिक्षण वृद्धिगत होनेवाली) श्रद्धासे मेहाए-(अधिकाअधिक विकसित होनेवाली मेधा-निर्मल बुद्धिसे धिईए-(अधिकाअधिक बढनेवाला) धृति (धैर्य)-स्थिर चिन्तनयुक्त या कुशलता एवं सहनशीलता-पूर्ण धैर्यसे धारणाए-(प्रतिक्षण बढनेवाला) धारणा-निर्मल स्मृतिसे अणुप्पेहाए-(अरिहंत भगवंतोंके स्मरणसे बढनेवाले) तात्त्विक चिन्तनसे वड्ढमाणीए-बढनेवाला, वृद्धिगत होनेवाला (ऊपर कहा हुइ पाँचों भावनाओंसे युक्त होकर) ठामि-मैं करता हूं काउस्सग्ग-काउस्सग्ग कायोत्सर्ग ('निरुवसग्गवत्तियाए' तक 'करेमि काउस्सग्ग'का और 'सद्धाए'से आगे 'ठामि काउस्सग्ग'का संबंध है।) [३]

सूत्रार्थ

अरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं-श्री अरिहंत भगवंतोंके चैत्य प्रतिमाओंके सम्मुख (वंदन, पूजन, सत्कार आदि क्रियाओंके फलमें काउस्सग्गक्रियाके समय भी पूर्ण आदरभाव होनेसे उन क्रियाओंसे प्राप्त होनेवाले लाभ-फल प्राप्त करनेके लिये) मैं शुभ ध्यानमें रहकर काउस्सग्ग-कायोत्सर्ग करता हूँ। [१]

वंदणवत्तियाए पूअणवत्तियाए-शुद्ध (निर्मल) अन्त करणसे श्रीतीर्थंकर भगवंतोंके चैत्योंको और उनका प्रतिमाओंको वंदन करनेसे जो फल प्राप्त होता है, वह फल प्राप्त होनेकी भावनासे, (इसी प्रकार पूजा, सत्कार आदिमें स्पष्टार्थ समझना चाहिये।) प्रभुजाका पूजाकी भावनासे,

सक्कारवत्तियाए सम्माणवत्तियाए–आभूषण, वस्त्र आदिसे सत्कार और स्तवन, कार्तन आदिसे सन्मान–(करनेसे जो फल प्राप्त होता है, वह फल इस काउस्सग्गसे मिलने)–का भावनासे,

बोहिलाभवत्तियाए निरुवसग्गवत्तियाए–सम्यक्त्वका प्राप्ति सम्यक्त्वमें स्थिर होनेकी भावनासे एव बिना किसी कष्ट या दु खके जिनधर्मकी प्राप्ति होनेका भावनासे या बिना किसी उपसर्ग-उपद्रवके धर्माराधन हो, इस लिये अथवा उपद्रवरहित एव संपूर्ण सुखोंसे परिपूर्ण मोक्ष स्थानकी प्राप्तिकी भावनासे (म काउस्सग्ग करता हूँ।) [२]

सद्धाए मेहाए धिईए–(जिन प्रकारोंसे काउस्सग्ग सफल–यथार्थ फल देनेवाला होता है, उन प्रकारोंको–करणोंको बताया जाता है।) प्रतिक्षण वृद्धिगत होनेवाली श्रद्धासे, निर्मल बुद्धिसे, धृति धैर्यसे (माने चित्तको डाँवाडोल चचल किये बिना, स्थिरचित्तसे),

धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए–अधिकाधिक बढनेवाली अरिहत भगवंतोंके गुणोंकी धारणा निमल स्मृतिसे और बारबार उनके गुणोंके गूढ तत्त्वचिंतनसे ('वड्ढमाणीए' माने प्रतिक्षण वृद्धिगत होनेवाली या बढनेवाला भावनासे। इसका सबध 'सद्धाए' आदि पाँचों पदोंके साथ है। अर्थात् 'वड्ढमाणीए' यह 'सद्धाए' आदि पाँचोंका विशेषण है।)

ठामि काउस्सग्ग–मैं कायोत्सग करता हूँ, काउस्सग्ग ध्यानमें स्थिर होता हूँ। [३]

भावार्थ

इस सूत्रमें अरिहंत भगवतोंकी प्रतिमाओंको वंदन, पूजन, सत्कार और सम्मान करनेका मोक्ष मिलता है। वंदन आदि करनेसे बोधिबीज और मोक्षकी प्राप्ति होती है, इसी लिये मैं प्रतिक्षण अधिकाधिक वर्द्धमान होनेवाली श्रद्धा, मेधा, बुद्धि, धृति, धारणा और विचारणा(तत्त्वचिंतन) —इन पांचों भावनाओंसे युक्त होकर काउस्सग्ग करता हूँ। (या) इन पांचों भावनाओंकी वृद्धिके लिये मैं अपने शरीरको एक ही स्थानपर स्थिर कर मौन और ध्यानपूर्वक इस 'चैत्यस्तव' सूत्रद्वारा काउस्सग्ग ध्यानमें स्थिर होता हूं। यह गहरा भाव इस सूत्रमें रहा हुआ है।

परिमल

★ मुकुट अलंकार आदिसे जिनमूर्तिका सत्कार करना यह बात भी शास्त्रसिद्ध ही है। इसके प्रमाणमें इस सूत्रका निर्देश किया जा सकता है।

★ समवसरणमें देशना देनेवाले भगवान 'भाव तीर्थंकर' हैं। सम वसरणके समय देशना देनेके लिये भगवान पूर्वकी ओर सम्मुख बैठते हैं, पर शेष तीनों दिशाओंमें तो देवतागण प्रभुजीकी (प्रभुकी जैसी ही) तीन मूर्तियाँ बनाकर स्थापित करते हैं। मूर्तिको न माननेवाले भी इन मूर्तियोंको तो पूज्य ही मानते हैं। तब तो मंदिरमें स्थापित अरिहंत भगवानकी प्रतिमाओंको न माननेवाले (उनमें पूज्यभाव न रखनेवाले) सत्यका द्रोह या असदाग्रह ही करते हैं ऐसा कहा जायगा।

★ मंदिरमें जो प्रभुजीकी प्रतिमाएँ होती हैं वे स्थापना जिन हैं। इन स्थापित जिनप्रतिमाओंकी पूजा, सत्कार आदि सेवा भक्ति इस सूत्रसे सम्पन्न होती है, अतः इससे मूर्ति और मूर्तिपूजा सिद्ध होती है।

★ प्रभुमूर्तिको वंदन, पूजन, सत्कार आदि करनेसे जो लाभ प्राप्त होता है वह लाभ प्राप्त करनेके लिये श्रद्धा, बुद्धि धैर्य आदिसे युक्त होकर इस सूत्रद्वारा काउस्सग्ग किया जाता है। और यह काउस्सग्ग सफल होनेसे प्रभुजीके वंदन पूजन आदिपरका आदर भाव दृढ हो जाता है।

★ हरेक वस्तु १ नाम २ स्थापना ३ द्रव्य और ४ भाव —इन चार निक्षेपाओंसे सिद्ध होती (पूर्णतया समझी जाती) है। देहरावासी और स्थानकवासी, इन दोनोंको श्री अनुयोगद्वार आदि शास्त्र मान्य सम्मत ही है और स्थापना निक्षेपासे सिद्ध होनेवाली जिनमूर्ति इन शास्त्रोंके अनुसार ही है अत एव जिनपूजा अविच्छिन्नरूपसे प्रचलित ही है।

★ इस सूत्रसे हमें उपदेशक नीचे लिखे हुए अमृत-कण प्राप्त होते हैं—(१) श्रीजिनेश्वर देवोंकी मूर्तिके दर्शनसे (प्राप्त हुआ) सम्यक्त्वरत्न निर्मल होता है रह सकता है। (२) मूर्तिके सन्मुख काउस्सग्ग किया जा सकता है। (३) हरेक आत्मार्थी—(आत्माकी उन्नति चाहनेवाले)–को मूर्तिपूजा करनी ही चाहिये। (४) स्थापित मूर्तिको वंदन आदि करनेसे कर्मोंका क्षय होता है। (५) पाषाणकी बनाई हुई मूर्तिमें प्राणप्रतिष्ठा की जाती है। (जैसे कि अपने शरीरमें प्राण होते हैं) तभी वह पूज्य और प्राणवान (= प्रभावशाली) बनती है और इसी लिये 'जिनप्रतिमा जिनसारिखी' कहा जाता है।

★ श्रद्धा आदि भक्ति भाव दर्शक शब्दोंसे यह बात स्पष्ट होती है कि मैं यह काउस्सग्ग बलात्कारसे लाभ हानिका सोच विचार किये बिना, चंचलतासे या लाभकी मिथ्या आशाओंसे नहीं करता, पर श्रद्धा-बुद्धि आदिपूर्वक श्रीवीतराग भगवंतके गुणोंको समझकर (उनके दिव्य गुणोंको देखकर मेरे मनको बड़ा विश्राम मिलता है, इस लिये) उनके स्मरण चिंतन पूर्वक मैं यह काउस्सग्ग कर रहा हूँ।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १–'अरिहंतचेइयाणं' सूत्रका दूसरा नाम क्या है ? यह कब बोला जाता है ?

उत्तर –इस सूत्रका दूसरा नाम 'चैतस्तव' है। चैत्यवदनमें 'जय वीयराय' सूत्र बोलनेके बाद और काउस्सग्गके पहले यह सूत्र बोला जाता है।

प्रश्न २–चैत्यवंदनमें काउस्सग्गका प्रमाण कितना होता है।

उत्तर –चैत्यवंदनका काउस्सग्ग एक नवकारका ही होता है।

प्रश्न ३–काउस्सग्ग पूरा करते समय क्या बोला जाता है ?

उत्तर –काउस्सग्गके अन्तमें अरिहंत भगवंतोंको नमस्कार करनेके लिये 'नमो अरिहंताणं' कहकर 'नमोऽर्हत्' और थोय (स्तुति) बोलना चाहिये। चैत्यवंदनके समय यह 'अरिहंतचेइयाणं' सूत्र खडे होकर बोला जाता है।

२० श्री कल्लाणकंद (स्तुति) सूत्र

अन्वयार्थ

कल्लाणकंद-समस्त कल्याणोंके कंद समान (अर्थात् मनुष्योंको, जीवोंको जो कल्याण इष्ट है, उस कल्याणरूपी वृक्षके भगवान ही कंद मूल हैं।) पढमं-प्रथम, पहले जिणिंद-(जिन माने केवली, उनमें इन्द्रके समान शोभायमान) श्रीऋषभदेव जिनेन्द्रको संतिं-सोलहवें श्रीशांतिनाथ भगवानको तओ-तत, उनके बाद नेमिजिणं-

बाइसवें श्रीनेमिनाथ जिनेश्वरको, **मुणिंद**–प्रतिज्ञाधारी मुनियोंमें इन्द्रसमान शोभनेवाले **पास**–प्रगट प्रभावी **श्रीपार्श्वनाथ** भगवान को **पयास**–तीनों भुवनोंमें ज्ञान प्रकाश फैलानेवाले **सुगुणिक्क ठाण**–उत्तमोत्तम गुणोंके ही स्थानरूप (आश्रयस्थानस्वरूप) या अनंत गुणोंके भंडारमें प्रगट प्रभावी ऐसे (तेईसवें भगवान श्री पार्श्वनाथ स्वामीजीको) **भत्तीइ**–भक्तिसे **वंदे**–मैं वंदन करता हूँ **सिरिवद्धमाण**–चौवीसवें श्रीवद्धमानस्वामीको [१] **अपार**–जिसका पार (दूसरा किनारा या अंत) ही नहीं है या जिसके पार होना अत्यंत ही कठिण है या अनंत कठिनाइयोंका सामना कर कोई एकाध व्यक्ति ही जिसके पार हो सकता है, ऐसे **संसारसमुद्द**–महान संसारसमुद्रके **पार**–किनारेको, दूसरे तटको **पत्ता**–प्राप्त, गये हुए, पहुँचे हुए (सब जिनेश्वर भगवंत) **सिव**–मोक्ष **दिंतु**–देवें **सुइक्कसार**–(श्रुति = शास्त्र अथवा शुचि = पवित्र) सब पवित्र वस्तुओंमें या समग्र शास्त्रोंमें अद्वितीय एकमात्र सारभूत (मोक्ष) **सव्वे**–ओ सब **जिणिंदा**!–जिनेश्वर भगवान! **सुर**–देवोंके **विंद्र**–वृंद समूहोंसे भी **वंदा**–जिनका पूजन वंदन हुआ है, ऐसे; जो देवोंके भी पूज्य वंद्य है, ऐसे **कल्लाण**–कल्याण रूपी **वल्लीण**–लताके **विसालकंदा**–विशाल मूलसमान [२] **निव्वाणमग्गे**–निर्वाण मोक्षके (मोक्षका मार्ग तीर्थंकर भगवंतोंके विना कोई बता ही नहीं सकता। जिनेश्वर देवोंके बताये हुए मोक्षके) मार्गमें, रास्तेमें **वर**–(जो) श्रेष्ठ **जाणकप्प**–यान (नौका, रथ या अन्य किसी सवारीके) समान है **पणासिय**–

जिसने सपूर्णतया नाश किया है **असेस**–समस्त, समग्र **कुवाइ**–कुवादियोंके–एकान्तवादी, हठाग्रही, दुराग्रही, मिथ्यावादी, कदाग्रही–इन सबके **दप्प**–दप गवका **मय**–मत सिद्धान्तको **जिणाण**–वीतरागी श्रीजिनेश्वर भगवतोंके **सरण**–आश्रय लेने योग्य, आधारभूत, शरणरूप **बुहाण**–तत्त्व जाननेवालोंके पडितोंके **नमामि**–म नमस्कार करता हूँ **निच्च**–नित्य, सदैव **तिजगप्पहाण**–तीनों लोकमें प्रधान श्रेष्ठ, ऐसे [३] **कुद**–मोगरेका फूल, बेला पुष्प **इदु**–चद्रमा **गोक्खीर**–गायका दूध **तुसार**–तुषार, हिम, बर्फ (इन सबके समान श्वेत) **वन्ना**–(शरीरके) वर्णवाली **सरोज**–सरोवरमें पैदा हुआ कमल **हत्था**–जिसके हाथमें है, ऐसी **कमले**–कमलपर **निसन्ना**–बैठी हुई (कमलासनवाली) **वाएसिरी**–वागीश्वरी, सरस्वती देवी वाग्वादिनी (वाग् माने वाणाका और ईश्वरी माने मालिक स्वामिनी शारदा) **पुत्थय**–पुस्तकोंका **वग्ग**–वर्ग, समूह **हत्था**–जिसके (दूसरे) हाथमें है, ऐसी **सुहाय**–सुख (देने)के लिये, (सुख देनेवाली होवे) **सा**–वह (सरस्वती देवी) **अम्ह**–हमें, हमको **सया**–सदा, नित्य, निरतर **पसत्था**–प्रशस्त, श्रेष्ठ, उत्तम [४]

सूत्रार्थ

कल्लाणकद पढम जिणिंद–सब कल्याणोंके कद मूलस्वरूप (जहाँसे भक्त वाके कल्याणरूपी वृक्षका पोषण सिंचन होता है, ऐसे) प्रथम जिनेन्द्र श्रीऋषभदेव भगवानको

र्शांति तओ नेमिजिण मुणिंद–बादमें श्रीशान्तिनाथ प्रभुजीको, (जिस प्रकार देवसभामें देवेन्द्र सोहते है, उसी प्रकार) मुनियोंमें शोभनेवाले श्रीनमिनाथस्वामीको,

पास पयास सुगुणिक्क ठाण–तीनों भुवनोंमें ज्ञान प्रकाश फैलाने वाले अर्थात् ज्ञानप्रकाशयुक्त सर्व सद्गुणोंका एकमात्र (मुख्य) आश्रयस्थानरूप प्रगटप्रभावी पुरिसादानीय **श्रीपार्श्वनाथ** भगवानको

त्ताइ वंदे सिरिवद्धमाण–और चरमतीर्थपति श्रीवर्द्धमानस्वामी (महावीरस्वामी) को मै भक्ति भावसे वंदन करता हूँ। [२]

पारससारसमुद्दपार–जिस भव भ्रमणरूप संसारका सामान्य मनुष्य पार या अंत नहीं पा सकते, ऐसे अथवा जिस संसारसागरको पार करना (मुक्तिरूपी दूसरा किनारा प्राप्त करना) अत्यंत ही कठिन है, ऐसे भी महासमुद्रके पारको

ता सिवं दितु सुइक्कसार–प्राप्त हुए (अनंत शक्तिसम्पन्न ओ जिनप्रभुओ!) सब पवित्र वस्तुओंमें या शास्त्रोंमें एकमात्र (संपूर्णतया) सारभूत ऐसा मोक्ष (हमें) दीजियेगा।

ध्वे जिणिंदा! सुरविंदवंदा–देवगणसे भी वंदित [illegible] जिनेन्द्रदेव! (हम मोक्ष दीजियेगा।)

[illegible]णवल्लीणविसालकंदा–ओ भक्त[illegible] पसरनेवाली लताके विशाल मूल या [illegible] समान (जैसेकि लता वृक्ष या [illegible] है, वैसे) हैं, ऐसे (ओ भगवान! [illegible]।) [३]

निव्वाणमग्गे वरजाणकप्प–(इस गाथामें श्रीवीतरागकथित सम्यग्ज्ञानके प्रभावका वर्णन किया गया है।) सम्यग् दर्शन, ज्ञान और चारित्रमय मुक्तिके पथमें चलनेके लिये जो उत्तम सवारी (रथ) समान है, ऐसे (जहाँ कि रास्ता ही नहीं है, ऐसे जगहमें न चल सकनेवाली बाइसिकिल, इक्का, छकडा, ताँगा, रेलगाडी, मोटर, रथ आदि सवारियाँ पत्थर, अलकतरा, काँक्रीट आदिसे बनाये हुए मार्गपर तो बहुत ही आसानीसे चल सकती हैं, उसी प्रकार जिनसिद्धान्तरूपी रथमें बैठनेवाला [श्रीतीर्थंकर भगवतोंद्वारा प्ररूपित] मोक्ष मार्गमें तेजीसे जा सकता है। अथवा जैसे समुद्रको पार करनेके लिये नौका या स्टीमर होती है, वैसे ही मोक्ष प्राप्तिके लिये प्रभुजीका यह ज्ञान श्रेष्ठ साधनभूत है। 'वरजाण कप्प' यह 'मय'का विशेषण है।)

पणासियासेसकुवाइदप्प–जिस (स्याद्वादमत)ने समग्र कुवादियोंके घमडको चकनाचूर या पूरा नाश किया है, ऐसे

मयं जिणाणं सरणं बुहाणं–मध्यस्थवृत्ति तटस्थदृष्टि रखनेवाले विद्वान पंडितोंके लिये भी जो शरण आश्रयस्थान है, ऐसे जिनेश्वर भगवतोंके सिद्धान्तको (मतको) या आगमग्रंथोंको (अर्थात् अनेकान्तवादको)

नमामि निच्चं तिजगप्पहाणं–सारी दुनियामें श्रेष्ठ ऐसे (इस आगमज्ञानको) मैं सदैव भक्तिभावसे नमस्कार करता हूँ। [२]

कुंदिंदुगोक्खीरतुसारवन्ना—बेला (मोगरा), चन्द्रमा, गायका दूध और बर्फ—इन सबके जैसे उज्ज्वल—श्वेत वर्णवाली

सरोजहत्था कमले निसन्ना—जिसने एक हाथमें कमल धारण किया है और जो कमलपर बैठी हुई है (या कमल ही जिसका आसन है), ऐसी

वाएसिरी पुत्थयवग्गहत्था—और जिसने (अपने दूसरे) हाथमें पुस्तकोंका समूह रक्खा है, ऐसी वागीश्वरी देवी (जिसे शारदा और सरस्वती भी कहते हैं। वाग् माने वाणीका और ईश्वरी माने स्वामिनी—अधिष्ठात्री देवी—सरस्वतीजी।)

सुहाय सा अम्ह सया पसत्था—वह उत्तम और श्रेष्ठ वागादिनी महादेवी हमें सदैव सुख देनेवाली होवे। माने हमारी श्रमानुसारिणी वाणीका विलासपूर्वक और कुशलतापूर्ण विस्तार कर, हमारे दुःख विघ्नोंको दूर कर हमें सुख समृद्धि देवे। [४]

भावार्थ

इन चार गाथाओंको स्तुति (थोय) कहते हैं। यह स्तुति ... छन्दमें है। इसमें ऐसा क्रम होता है कि पहली गाथामें इष्ट ... भगवानकी स्तुति (स्तवन) दूसरी गाथामें सब जिनेश्वरोंकी स्तुति, तीसरी गाथामें ज्ञानकी स्तुति (माने ज्ञानकी ... और चौथी) गाथामें शासनदेवकी (अर्थात शासन रक्षक देवदेवीकी) स्तुति रहती है। इन चार गाथाओंसे (स्तुतियोंसे) ... किया जाता है। पक्खी चउमासी या सांवत्सरिक प्रतिक्रमणके ... (पहलेके) दिन जो मांगलिक प्रतिक्रमण किया जाता है उसमें यही स्तुति (थोय) बोलनेकी परंपरागत पद्धति है।

परिमल

★ अनेकान्तवादकी युक्ति प्रयुक्तियाँ इतनी तो मर्मग्राही हैं कि उनके सम्मुख अन्य मतवादियोंकी प्रबल युक्तियाँ (तरकीबें) टिक ही नहीं सकतीं।

★ जिस प्रकार बाम्बे आगरा रोड आज सारे भारतमें प्रसिद्ध है, उसी प्रकार आर्यसंस्कृतिमय इस भरतभूमिमें मोक्षमार्ग प्रख्यात ही है। रोड अथवा रास्ता पथ या मार्ग निष्कंटक होना ही चाहिये। इस मोक्षमार्गमें सांसारिक मोह व लालसाएं कंटकसमान (विरोधीतत्त्व) हैं। यह सब हम इस सूत्रकी तीसरी गाथासे जान सकते हैं।

★ जो भारतमें यह मोक्षमार्ग न होता तो इस हिंसक दुनियाके सभी रिवाज यहाँ (भारतमें) भी हवाके झोंकोंकी तरह शीघ्र ही अपना अड्डा जमा देते। इस भारतभूमिमें जो अहिंसाके सुरीले सुर सुने जाते हैं वे आर्य संस्कारोंके ही प्रतापसे। यह अहिंसाका मार्ग कभी भी अशुद्ध नहीं ही हो सकता इसी लिये पंडितोंको और विद्वानोंको सर्वजिनेश्वर भगवंतोंका वचन मान्य ही करना पड़ता है और उन्हें वह प्रिय भी लगता है—यह गूढार्थ इस सूत्रकी तीसरी गाथामेंसे निकल सकता है।

★ चौथी गाथामें शासनसंरक्षक देव या देवीको नमस्कार नहीं, किंतु प्रार्थना ही की जाती है। धर्माराधनके समय कोई विघ्न आ जाय तो उसे वह देव या देवी दूर कर हमें सहायता पहुँचावें यही इस प्रार्थनाका मुख्य हेतु है।

★ समग्र शास्त्रोंका तत्त्व (सार) देखा जाय तो सभी शास्त्रोंमेंसे मोक्ष ही सार प्राप्त होगा। मोक्षके लिये ही सब ज्ञान और सभी क्रियाएं हैं। जिस प्रकार गुलाबका सत्त्व (या तत्त्व या सार) गुलाबके अत्तरमें होता है, गन्नेका या शक्करका सत्त्व सैकरीनमें होता है और गुडुच (गुडूची)का सत्त्व गिलोयसत्त्वमें होता है उसी प्रकार शास्त्रोंका सत्त्व सार मोक्ष ही है।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १–'कल्लाणकंद' सूत्रमें किन किन तीर्थंकरोंकी स्तुति की गई है ?

उत्तर –इस सूत्रकी पहली गाथामें (१) श्रीऋषभदेवस्वामी (२) श्रीशांतिनाथजी (३) श्रीनेमिनाथजी (४) श्री पार्श्वनाथ प्रभुजी और (५) श्रीमहावीरस्वामी–इन पाँच तीर्थंकर भगवंतोंकी स्तुति की गई है।

प्रश्न २–थोय माने क्या ? इसमें कितनी गाथाएँ होती हैं ?

उत्तर –थोय माने स्तुति, प्रार्थना। चार गाथाओंसे एक थोय बनता है अर्थात् उक्तक्रमानुसार चार गाथाएँ एकत्रित होनेपर उन्हें थोय कहा जाता है। देववंदनमें भगवानके सम्मुख थोय बोली जाती है।

प्रश्न ३–थोयकी चारों गाथाओंका संबंध बताइये।

उत्तर –जिनके दर्शनमात्रसे ही भावनाका स्रोत बहने लगता है, ऐसे (अपने इष्ट) प्रभुजीकी स्तुति पहली गाथामें, बादमें सब तीर्थंकर गुणोंसे समान ही हैं, ऐसा बतानेके लिये सब तीर्थंकरोंकी स्तुति दूसरी गाथामें, अनन्तर उन वीतरागी भगवंतोंने बताये हुए सिद्धान्त ही मार्गदर्शक होनेसे ज्ञानकी स्तुतिका क्रम तीसरी गाथामें और अन्तमें उस श्रुतज्ञानकी दात्री और अधिष्ठात्री श्रुतदेवीकी प्रार्थना अन्तिम चौथी गाथामें—इस प्रकार चारों गाथाओंका शृंखलाके समान संबंध इस स्तुतिमें साफ साफ मालूम होता है।

२१ श्री संसारदावानल स्तुति

(भगवान श्रीमहावीरस्वामीकी स्तुति)

अन्वयार्थ

ससार–जहाँ जन्म मरणका चक्र है, ऐसे इस संसाररूपी **दावानल**–दावाग्निकी (अग्निका जाज्वल्यमान और परम-परम काष्ठापन्न स्वरूप माने दावाग्नि या दावानल) **दाह**–ज्वालासे जलनेपर होनेवाला जलनको (शान्त करनेमें) **नीर**–जो पानीके समान है, ऐसे (श्रीवीरप्रभुजीको) **समोह**–महामोहरूपी **धूली**–धूलको **हरणे**–दूर हटानेमें, उडानेमें **समीर**–जो तेज वायुके समान है, ऐसे **माया**–और माया माने कपट या छल प्रपंचरूपी **रसा**–पृथ्वीको **दारण**–खोदनेमें (या जोतकर सरल निष्प्रपंच बनानेमें) **सार**–जो तीक्ष्ण अर्थात् तेज धारवाले **सीर**–हलके समान है, ऐसे **नमामि**–मैं नमस्कार करता हूँ **वीर**–भगवान श्रीमहावीरस्वामीको **गिरिसार**–सब पर्वतोंमें श्रेष्ठ ऐसे मेरुपर्वत समान **धीर**–अचल या धैर्यसम्पन्न ऐसे (श्रीवीर भगवानको) [१] **भाव**–भक्ति भावसे **अवनाम**–नमस्कार करनेवाले **सुर**–वैमानिक देव **दानव**–भवनपति आदि दानव **मानव**–और मनुष्योंके **इन**–स्वामियोंके **चूला**–मुकुटोंमें रहे हुए **विलोल**–चचल, चपल (या हिलनेसे शोभायमान) ऐसे **कमल**–कमलोंकी **आवलि**–श्रेणीसे, पंक्तिसे **मालितानि**–सुशोभित ऐसे (यह सपूर्ण पद 'जिनराजपदानि' का विशेषण है।)

सपूरित–भला भाँति पूर्ण किये हैं अभिनत–भक्तिभावसे नमस्कार करनेवाले लोक–भक्तवगके समोहितानि–मनोवाछतोंको, जिन्होंने ऐसे काम–सच्चे दिलसे, अत्यत भक्ति भावसे नमामि–मैं नमस्कार करता हूँ जिनराज–सर्व जिनेश्वर भावतोंके पदानि–चरण कमलोंको तानि–उा [२] बोधागाध –अपार ज्ञानसे जो गभीर है (अर्थात् अपार ज्ञान ही आगमरूपी समुद्रका गहराई, गभारता या अथाहपन है।) सुपद–अनेकान्त वादके सुरम्य-मनोहर ऐसे पदोंकी पदवी–रचनारूपी नीरपूर–विपुल जलप्रवाहसे परिपूर्ण होनेके कारण अभिराम–जो अत्यत मनोहर है जीवाहिंसा–छहों जीवनिकायकी अहिंसारूपी (अहिंसाके अनेक प्रकारके वणनरूपा) अविरल–(विरल माने अलग अलग, भिन्न भिन्न; अथात् अविरल माने) विना किसी अतरके या अविच्छिन्नरूपसे बहनेवाली लहरी–(अहिंसा परमो धर्म ' की) लहरोंके सगम–सगमसे, एक दूसरेसे मिलनेसे अगाह–जिसका विशाल, अगाध अथात् बृहत्काय (सामान्य बुद्धिवाले मनुष्य जिसे समझ भा नहीं सकते, ऐसा) देह–शरीरस्वरप है चूला–सिद्धान्तोंकी चूलिकाएँ ही वेल–जिसके तटके समान हैं या जिसका ज्वार भाटा हा है गुरु–बडे बडे गहन अथपूण गम–पाठरूपी, आलापकरूपी मणि–बहुमूल्य रत्नोंसे सकुल–जो पूरा-पूरा भरा हुआ है दूरपार–और जिसका दूसरा किनारा बहुत हा दूर है अथात् जिसके दुसरे किनारेको पहुँचना

अत्यंत ही कठिन है, ऐसे सार–प्रधान, मुख्य वीरागम–श्री वीर विभुद्वारा प्ररूपित ४५ आगम सिद्धान्तरूपी जलनिधि–(ज्ञानके) महासमुद्रको सादर–आदरपूर्वक, हार्दिक भावनासे, बहुमानसे साधु–भली भाँति सेवे–मैं सेवा भक्ति करता हूँ [२] आमूल–मूल–जड़से ही आलोल–हिलनेवाले और धूली–मकरंद या केसरकी बहुल–बहुत (बढ़िया ऐसी) परिमल–सुगंधिके कारण आलीढ–आसक्त हुई है, उसका आस्वाद लेनेमें मस्त हुए हैं लोल–चपल (या सुंदर) ऐसे अलि–भौंरोंकी माला–पंक्तियोंके, श्रेणियोंके झंकार–गुंजारकी आराव–मधुर आवाजके कारण सार–श्रेष्ठ या उत्तम (सुशोभित) ऐसे अमल–और निर्मल या स्वच्छ दल–पँखुडियोंवाले कमल–कमलरूपी आगार–घरकी भूमि–भूमि ही निवासे–जिसका निवास स्थान है, ऐसी (यह संपूर्ण पद 'देवि!' पदका विशेषण है।) छाया–रूप और कांतिके संभार–समूहसे सारे–जो सुशोभित है, ऐसी वर–प्रधान, उत्तम प्रकारका कमलकरे–कमल, जिसके हाथमें है, ऐसी तार–देदीप्यमान, चमकते हुए हार–(कंठमें पहने १४ पूर्वरूपी) हारोंके (मालाओंके) कारण अभिरामे–जिसके अंग मनोहर मालूम होते हैं, ऐसी वाणीसंदोह–श्रीवीतरागी भगवंतोंकी द्वादशांगी वाणीका समूह ही (आगम ये श्रीवीतरागी भगवंतोंकी साक्षात् वाङ्मयी मूर्ति ही है।) देहे–जिसका स्वरूप ही है अर्थात् जिसका सारा शरीर ही श्रीवीरवाणीसे बना हुआ है, ऐसी (हे श्रुतदेवी!)

भवविरहवर–भवविरह अर्थात् मोक्षरूपा वरदान (इस स्तुतिके कर्ता महाज्ञानी श्रीहरिभद्रसूरीश्वरजी महाराज हैं। आपने यह स्तुति १४४४वें ग्रथके स्थानपर बनाइ, जिसकी यह अन्तिम चौथी गाथा है। जिसमें 'भवविरह' शब्द आपकी कृतिका सूचक है।) देहि–दीजिये मे–मुझे देवि!–हे श्रुतदेवी! हे श्रुतज्ञानकी अधिष्ठायिका देवी! सार–प्रधान ऐसा (मोक्षरूपा वरदान) [४]

सूत्रार्थ

ससारदावानलदाहनीर–अनत दु खोंसे परिपूर्ण और जन्म-मरणके भ्रमणसे भयावने ऐसे इस ससाररूपी दावानलकी जलनको शात करनेमें (जिस प्रकार बबेका या दमकलेका पानी आगको शात करता है उसी प्रकार) जो (समताके बोध स्वरूप मेघजलका सिंचन कर शाति देनेवाले) पानी समान हैं,

समोहधूलीहरणे समीर–कषायोंद्वारा जो जीवोंको विषयासक्त बनाती है, ऐसी मोहरूपी धूलको उडाकर दूर हटा देनेमें जो तेज वायुके समान हैं,

मायारसादारणसारसीर–इस संसारका भ्रमण बढानेवाली मायारूपी पृथ्वीको खोदनेमें जो तीक्ष्ण माने तेज धारवाले हलके समान हैं

नमामि वीर गिरिसारधीर–और जिनका धैर्य (पर्वतोंमें श्रेष्ठ ऐसे) मेरुपर्वतके समान अचल और (दृढ) अप्रतिहत है, ऐसे चरम तीर्थपति श्रीमहावीरस्वामी भगवानको मैं नमस्कार करता हूँ। [१]

भावावनामसुरदानवमानवेनचूलाविलोलकमलावलिमालितानि–भक्ति भावसे नमस्कार करनेवाले देव, दानव (अर्थात् जिनके चरण-कमलोंको देवेन्द्र आदि भी प्रणाम करते हैं।) और मनुष्योंके स्वामियोंके मुकुटमें रहे हुए चंचल (या हिलनेसे शोभायमान) कमलोंकी श्रेणी (जो भगवंतोंके चरण कमलोंमें एक ही साथ होनेवाले नमस्कारोंसे प्रतिभात होती है, उस) से जो सुशोभित हैं, ऐसे (यह समूचा पद 'जिनराजपदानि' का विशेषण है।)

संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि–और भक्ति भावसे सिर झुकाकर वंदन करनेवाले भक्त (नर नारी) वर्गके मनोरथोंको जिन्होंने (निरंतर) परिपूर्ण किया है, ऐसे (श्रीजिनेश्वरोंकी भक्ति ही शाश्वत सुखोंकी मन कामनाओंको पूर्ण कर सकती है।)

कामं नमामि जिनराजपदानि तानि–उन (अखिल विश्वमें प्रसिद्ध ऐसे) श्रीजिनेश्वर भगवंतोंके चरण कमलोंको मैं अत्यंत भक्ति भावसे नमस्कार करता हूँ। [२]

बोधागाध सुपदपदवीनीरपूराभिराम–(जिस प्रकार ज्वारके समय पूरे प्रवाहसे पानी बहता है–लहरें उहर–
पानीका भरमार मालूम होता है ... दर्श–
प्रेक्षकोंकी आँखें आनंदसे हर्षित
[द्वादशांगीका स्वाध्याय करते
अलंकृत, ज्ञानवर्धक

वास्तविक सत्यका अन्वेषण करानेवाला, गूढ रहस्योंमें अवगाहन करानेवाला और सर्वोत्तम पदलालित्यसे युक्त ऐसी आगमोंकी मनोहर रचनाओंको देखकर मुनिराजोंके हृदयमें आनन्दकी ऊर्मियाँ उठती हैं, जो उन्हें तत्त्वमथन करनेको प्रेरित करता हैं।) जिस प्रकार समुद्रका तल (पेंदी)का भाग नहीं दिखाई देता, उसी प्रकार आगम-समुद्र गहन ज्ञानसे अगाध (ऑंडा) है। जैसे समुद्र पानीसे परिपूर्ण होनेके कारण मनोहर, नयनरम्य मालूम होता है, वैसे ही महायुक्तिपूर्ण (या लालित्यपूर्ण) पदोंकी रचनारूपी पानीसे आगम समुद्र परिपूण होनेसे ज्ञानियोंको परमानद देनेवाला होता है। ऐसे ज्ञान-सारको (ये दोनों पद 'आगमजलनिधि'के विशेषण हैं।) जीवाहिंसाविरललहरीसंगमागाहदेहं—जीवमात्रपरकी दयारूपी लहरनेवाली असख्य-अनत तरंगोंसे सदैव परिपूण होनेके कारण आगम महासागर अहिंसाका विशाल (अगाध) स्वरूप ही हुआ है और इसमें अहिंसाके स्याद्वाद सिद्धान्तोंका अत्यत सूक्ष्म रूपसे निरूपण होनेसे सामान्य अभ्यासियोंके लिये जो समझनेके लिये कठिनातिकठिन है, ऐसे ज्ञानसमुद्रको चूलावेल गुरुगममणिसंकुल दूरपार—यह ज्ञान सागर गहन ज्ञान और विद्याओंसे परिपूण भरा हुआ है और जो चूलिकाएँ ये ... ज्ञान महासागरके तट (किनारे) या ज्वारके समान बडे-बडे आलापक हैं, वे इस गहरे समुद्रके तल ... महामूल्यवान रत्नोंके समान हैं। इन

सब वस्तुओंसे व्याप्त या परिपूर्ण है, ऐसे और महान् (गूढ) रहस्योंसे परिपूर्ण या अनंत (विविध–भिन्न भिन्न) अर्थोंसे युक्त होनेके कारण जिसका पार (दूसरा किनारा) पाना अत्यंत ही कठिन है, ऐसे

सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे–श्रीमहावीर प्रभुके शासनके प्रधान अंगस्वरूप आगमरूपी महासमुद्रकी मैं आदर-पूर्वक (भावसे) भली भाँति सेवा पूजा भक्ति करता हूँ। [३]

आमूलालोलधूलीबहुलपरिमलालीढलोलालिमालाझंकारा रावसारामलदलकमलागारभूमिनिवासे ! ––मूलपर्यंत (अर्थात् मूलसे ही) हिलनेवाले (व चंचल ऐसे कमलके पुष्पोंमेंसे निकलनेवाले) परागका बहुत ही (बढिया, मधुर) परिमलसे सुगंधिसे आकर्षित होकर उसमें आसक्त (मग्न) हुए हैं, ऐसे भौंरोंकी पंक्तियोंके (श्रेणियोंके) गुंजारका मधुर आवाजसे श्रेष्ठ और शोभायमान और निर्मल (स्वच्छ) पँखडियोंवाले कमलके भवनमें रहनेवाली माने कमलरूपी भूमिमें ही निवास करनेवाली (हे श्रुतिदेवी !)

छायासंभारसारे ! वरकमलकरे ! तारहाराभिरामे ! – रूप और कांतिका भंडार होनेके कारण (मनोहर देहसे) शोभनेवाली, हाथमें सुंदर कमलको धारण करनेवाली, उज्ज्वल और देदीप्यमान मालाओं (और हारों)के कारण जिसके सभी अंग रमणीय मालूम होते हैं, ऐसी

वाणीसंदोहदेहे ! भवविरहवरं देहि मे देवि ! सारं–द्वादशांगी वाणीका समूह ही जिसका विशाल स्वरूप है, ऐसी ओ श्रुतदेवी ! जन्म मरणरूपी भवभ्रमणका विरह (अर्थात् नाश) होवे ऐसे सर्वोत्तम मोक्षसुखकी प्राप्तिका वरदान मुझे दीजिये। अथवा (इस स्तुतिके कर्ता महान् उपकारी आचार्य भगवान श्रीहरिभद्रसूरीश्वरजी महाराजने 'भवविरह' शब्दसे अपने नामका सूचन किया है, इसलिये) रचयिता कविको उत्तम ऐसा मोक्ष दीजिये। [४]

भावार्थ

प्रायः स्तुतिमें चार गाथाएँ होती हैं, वैसे ही इस स्तुतिमें भी हैं। यह स्तुति प्रायः (अधिकतर) आठों (अष्टमी) के शामके प्रतिक्रमणके समय चौदस (चतुर्दशी)के पक्खी (पाक्षिक) प्रतिक्रमणके समय और स्त्रियोंमें शामके देवसि प्रतिक्रमणमें छहों आवश्यक पूर्ण हो जानेपर सामुदायिक बोली जाती है। इस स्तुतिके रचयिता परमोपकारी आचार्य भगवंत श्रीहरिभद्रसूरीश्वरजी महाराज हैं जो याकिनीमहत्तरा धर्मसूनुके नामसे भी प्रसिद्ध हैं। श्रीसिद्धसेन... श्रीवर्द्धिगणि और श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणोंके प्रायः समकालमें —उनके बाद करीब २५ साल होनेपर लगभग १५०० वर्षोंके पहले जब कि पूर्वोका ज्ञान प्रायः नष्ट हुआ था ये महापुरुष —आचार्य भगवंत हुए ऐसा प्रसिद्ध है। आप पहले ज्ञातिसे ब्राह्मण होनेके कारण वेदविद्याके बड़े निष्णात पंडित थे और बादमें बड़ी (ढलती) उम्रमें आपने दीक्षा ली थी। आपके दो शिष्योंको बौद्धोंने दहा तशिक्षा (वहर्दड) दी थी इसके प्रतिशोधमें आपने १४४४ बौद्धोंका विनाश करनेका सोचा था पर इस दुर्ध्यानको तुरत ही समझकर उन बौद्धोंकी दया कर, इसके प्रायश्चित्तस्वरूप १४४४ ग्रंथ बनानेका तप किया। इसमें १४४० ग्रंथ तो बनाये, पर शरीर शिथिल हो जानेसे ४ ग्रंथ बाकी

हो रहे। ऐसी अवस्थामें आपने इस स्तुतिकी चार गाथाएँ चार पर्योंके स्थान बनायीं। (ऐसा भी कहा जाता है कि अंतिम गाथाका पहला चरण बनानेके बाद आपकी बोलनेकी शक्ति बंद हो गयी तब श्रीसंघने 'संसारदावा' से गाथा पूर्ण की।) इस प्रकार १४४४ ग्रंथोंकी संख्या पूर्ण हुई और आप विचारकर स्वर्ग गये। इस स्तुतिकी भाषा सम-संस्कृत-प्राकृत है। १४४४ ग्रंथोंमें आपने अनेक आगमोंकी टीकाएँ और महान ग्रंथ भी बनाये हैं। हरेक गाँवमें-शहरमें बड़े प्रतिक्रमणोंके समय उपद्रवनिवारणार्थ श्रीसंघ (समस्त) यह अंतिम गाथा 'संसारदावा' से सामूहिक साथ वाचिकरूपसे और उच्च स्वरमें बोलता है।

परिमल

★ जैन दर्शनकी अनेक गणगरिष्ठ मान्यताओंका इस स्तुतिमें दिग्दर्शन किया गया है। यथा — (१) जन्म मरणरूपी संसार यह एक महान दंदीप्यमान दावाग्निकी जलन या गरमीकी उपमाका है और भगवान श्रीमहावीर प्रभु उसे शांत करनेवाले मेहके समान हैं। यह उपमा संपूर्ण संयुक्तिक और संघटित है। (२) दूसरी गाथामें एक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि श्रीजिनेश्वर देव संसारियोंसे संपूर्णतया भिन्न होनेपर भी भक्तगणकी मनकामनाएँ पूर्ण करते हैं। अर्थात् यदि दुःखी जीव वीतरागियोंका आश्रय (शरण) करेंगे तो अवश्य ही उनके विघ्न, बाधाएँ और दुःख दूर हो सकते हैं। इसी लिये जो अपनेको दुःखी समझता हो उसे चाहिये कि वह केवलज्ञानी भगवंतके शरणमें ... प्रभुजीकी द्वादशांगी वाणी यह एक अगाध ... है, उसे ...
सभा ...
बतायी ...
है। ...
लहरें ...
कौनसा ...
हमें इस ...

समह ही जिसका विशाल स्वरूप ह ऐसी देवी मान श्रुतदेवी, सरस्वती देवी या शारदा देवी। इस प्रकार वर्णन करनसे सम्यग्ज्ञानके महान एश्वयको हम भली भाति जान सकत ह।

★ दुनियामें अन्य लोग सागर पूजा दिन (श्रावण शु १५) को समुद्रकी पूजा अर्चा करते ह पर जिनशासनमें तो सत्यस्वरूप ज्ञान महासागरकी सदा पूजा और भक्ति करनेका विधान ह— "मैं आगम जलनिधिकी सदा भक्ति करता हूँ। —यह गूढ तत्त्व हम इस स्तुतिकी तीसरी गाथामेंसे जान सकते ह।

★ ससारके जीवोंको किसी न किसी प्रकारकी आधि, व्याधि और उपाधि (मानो चिपकाई गई ही न हो वसी) रहती ही ह। इस त्रिविध सतापको ही ज्ञानी दावाग्नि कहते ह। श्रीवीतरागी प्रभुकी सेवासे यह सताप (जलन, दाह) शात होता ह इसी लिये भगवानकी सेवा भक्ति करनी ही चाहिये एसा इस स्तुतिमें ठीक शुरुमें ही (पहले ही पदमें) बताया गया ह।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १– ससारदावानल' स्तुतिके रचयिता कौन हैं?

उत्तर –१४४४ ग्रथोंके रचयिता महान उपकारी आचाय भगवत श्रीमद् हरिभद्रसूरीश्वरजी महाराजने इस स्तुतिकी रचना की है। यह स्तुति सस्कृत और प्राकृत इन दोनों भाषाओंके समान रूपोंसे (शब्दोंसे) बनायी गइ है। इस स्तुतिमें एक महत्त्वकी बात यह है कि इसमें एक भी संयुक्ताक्षर नहीं है। ऐसी कृति कविता शायद ही देखी जाती है।

[प्रश्न] २–'ससारदावानल' स्तुतिको सक्षेपमें समझाइये।

उत्तर –इसकी पहली गाथामें भगवान श्रीमहावीरदेवकी स्तुति
है। अन्य तीन गाथाओंमें क्रमश सर्वजिन, जिनाग
और शासनदेवीकी स्तुति है।

प्रश्न ३– ससारदावानल' सूत्र कब बोला जाता है?

उत्तर –प्राय आठौं (अष्टमी) के प्रतिक्रमणमें थोय (स्तुति
के स्थान यह सूत्र (स्तुति) बोला जाता है। पाक्षि
आदि बडे प्रतिक्रमणमें सज्झाय (स्वाध्याय) के स्था
यह सूत्र बोला जाता है। स्त्रियाँ इसे प्रतिक्रमणमें
रोज नमोऽस्तु के स्थान बोलती है।

प्रश्न ४–यहाँ श्रुतदेवीको नमस्कार क्यों किया गया है?

उत्तर –इस स्तुतिमें श्रुतदेवीको नमस्कार नहीं किया गया है
कारण यह है कि प्रतिक्रमणमें भी विरतिवान सा
महाराज अविरतिवाली (जो अव्रती अवस्थामें
ऐसा) देवीके नमनकी स्तुति नहीं बोल सकते।
देवी वरदान दे सकती है, इसी लिये उसके पास य
केवल मोक्षप्राप्तिके लिये प्रार्थना ही की गई है
ऐसा होनेसे चौथी गाथा पूज्य साधु-साध्वीजी महारा
भी बोल सकते हैं, ऐसा शास्त्रोंमें विधान है।

श्री नवकार मत्रसे श्री ससारदावानल स्तुतितक

मूल सूत्र

★ १ श्री नवकार मत्र ★

नमो अरिहताण । नमो सिद्धाण । नमो आयरियाण । नमो उवज्झायाण । नमो लोए सव्वसाहूण । एसो पचनमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो । मगलाण च सव्वेसि, पढम हवइ मगल ॥

★ २ श्री पंचिदिय सूत्र ★

पचिदियसवरणो, तह नवविहबभचेर-गुत्तिधरो । चउविहकसायमुक्को, इय अट्ठा-रसगुणेहि सजुत्तो ॥ १ ॥ पचमहव्वयजुत्तो, पचविहायारपालणसमत्थो । पचसमिओ तिगुत्तो, छत्तीसगुणो गुरु मज्झ ॥ २ ॥

★ ३ श्री खमासमण सूत्र ★

… ।मि खमासमणो ! वदिउ जावणि-

ज्जाए निसीहिआए । मत्थएण वदामि ।

★ ४ श्री इच्छकार सूत्र ★

इच्छकार सुहराई (सुहदेवसि), सुखतप, शरीर निराबाध, सुखसजमजात्रा निर्वहो छोजी ? स्वामी ! शाता छेजी ? भात-पाणीनो लाभ देजोजी ।

★ ५ श्री इरियावहिय सूत्र ★

इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! इरिया-वहिय पडिक्कमामि ? इच्छ । इच्छामि पडिक्कमिउ इरियावहियाए विराहणाए । गमणागमणे । पाणक्कमणे बीअक्कमणे हरियक्कमणे ओसा-उत्तिग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडासताणासकमणे । जे मे जीवा विराहिया । एगिदिया, बेइदिया, तेइदिया, चउरिदिया, पचिदिया । अभिहया, वत्तिया, लेसिया, सघाइया, सघट्टिया, परियाविया,

किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाण संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छा मि दुक्कड ।

★ ६ श्री तस्स उत्तरी सूत्र ★

तस्स उत्तरीकरणेण, पायच्छित्तकरणेण विसोहीकरणेण, विसल्लीकरणेण, पावाण कम्माण निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्ग ।

★ ७ श्री अन्नत्थ सूत्र ★

अन्नत्थ ऊससिएण, नीससिएण, खासिएण, छीएण जभाइएण, उड्डुएण, वायनिसग्गेण, भमलीए, पित्तमुच्छाए । सुहूमेहि अगसचालेहि, सुहूमेहि खेलसचालेहि, सुहूमेहि दिट्ठिसचालेहि । एवमाइएहि आगारेहि अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहताण भगवताण न""क्कारेण न पारेमि, ताव काय ठाणेण

मोणेण झाणेण अप्पाण वोसिरामि ।

★ ८ श्री लोगस्स सूत्र ★

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्स, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु

॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहिय पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

★ ९ श्री करेमि भंते सूत्र ★

करेमि भंते। सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए कायेणं, न करेमि, न कारवेमि। तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

★ १० श्री सामाइयवयजुत्तो सूत्र ★

सामाइयवजुत्तो, जाव मणे होइ नियमसंजुत्तो। छिन्नइ असुहं कम्मं, सामाइय जत्तिआ वारा ॥ १ ॥ सामाइयम्मि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा। एएण

सामायिक विधिसे लिया, विधिसे पारा, विधि करते जो कोई अविधि हुई हो, वह सब मन-वचन-कायाकरके मिच्छा मि दुक्कड। १० मनके, १० वचनके, १२ कायाके एव ३२ दोषमेसे जो कोई दोष लगा हो, वह सब मन-वचन-कायाकरके मिच्छा मि दुक्कड।

★ ११ श्री जगचिंतामणि सूत्र ★

(इच्छाकारेण संदिसह भगवन्। चैत्य-वदन करूँ? इच्छ।) जगचिंतामणि! जगनाह! जगगुरु! जगरक्खण! जगबंधव! जगसत्थवाह! जगभावविअक्खण! अट्ठावय-संठविअरूअ! कम्मट्ठविणासण! चउवीस पि जिणवर! जयतु अप्पडिहयसासण! ॥ १ ॥ कम्मभूमिहि कम्मभूमिहि पढम-संघयणि, उक्कोसय सत्तरिसय, जिणवराण

विहरत लब्भइ, नवकोडिहि केवलीण, कोडिसहस्सनव साहु गम्मइ, संपइ जिणवर वीस मुणि विहु कोडिहि वरनाण, समणह कोडिसहस्सदुअ, थुणिज्जइ निच्च विहाणि ॥ २ ॥ जयउ सामिय! जयउ सामिय! रिसह! सत्तुंजि, उज्जिंति पहु नेमिजिण! जयउ वीर! सच्चउरिमंडण!, भरुअच्छहि मुणिसुव्वय! मुहरिपास! दुहदुरिअखंडण!! अवर विदेहि तित्थयरा, चिहु दिसि विदिसि जि के वि, तीआणागयसंपइ अ, वंदु जिण सव्वे वि ॥ ३ ॥ सत्तावणइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठकोडीओ। बत्तीसय बासियाइ, तिअलोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥ पन्नरसकोडि-सयाइ, कोडी बायाल लक्ख अडवन्ना। छत्तीस सहस्स असीइ, सासयबिंबाइ पण-मामि ॥ ५ ॥

★ १२ श्री जं किंचि सूत्र ★

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि
माणुस्से लोए। जाइं जिणबिंबाइं, ता
सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥

★ १३ श्री नमुत्थु णं सूत्र ★

नमुत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं ॥१
आइगराणं, तित्थयराणं, सयं संबुद्धा
॥२॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसव
पुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३
लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिया
लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४
अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदया
सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥५॥ धम्मदया
धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारही
धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अ
डिहयवरनाणदंसणधराणं, वियट्टछउमा

॥७॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संतिणागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

★ १४ श्री जावंति चेइआइं सूत्र ★

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ । सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

★ १५ श्री जावंत के वि साहू सूत्र ★

जावंत के वि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥ १ ॥

★ १६ श्री पंचपरमेष्ठिनमस्कार सूत्र ★

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व-साधुभ्य ।

★ १७ श्री उवसग्गहर स्तोत्र ★

उवसग्गहर पास, पास वदामि कम्म-घणमुक्क। विसहरविसनिन्नास, मगल-कल्लाणआवास ॥ १ ॥ विसहरफुलिगमत, कठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गह-रोग-मारी,-दुट्ठजरा जति उवसाम ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ। नरतिरिएसु वि जीवा, पावति न दुक्ख-दोगच्च ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चितामणि-कप्पपायवब्भहिए । पावति अविग्घेण, जीवा अयरामर ठाण ॥ ४ ॥ इअ सथुओ महायस! भत्तिब्भरनिब्भरेण हियएण। ता देव! दिज्ज बोहि, भवे भवे

पास-जिणचंद ! ॥ ५ ॥

★ १८ श्री जय वीयराय सूत्र ★

जय वीयराय ! जगगुरु ! होउ मम तुह पभावओ भयवं ! भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिया इट्ठफलसिद्धि ॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥२॥ वारिज्जइ जइ वि नियाणबंधणं वीयराय ! तुह समये । तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥ ३ ॥ दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, समाहिमरणं च बोहिलाभो अ । संपज्जउ मह एअं, तुह नाह ! पणामकरणेणं ॥ ४ ॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥

★ १९ श्री अरिहंतचेइयाणं सूत्र ★

अरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं ॥१॥
वंदणवत्तियाए, पूअणवत्तियाए, सक्कार
वत्तियाए, सम्माणवत्तियाए, बोहिलाभ
वत्तियाए, निरुवसग्गवत्तियाए ॥ २ ॥
सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए
वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ ३ ॥

★ २० श्री कल्लाणकंद (स्तुति) सूत्र ★

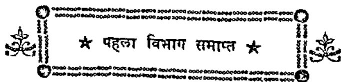
कल्लाणकंदं पढमं जिणिंदं, संतिं तओ
नेमिजिणं मुणिंदं । पासं पयासं सुगुणिक्क
ठाणं, भत्तीइ वंदे सिरिवद्धमाणं ॥ १ ॥
अपारसंसारसमुद्दपारं, पत्ता सिवं दितु
सुइक्कसारं। सव्वे जिणिंदा। सुरविंदवंदा,
कल्लाणवल्लीण-विसालकंदा ॥ २ ॥
निव्वाणमग्गे वरजाणकप्पं, पणासियासेस-

कुवाइदप्प । मय जिणाण सरण बुहाण, नमामि निच्च तिजगप्पहाण ॥ ३ ॥ कुदिदुगोक्खीरतुसारवन्ना, सरोजहत्था कमले निसन्ना । वाएसिरी पुत्थयवग्ग-हत्था, सुहाय सा अम्ह सया पसत्था ॥४॥

★ २१ श्री ससारदावानल स्तुति ★

ससारदावानलदाहनीर, समोहधूली-हरणेसमीरम् । मायारसादारणसारसीर, नमामि वीर गिरिसारधीरम् ॥१॥ भावाव-नामसुरदानवमानवेन,-चूलाविलोलकमला-वलिमालितानि । सपूरिताभिनतलोकसमी-हितानि, काम नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥ बोधागाध सुपदपदवीनीर-पूराभिराम, जीवाहिसाविरललहरीसगमा-गाहदेहम् । चूलावेल गुरुगममणिसकुल

दूरपार, सार वीरागमजलनिधि सादर साधु सेवे ॥ ३ ॥ आमूलालोलधूलीबहुल-परिमलालीढलोलालिमाला,-झकाराराव-सारामलदलकमलागारभूमिनिवासे । । छायासभारसारे । वरकमलकरे । तार-हाराभिरामे । वाणीसदोहदेहे । भवविरह-वर देहि मे देवि। सारम् ॥४॥





चरम तीर्थपति श्रमण भगवत श्रीमहावीर देवांच्या

चिन्मय जीवनचरित्राच्या नऊ दृश्यांचा

परिचय

१ च्यवन कल्याणकाचीं चौदा स्वप्ने

२ मेरु पर्वताच्या शिखरावर देवांनी साजरा केलेला प्रभूचा जन्मस्नात्र महोत्सव

३ श्रीक्षत्रियकुंडांत दीक्षा कल्याणक

४ अत्यंत क्लिष्ट उपसर्गाचीं दृश्यें

५ ऋजुवालिका नदीच्या काठीं केवळज्ञान कल्याणक

६ श्रेणिक महाराज मोठ्या थाटामाटानें प्रभूचीं देशना ऐकण्यासाठीं समवसरणांत जात आहेत

७ पावापुरींत सोळा प्रहरांची (४८ तासांची) देशना दिल्यानंतर निर्वाण कल्याणक

८ अंतिम (अग्नि) संस्कारभूमि श्री पावापुरी जलमंदिर

९ महसेन वनांतील सुप्रसिद्ध समवसरण

विभाग दूसरा

(१) श्रमण भगवान श्रीमहावीरदेवका आदर्श जीवनचरित्र (२) प्रधान तीर्थोंका संक्षिप्त परिचय (३) १६ सतियोंके नाम (४) २४ तीर्थंकरोंके नाम और लंछन (५) देवपाल चरित्र (६) प्रारंभिक परीक्षाके पुराने प्रश्नपत्र

(१) श्रमण भगवान श्रीमहावीरदेवका आदर्श जीवनचरित्र

[नीचेके परिच्छेदोंमें संपूर्ण । (१) पहलेके २७ भवोंका संक्षिप्त वर्णन (२) आदर्श जीवनी ( ) तपश्चर्याकी तालिका (४) पंच कल्याणक तालिका (५) श्री चतुर्विध संघका परिवार (६) तीर्थस्थान (७) उपसर्गोंकी संक्षिप्त जानकारी (८) चातुर्मासकी तालिका (९) निकटके रिश्तेदार (१०) तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन करनेवालोंके नाम (११) गूढ रहस्य (१२) प्रश्नोत्तर]

(१) पहलेके २७ भवोंका संक्षिप्त वर्णन

पहले भवमें भगवान श्रीमहावीरदेव पश्चिम महाविदेह क्षेत्रमें नयसार नामक एक ग्रामचिंतक (चौधरी) थे। एक बार

काष्ठ-इंधन आदिका (लकडीका) संग्रह करनेके लिये आपको जंगल जाना पडा। ऐन दोपहरीका समय होनेसे श्रीनयसार किसी अतिथिकी वाट ही जोह रहे थे कि अपने संघातियोंसे अलग पड जानेके कारण मार्ग भूले हुए कोई साधु महाराज सामनेसे ही आते हुए दिखाई दिये। श्रीनयसारने निकट जाकर विनती की— 'महाराजजी! आप यहाँ—इस भयावने जंगलमें (बीहडमें) कहाँसे? मेरे साथ पधारिये और मुझे लाभ देकर कृतार्थ कीजिये।' संघातियोंसे अलग पड जानेकी बात जानकर आपने (ढाढस देते हुए) साधु महाराजसे कहा— आप आहार पानी (गोचरी) ग्रहण कर पा लीजिये। बादमें मैं आपको सही रास्ता बतला दूँगा जिससे (आगे बढते बढते) आपश्रीका अपने संघातियोंसे मेल हो जायगा। समय देखकर मुनिराजने नयसारको गोचरीका लाभ दिया। आहार-पानी (गोचरी) पा लेनेके बाद मुनिराज विहार करने निकले तब श्रीनयसार उन्हें विदा करने और सही रास्ता बतलानेके लिये उनके साथ हो लिये। मार्गमें प्रसंगोचित उपदेश देते हुए मुनिराज बोले—' हे भाग्यशालिन्! यह द्रव्यमार्ग बतलानेमें आपको बहुत ही बडा लाभ हुआ है। पर मुक्तिका भावमार्ग ही प्राप्त करने योग्य है। शुद्ध देव-गुरु धर्मका यथार्थ ज्ञान होनेपर ही मोक्षमार्गकी ओर प्रयाण हो सकता है।" यह हृदयद्रावक उपदेश सुनते सुनते श्रीनयसारको सम्यक्त्वकी प्राप्ति हुई। जब किसी भी तीर्थंकरकी आत्मा सम्यक्त्व प्राप्त करती है तबसे वह मुक्तावस्थाको पहुँचे तबतक उनके बड़े जन्मोंकी गिनती की जाती है। सम्यक्त्वप्राप्तिके पूर्वके अनंत जन्म मरण तो श्री जैन शासनमें व्यर्थके—बिना किसी कीमत या उपयोगके बताये गये हैं। इस हिसाबसे अनंतकालके भवभ्रमणके बाद नयसारके भवमें

श्रीमहावीर देवकी आत्माको सम्यक्त्वकी प्राप्ति होनेसे उनका यह पहला भव कहा गया। श्रीनयसारने पचपरमेष्ठियाके शुभ ध्यानमें अपना शरीरत्याग किया।

दूसरे भवमें आप सौधम नामक प्रथम देवलोकमें एक पल्योपम आयुष्यवाले देव हुए।

तीसरे भवमें आप चक्रवर्ती श्रीभरत महाराजाके पुत्र **मरीचि** थे। भगवान श्रीऋषभदेवस्वामीजीके पास आपने दीक्षाका अगीकार किया था, पर भली भाति चारित्रका पालन न कर सकनेके कारण कुछ ही समयके बाद आपने त्रिदडी (सयासी) का भेष धारण कर लिया। एक बार समवसरणके समय महाराजा भरतने श्रीऋषभदेव भगवानसे पूछा—'हे प्रभुजी! क्या भविष्यमें तीर्थंकर होनेवाली कोई श्रेष्ठ आत्मा यहाँ है?' भगवानने कहा—'आपके पुत्र मरीचि ही इसी अवसर्पिणीमें अन्तिम २४वे तीर्थंकर होगे।' यह सुनकर महाराजा भरतने भावी तीर्थंकर समझकर मरीचिको वदन किया। यह बात देखते-सुनते ही मरीचिको कुलमद हुआ—'मेरा कुल कितना श्रेष्ठ! मेरे दादा प्रथम तीर्थपति, मेरे पिताजी प्रथम चक्रवर्ती और मै प्रथम वासुदेव! और और मै अतिम तीर्थंकर भी हूँगा!' इस प्रकार गर्व करनेसे नीच गोत्रका कर्मबध किया जिसे भोगते भोगते अन्तमें जो थोडा बचा वह आपको तीर्थंकरके भवमें श्रीदेवानदा ब्राह्मणीके गर्भमें ८२ दिनतक रहकर भोगना पडा।

चौथे भवमें आप पाचवे देवलोकमें १० सागरोपम आयुष्यवाले देव हुए।

पाचवें भवमें आप कोल्लाक गावमें कौशिक नामक त्रिदडी (सयासी) हुए।

छठे भवमें आप स्थूणा नगरीमें ७२ लाख पूर्व आयुष्यवाले पुष्प नामक ब्राह्मण हुए।

सातवें भवमें आप सौधर्म देवलोकमें देव हुए।

आठवें भवमें आप ६० लाख पूर्व आयुष्यवाले अग्निद्योत नामक त्रिदंडी हुए।

नौवें भवमें आप ईशान देवलोकमें देव हुए।

दसवें भवमें आप मदर गाँवमें ५६ लाख पूर्व आयुष्यवाले अग्निभूति नामक त्रिदंडी हुए।

ग्यारहवें भवमें आप सनत्कुमार नामक देवलोकमें देव हुए।

बारहवें भवमें आप श्वेताम्बी नगरीमें ४४ लाख पूर्व आयुष्यवाले भारद्वाज नामक त्रिदंडी हुए।

तेरहवें भवमें आप माहेन्द्र नामक देवलोकमें देव हुए।

चौदहवें भवमें आप राजगृही नगरीमें ३४ लाख पूर्व आयुष्यवाले त्रिदण्डी हुए।

पद्रहवें भवमें आप पाँचवें ब्रह्म देवलोकमें देव हुए।

इस भवके बाद आपका बहुत भव भ्रमण हुआ—आपने अनेक छोटे छोटे (क्षुल्लक) जन्म लिये।

सोलहवें भवमें आप विश्वभूति नामक राजकुँवर थे। संभूति नामक गुरु महाराजके पास आपने दीक्षा ली थी। तपस्या करते करते आपने एक बार तपस्याके बदलेमें बलकी याचना की। अनशनव्रतकी (जिसमें आमरणान्त अन्न-जलका त्याग किया जाता है।) तपस्या कर निदान बाँधकर उस तपका विक्रय किया। इसके फलस्वरूप आप १८वें भवमें त्रिपृष्ठ वासुदेव हुए।

सत्रहवें भवमें आप महाशुक्र नामक देवलोकमें देव हुए।

अठारहवें भवमें आप पोतनपुरीमें ८४ लाख पूर्व आयुष्यवाले त्रिपृष्ठ वासुदेव थे। इस जन्ममें आपने अपने संगीतके रसिक नौकरको किसी एक सामान्य भूलके कारण उसके कानोंमें गरम गरम सीसा दूसरे नौकरद्वारा उँडेल्वाया। इस कर्मका उदय अतिकठोररूपमें हुआ—तीर्थंकरके भवमें ग्वालने आपके कानोंमें कीलें ठोकी।

उन्नीसवें भवमें ३३ सागरोपमके आयुष्यमें आपको सातवीं नारकीके दुःख भोगने पड़े।

बीसवें भवमें आप सिंह हुए।

इक्कीसवें भवमें आप चौथी नारकीमें गये।

इसके बाद आप अनेक छोटे-छोटे तिर्यंच आदिके भवोंमें भटकते रहे।

बाईसवें भवमें आप मनुष्य हुए।

तेईसवें भवमें आप मूका नामक नगरीमें ८४ लाख पूर्व आयुष्यवाले प्रियमित्र नामक चक्रवर्ती थे। आपने श्रीपोट्टिलाचार्य जीके पास दीक्षा ग्रहण कर एक करोड़ वर्षोंतक चारित्रका पालन किया।

चौबीसवें भवमें आप महाशुक्र नामक देवलोकमें देव हुए।

पचीसवें भवमें आप जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्रकी छत्रिका नगरीमें २५ लाख वर्ष आयुष्यवाले नंदन नामक राजपुत्र थे। आपने दीक्षा लेकर आमरणांत मासखमण कर बीस स्थानककी तपस्या की। एक लाख सालतक चारित्रका पालन करतीर्थंकर नाम-कर्म उपार्जन किया। इस तपस्यामें आपने ११ ८० ६४५ मासखमण किये थे।

छब्बीसवें भवमें आप दसवें प्राणत देवलोकके पुष्पोत्तर विमानमें २० सागरोपम आयुष्यवाले देव हुए

सत्ताईसवे भवमें तो आप साक्षात् २४ वें तीर्थपति श्री महावीर देव हुए। श्री चतुर्विध संघकी स्थापना कर अनंत असंख्यात जन्म मरणके भ्रमणका नाश कर आप मोक्ष सिधारे।

(२) आदर्श जीवनी

पुरिमादानीय श्रीपार्श्वनाथ भगवानके बाद २५० वर्ष हो जानेपर ई स ५९८ पूर्व चैत्र शु १३ और मंगलवारके मंगल प्रात कालमें सर्वोत्तम मुहूर्तपर क्षत्रियकुंडनगरके महाराजाधिराज श्रीसिद्धार्थजीकी आदर्श गृहिणी महाराणी त्रिशलादेवीके पुनीत गर्भसे १४ गंभीर अर्थवाही स्वप्नोंसे सूचित अनुपम कांतिसंपन्न पुत्ररत्नका जन्म हुआ। प्रभुजीका जन्म होते साथ ही नारकियोंमें भी (ज्ञान) प्रकाश ही (ज्ञान) प्रकाश हो गया। ५६ दिक्कुमारिकाएँ प्रभुसेवाका अमूल्य लाभ उठाने आ पहुंची। देवराज श्री सौधर्मेंद्रका आसन कंपित होते ही इंद्र महाराज भी अपने परिवारके साथ अपूर्व सेवा भक्तिका लाभ उठाने सेवामें उपस्थित हो गये। माता और प्रभुजीका सविनय वन्दना कर मातजीके पास प्रभुजीका प्रतिबिंब रखकर, मातजीकी अनुज्ञा लेकर स्नात्र महोत्सव मनानेके लिये प्रभुजीको लेकर सभी देवगण मेरु पर्वतपर गये। वहाँ अनेक तीर्थ जलोंसे प्रभुजीका स्नान कराकर देवदेवियोंने उन्हें माताजीके पास रखा और स्वयं नंदीश्वरद्वीपमें आनंदोत्सव मनाकर अपने अपने स्थान चले गये। सिद्धार्थ राजाने भी पुत्र जन्म-महोत्सव इतनी तो धूम धामसे और साज-बाजसे मनाया कि सभीको ऐसा ही प्रतीत हुआ कि मानो पृथ्वीपर एक छोटा-सा स्वर्ग ही अवतीर्ण हुआ हो। जन्मोत्सव इतने तो सुंदर ढंगसे मनाया

गया कि सारे-के-सारे नगरमें आनद प्रमोदकी लहर उमडने लगीं। राजा सिद्धार्थने याचकोको इतना तो दान दिया कि दारिद्र्यका नाम निशानतक न रहने पाया।

भगवानका नाम श्रीवर्द्धमानकुमार रखा गया। आत्मगुणोके स्वयप्रतापी तेज और सामर्थ्यमे अन्वयक ऐसा इद्रद्वारा सबोधित 'महावीर' उपनाम भी लोगोके मुहसे सहसा निकल पडा।

श्रीवर्द्धमानकुमार अन्य राजकुँवरोके साथ अनेको बार गाँवकी सीमाके मदानमें खेलने जाते। एक दिनकी बात है किसी देवने प्रभुजीके बलकी परीक्षा लेनेके लिये एक भीषण साँपका रूप धारण कर लिया और वह प्रभुजीको डरानेकी चेष्टा करने लगा। उस समय श्रीवर्द्धमानकुमारने जरा भी घबडाये बिना उस साँपको उठाकर फेंक दिया। इसीसे आप 'महावीर' कहलाये। फिरसे खेल शुरु होनेपर (वाह्यवाहक लक्षणवाली आमलकी नामक) बालक्रीडामें उसी देवने प्रभुजीको अपने कधेपर बठाया और महिमा सिद्धिके प्रभावसे वह अपना स्वरूप बढाने लगा। यह देखकर श्रीवर्द्धमानकुमारने उसकी गरदनपर ऐसा तो कसकर घूसा जमाया कि उस देवने तुरत ही अपना मूल स्वरूप प्रगट कर सभी राजकुमारोंके समक्ष भी बहुत ही नम्रतासे प्रभुजीके पास स्वय की हुई भूलकी क्षमायाचना की।

विद्याभ्यासके योग्य आयु होते ही महाराजा सिद्धार्थने बडे समारोहके साथ मगल दिन शुभ मुहूर्तपर वर्द्धमानकुमारको विद्याभ्यासार्थ पाठशालामें दाखिल किये। शिक्षकको सुदर-सुदर भेंट और उपहार दिये गये और पाठशालाके विद्यार्थियोको बढिया बढिया पारितोषिक और मेवा मिठाई देकर प्रसन्न किये गये। शिक्षकके हृदयमें प्रभुजीका पढानेकी अनेकानेक भावनाएँ थी, पर

ज्ञानीको तो सिखानेका ही क्या हो सकता है? शिक्षक प्रभुजीको पढावे यह प्रभुजीका विडंबन टालनेके लिये इन्द्रमहाराज यहाँ ब्राह्मण बनकर आये और प्रभुजीके साथकी चर्चा प्रश्नोत्तरीमें शिक्षकके मनमें पहलेकी जो शकाएँ थी, उन्हे दूर किया। इसी समय श्रीवद्धमानकुमारने 'जैनेन्द्र व्याकरण'की रचना की।

कर्मकी अटल और अगम्य सत्तासे कौन बचा है? भोगावलि कर्मके उदयके कारण एक दिन माता पिताका बहुत ही आग्रह होनेसे यशोदा नामक सुलक्षणसपन्न राजकुँवरीके साथ आपका पाणिग्रहण हुआ। 'सर्वविरतिका अगीकार किये बिना मोक्ष मिलनेवाला ही नही'—यह बात आप विरागी भली भाँति जानते थे, इस लिये विवाह होनेपर भी आप ससारके विषय-कषायबधक रग-रागमें न डूबकर निर्लेपप्राय ही रहे। आपके प्रियदर्शना नामकी एक लडकी थी।

२८ वर्षकी आयुमे आपका माता पिताका वियोग हुआ। सारी-की-सारी नगरी शोकसागरमें डूब गई। आपने अपने बडे भाई महाराजा नदिवद्धनजीको शरीरकी क्षणभगुरता-नश्वरता और आत्माकी अमरता नित्यता बताकर उनका माता पिताके वियोगका दुख हलका किया। माता पिताका आपके प्रतिका अपरपार प्रेमभाव देखकर 'माता पिता जबतक जीवित होगे तबतक मै दीक्षा नही लूगा।' ऐसा अभिग्रह आपने गर्भमें ही लिया था। यह अभिग्रह पूर्ण होनेसे बडे भाईका दुख शात होनेके बाद आपने उनके पास चारित्र ग्रहण करनेकी आज्ञा माँगी। बडे भाई नदिवद्धनने आपको बहुत समझाया तब आपने और दो साल ससारमें रहना स्वीकृत कर अतिम वर्षमें मुक्त हाथोसे 'वरसीदान' दिया मानो दानके झरने-मोती ही बहाये।

श्रीवर्द्धमानकुमार ससारको छोड दीक्षा लेने जा रहे थे इसी लिये महाराजा नदिवधनने यह दीक्षा-महोत्सव बहुत ही धूम धाम और साज बाजसे तथा आनद और उत्साहके साथ मनाया। इसमें महाराजा इन्द्रकी भी सपूर्ण सहायता थी।

दीक्षाका बडा भारी व मनोहर जुलूस राजमहलसे निकलकर सारे नगरमें घूमा। उसमें देव-देवेन्द्र विद्याधर नर-नारियां आदि सभी हर्षनिर्भर होकर जा रहे थे। हाथी घोडे रथ पालकियाँ आदि अनेक प्रकारकी अपरपार सवारियां उसमें थी। तरह-तरहके वाद्य-बाजोंकी सुरम्य ध्वनिकी गुंजारसे प्रेक्षकोंके हृदयमें आनद उमडने लगा। जुलूसके शुरूमें ही इन्द्रध्वज था। जुलूसके ठीक मध्यमें एक विभूषित पालकीमें श्रीवर्द्धमानकुमार सोहते थे। क्या उनकी अलौकिक कान्ति! और क्या उनकी अनुपम शोभा! आपने सुन्दर-सुदर वस्त्र-आभूषण धारण किये थे। आपने किये हुए चदन आदि सुगधित द्रव्योंके विलेपनसे आपकी चारो ओर परिमल फैली थी। आपको देखनेके लिये लाखो और करोडो मानवियोंके समूह चारो ओर लगे थे। यह जुलूस सारे नगरमें घूमकर नगरके बाहर एक विशाल वृक्षके नीचे ठहरा।

वह दिन कार्तिक कृ० १० का था। चौथा प्रहर हो गया था। गाव बाहरके उस बगीचेमें महाराजा नदिवद्धन विराजमान थे। देव देवेन्द्र और नर-नारियोंकी उपस्थिति पूरी-पूरी थी। तीस वर्षकी ऐन युवावस्थामें भी श्रीवद्धमान कुमारने अपूर्व उत्साह और अप्रतिम समारोहके साथ पचमुष्टि लोच कर आत्मकल्याण करानेवाली, भव भ्रमणसे छुडानेवाली और सिद्धिगति मोक्ष नामक अनुपम शाश्वत धाम प्राप्त करानेवाली भागवती दीक्षाको अगीकार किया।

क्षत्रियकुंड नगरकी जनता भाग्यशाली कि उसे श्रीवर्द्धमान कुमारकी दीक्षाकी रम्य विधि देखकर उन्हें धन्यवाद देनेका और वंदन करनेका सु-अवसर प्राप्त हुआ। महावीर प्रभुजीने तो सबसे विदा माँगकर निर्भयतासे वनके दुर्गम और भयानक मार्गकी ओर अकेले ही प्रयाण किया।

विदा देन तो दे दी पर महावीर प्रभुजीके बंधुजनोंकी नाजुक आँखोंमेंसे प्रियवियोगकी अश्रुधाराएं बहने लगी। सभी नगरजनोंकी आँखें भी अश्रुपूर्ण हो गयीं और हृदय गद्गद्‌ होने लगा। पर समस्त जीवोंका कल्याण करनेवाले केवल **एकमात्र परमोच्च शासनके** लिये यह सब सहन कर महाराजा नंदिवर्द्धन और सब प्रजाजन खिन्न मनसे नगर लौटे।

चारित्रका अंगीकार करनेके बाद भगवान श्रीमहावीर देवने अपने शरीरको पराया ही मान लिया और देव देवियोंके, मनुष्योंके और पशुओंके विकरालसे विकराल व रोमांचकारी उपसर्गोंको बिल्कुल समभावसे सहन किया। इस प्रकार ग्राम-अनुग्राम विहार करते हुए आपने अनंत उपकार कर भव्यजीवोंको समागम स्थिर किया।

एक बार महावीर प्रभुजी **मोराक** गाँवसे विहार कर श्वेतांबी नगरीकी ओर जा रहे थे कि मार्गमें ही ग्वाल लोग मिले। ग्वालोंने विनयपूर्वक विनती करते हुए आपसे कहा—"ओ स्वामीजी! आप जिस मार्गसे जा रहे हैं, वह मार्ग ठीक सीधा सीधा श्वेतांबीकी ओर ही जाता है किंतु रास्तेमें ही कनकखल नामक तपस्वियोंका एक आश्रमस्थान आता है जहाँ **चंडकौशिक** नामक एक भयंकर **दृष्टिविष सर्प** रहता है। इस साँपने अनेक जीवोंका काम तमाम किया है, इस लिये आपको उस ओर नहीं जाना

चाहिये। पर आपको पूरा विश्वास था कि यह सॉंप जरूर सुधरेगा। अत एव आपने ग्वालोंकी इस बातको अनसुनी कर उस सॉंपका सुधारनेकी उपकारकी भावनासे निर्भयताके साथ उस भयावने वनके मार्गकी ओर प्रयाण किया।

जाते जाते करुणानिधि प्रभुजी उस अमगल व डरावने जगलके ठीक मध्यमें आ पहुँचे। अत्यत ही घनी झाडी अनगिनत लताओंसे लपेटी हुई थी। और उसमे भी एक बडे पेडके खोडरमे एक बडा बिल था। उस बिलमेसे फू ऊ ॐ ,फू ॐ ॐ ऐसे डरावने फुफकारकी आवाज आ रही थी। चूकि वह भयकर दृष्टिविष सर्प था, उसकी विष दृष्टि पडते ही सब नष्ट हो जाता था। फुफकारसे निकटकी परिस्थिति अर्थात सारा-का सारा वायुमडल ही विषमय हो गया था। हरे-हरे व छोटे-छोटे पेड और उनकी कोमल पत्तियाँ भी उसके विषसे नष्ट हो गई थी। निकट रहनेवाले कई एक छोटे बडे निरपराधी जीव-जतुओंको मरणका आश्रय लेना पडा था।

कोई आदमी यहा निकट आया है ऐसा जानते ही वह दुष्ट साप क्रोधावेशमे ही बाहर आया और तुरत ही जोर जोरसे फुफकारता हुआ करुणानिधि-दयासागर उस महात्माजीकी ओर सन्नाटेसे आया।

योगनिष्ठ प्रभुजी तो कबके ही उस बिलके पास काउस्सग्ग ध्यानमें स्थिर हो गये थे। अपने अनेक बारके जहरीले फुफकारोंसे प्रभुजीको कुछ भी (उपद्रव-कष्ट) नही हुआ, यह देखकर सॉंपके क्रोधका थाह ठिकाना न रहा। उसने सहसा सन्नाटेमे आकर समभावी प्रभुजीके पॉंवमें दश किया। योगेश्वर प्रभुजी तो क्षमा और शांतिके अवतार ही थे! आप जरासे भी चलायमान न हुए।

ा हुआ आपपर दाँवा धुठ भी असर ! और न चढा आपपर जहर ! अब तो चण्डकौशिक बहुत ही क्रोधके आवेगमें आ गया और उसने भगवानको और कई दंश किये पर सब निष्फल ! पाँवके उसी घावमेंसे लाल खूनके स्थानपर अमृततुल्य शुभ्र दूध निकलते देखकर चडकौशिकको महदाश्चर्य हुआ। 'यह आदमी अभी गिर जायगा ... अभी गिर जायगा ...' ऐसा समझकर अपनेपर इसका शरीर न गिर पडे इस हिसाबसे वह प्रभुजीके निकट आता और दूर जाता। ऐसा बार बार करते करते वह चण्डकौशिक थक गया और अंतमें उस महान चमत्कारपूर्ण योगीराजको एकटक देखने लगा।

साँपको आश्चर्यचकित और स्तब्ध हुआ देख उचित समय समझकर योगीश्वरजी मंद किंतु वात्सल्यपर शब्द बोले —"बूझ ! चडकौशिक, बूझ !"

इन कर्णमधुर अमृतमय और चमत्कारपूर्ण शब्दोंको सुनकर चडकौशिक अधिक ही विस्मित हुआ। उसे शंका हुई — 'क्या यह आकाशवाणी तो नहीं हुई ? मैंने तो पहले समझ लिया था कि यह कोई मामूली आदमी होगा पर यह तो अलौकिक विभूति निकली। इतनेमें वही बात व सुमधुर आवाज सुनाई दी। अब चडकौशिक समझ गया कि ये शब्द मरपर महान उपकार करनेवाले प्रभुजी ही बोल रहे हैं। उसने क्षणभर सोचकर शांत कर विचार-सागरमें गोता लगाया—आत्मचिंतन करना शुरू किया। अब उसे समझने लगा — क्रोधके मनें क्रोधमें अंध हो अनगिनत जीवोंका संहार कर पापकी गठरी की-गठरी बाँध ली है।' उसे अब पूर्वकृत हिंसामूलक उन पापोंके लिये बहुत ही पश्चात्ताप होने लगा, हृदय गद्गद हो गया, आँखोंमेंसे अश्रुधाराएँ

बहने लगी। उन महान योगीराजके शुद्ध बुद्ध होनेके मन्त्राक्षरसम उन दिव्य शब्दोंकी मशालकी चिनगारीसे चडकौशिकके हृदयाकाशमें उद्दीप्त ज्ञानज्योति प्रगट हुई ! अबसे अपने द्वारा किसीको भी दुःख-कष्ट न पहुँचे इस लिये मन-ही-मन सत्य, अहिंसा और क्षमाका सर्वश्रेष्ठ व अमूल्य व्रत धारण कर चडकौशिकने योगिराजके चरण-कमलोंमें अपना मस्तक नमाया। बादमें उसने अपना केवल मुँह बिलमें रख सारा शरीर बिलके बाहर ही रखा और स्वयं आत्मध्यानमें स्थिर हो गया। उपकारी महापुरुषोंकी छाया क्या कर सकती है, इसका यह अद्वितीय दृष्टान्त है।

करुणानिधान दयासागर प्रभु श्रीमहावीरदेवने चडकौशिकपर महान उपकार किया और अपना निश्चित कार्य सफल हुआ, ऐसा देखकर वहाँसे विहार किया। चडकौशिकके जीवनमें दिव्य चमत्कारसमान अद्वितीय परिवर्तन हो गया। मार्गभ्रष्ट आत्माकी वृत्ति स्थिर हो गई। परमदेवकी आत्माकी शीतल छाया पडनेसे साँपका भी उद्धार हो गया। दृष्टिविष सर्प जैसे क्रूरतम जीवात्माको भी आत्मदमनका मार्ग प्राप्त हुआ और उसमें अपूर्व सहनशीलताकी शक्ति (गुण) उत्पन्न हुई। अपनी हिंमत, अपनी धीरता और अपनी आत्मशक्ति कितनी है, इनकी कसौटीको जानकर प्रयोगमें रखनेका समय अब आ गया है, यह देखकर चडकौशिकको आनंद हुआ।

ऐसी पवित्र छाया पाडनेवाले अर्थात् ऐसा चमत्कारपूर्ण परिवर्तन करनेवाले और ज्ञानका दिव्यमंत्र सुनानेवाले (ज्ञानके दिव्यमंत्रका उपदेश करनेवाले) योगीश्वर भगवान श्रीमहावीरदेवको कौन न नमेगा ? अनेक जीवोंके कल्याणके लिये जिन्होंने

अपने प्राणोंकी भी परवाह किये बिना घने व भयानक जंगलमें प्रवेश कर भूखा चंडकौशिक विषधरको बुलाकर सर्वश्रेष्ठ क्षमाका पाठ पढ़ाया, उन महाप्रतापी योगीश्वरजीको धन्यवाद हो ! **कोटि कोटि वंदन हो उन महाप्रतापी प्रभुजीको !** सर्प होते हुए भी जिसने अहिंसा और क्षमाके परमपवित्र मार्गमें प्रयाण करानेवाले और क्षमाके भंडार श्रीवीरप्रभुजीका आश्रय लिया उस चंडकौशिकको भी धन्यवाद हो !

संगम नामक अभवी दुष्ट देवने क्षमानिधान भगवान श्रीमहावीरदेवको केवल एक ही रातमें छोटे-बड़े कुल मिलाकर २० महान् महान (भयंकर) उपसर्ग किये। आज भी इन उपसर्गोंका वर्णन सुनते ही हमारे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। महाराजा इन्द्रको इस बातका पता लगते ही उन्होंने उस देवको इस दुष्ट कृत्यके लिये दंड कर वहाँसे भगा दिया।

भगवान श्रीमहावीर प्रभुजी एक समय जंगलमें कायोत्सर्ग ध्यानमें मग्न थे। उस समय एक ग्वाला वहाँ आया और उसने अपने बैलोंको भगवानके पास रख स्वयं किसी कामके लिये चला गया। भगवान तो ध्यानमें थे इस लिये उन्हें यह बात मालूम भी न थी। बैल तो चरते चरते कहीं दूर चले गये। कुछ समयके बाद ग्वाला प्रभुजीके पास लौटा तो उसे वहाँ बैल न दिखाई दिये। तब उसने सारे जंगलमें पता लगाया पर वहाँ भी बैल न मिले। फिरसे जब वह भगवानके पास आया, तब उसे कहींसे चरकर लौटे हुए बैल वहीं दिखाई दिये। जानते हुए भी इस आदमीने मुझे बेकार घुमाया, ऐसा समझकर क्रोधावशमें आकर उस ग्वालेने प्रभुजीके कानोंमें कीलें ठोककर उपसर्ग किया, पर भगवान तो

ध्यानमेंसे जरा भी चलित न हुए। कुछ समय बाद इस बातका पता चलने ही एक श्रावक और एक वैद्य—दानाने मिलकर कील निकाली, उस समय शरीरस्वभावसे प्रभुजीके मुहमेंसे चीख निकलपो निकल गई। पहले त्रिपृष्ट वासुदेवने (१८ वे) भवमें भगवानने अपने नौकरके कानोंमें सीसेका जो गरम गरम रस उड़लाया था उस कर्मका फल इस तरह कीलका उपसर्गद्वारा भुगतना पड़ा। प्रभुजीके दिलमें किसीके भी लिये राग या द्वेषका स्थान न था। स्वयं शक्तिसंपन्न होते हुए भी कीलका उपसर्ग करनेवालेपर क्रोध न कर समभाव रखकर कष्ट सहन किये यह प्रभुजाकी संपूर्णताका बड़ा भारी (अद्वितीय) प्रमाण है। 'कर्मभोगके उदयके समय रागके बनाय कर्म करते समय ही बहुत-बहुत सोच विचार करना चाहिये। कारण यह है कि कर्मसत्ता तीर्थंकर जैसी महान् आत्माओंको भी क्षमा नहीं करती।"—यह शिक्षा हम इस घटनासे प्राप्त होती है।

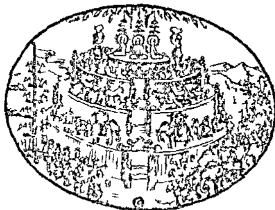
इस प्रकार श्रमण भगवान श्रीमहावीरदेवने सभी-के-सभी उपसर्ग निडरतासे सहन किये बिना क्रोध किये सहे दीनतारहित होकर और शरीरकी अपूर्व निश्चलताके साथ बरदाश्त किये। आपने तीर्थंकरके इस अन्तिम भवमें भी दीक्षा लेनेके बाद और केवलज्ञानकी प्राप्तितक—साढ़ेबारह वर्ष शरीरपरके मोह ममत्वको अर्थात् कायाकी पराधीनताको दूर करनेके लिये लगातार घोर तपस्याएँ कीं।

वैशाख शु १० का वह दिन था। भगवान श्रीमहावीर प्रभुजी निर्जल छट्ठकी तपस्यामें थे। और आप **ऋजुवालिका** नदीके तीर **श्यामक** नामक गृहस्थके खेतमें शाल नामक वृक्षके

नीचे गोदुहासनमें बैठकर सूर्यकी आतापना ले ही रहे थे कि आपको केवलज्ञान हुआ।



उस समय वहां चारित्र अंगीकार करनेके योग्य कोई भी न होनेसे केवलज्ञान महोत्सव मनानेके लिये आये हुए इन्द्र आदि देवोंको आपने कुछ समयतक देशना दी और विहार कर दूसरे दिन आप पावापुरीके निकट महसेन वनमें



पहुंचे। देव भी वहाँ तुरन्त ही आ पहुँचे और उन्होंने समवसरणकी रचना कर केवलज्ञानी भगवंत श्रीमहावीर प्रभुजीको देशना देनेके

लिये विनती की। रत्नोसे सुशोभित शिखरवाले व एकके ऊपर दूसरा, एसे तीन गढोंसे रमणीय समवसरणमे विराजकर भगवानने १२ पर्षदाओंमे देशनामृतका पान कराया। ३४ अतिशयसम्पन्न प्रभुजीकी सुमधुर ध्वनिवाली यह देशना एक योजन (चार कोस) तक साफ साफ सुनाई देती थी। उसे सुननेके लिये देव, देवियां, विद्याधर, नर, नारियां, पशु, पक्षी आदि भी आये थे। देशनाका चमत्कार यह था कि उसे देव मनुष्य, पशु आदि सभी अपनी अपनी भाषामें समझ लेते थे। प्रभुजी पूर्वकी ओर मुंह किये बैठे थे, पर शेष तीनो दिशाओंमे देवोंने प्रभुजीकी सदृश तीन प्रतिमाएँ बनाकर रखी थी, इससे भगवान चारो दिशाओंमें बैठे ही है, ऐसा मालूम होता था। देशना पूर्ण होनेके बाद **गौतमस्वामी महाराज** एवं उनके भाई आदि ११ महाविद्वान ब्राह्मण और उनके शिष्य आदि मिलाकर ४४०० ब्राह्मणोंकी शंकाओंका आपने एक ही साथ समाधान कर उन्हें सन्मार्गकी ओर ले जाकर दीक्षा दी। वैशाख शु ११ के दिन आपने ११ गणधरोंकी स्थापना—तीर्थकी स्थापना एवं साधु-साध्वी श्रावक श्राविका स्वरूप श्री चतुर्विध संघकी स्थापना की। इसी प्रकार लगभग ३० साल तक आपने दिव्य देशनाएँ दी।

गोशालक नामक एक धूर्त था। वह अपनको अनंत परोपकारी प्रभुजीका शिष्य बतलाकर उनके साथ फिरता था। भगवानके लिये तो वह एक विघ्नरूप ही था। वह इतना तो दुष्ट था कि प्रभुजीने उसपर अनेकानेक उपकार किये थे, फिर भी वह मखलीपुत्र गोशालक अच्छे खानदानका न होनेके कारण प्रभुजीकी घोरतम आशातनाएँ करते भी हिचकिचाता न था। समभावी प्रभुजीने तो उसकी दया कर उसकी अनेकानेक प्रसंगोंमें रक्षा

की थी और उसे तेजोलेश्या भी सिखाई थी। पर वह गोशालक तो उपकारका बदला अपकारसे उतारनेके लिये भगवानके सामने हो गया। उसने तीर्थंकर जैसा पाखंड आडंबर किया, अपना आसन अलग ही लगाया और स्वयं जिनसे तेजोलेश्या सीखा था, उन प्रभुजीपर ही उस तेजोलेश्याका प्रयोग किया! यद्यपि इससे प्रभुजीकी आयु न घटने हुई या न कम भी हुई पर "जो गढा खोदता है, वही उसमें गिरता है (या जो जस करहि सो तस फल चाखा)"—इस लोकोक्तिके अनुसार वह तेजोलेश्या उल्टनेसे पामर गोशालककी ही मृत्यु हुई। यह गोशालक कितना दुर्जन, दुष्ट और महापापी कहायेगा! वक्र-गतिवाले महानुभाव भगवानके पश्चात आज भी हैं और इसी प्रकार वे प्रभुजीके शासनको कलंक लगे वैसे कार्य करते हैं, यह बडे ही खेदकी बात है।

गोशालकके लिये भगवानके दिलमें वैर तो था ही नहीं। क्षमानिधान प्रभुजी तो समताके भंडार थे। जो सेवा भक्ति करे उसपर राग (प्रेम) नहीं और जो निन्दा या अहित करे उसका द्वेष भावनासे कुछ बिगाडते नहीं—आप रागी और द्वेषीको और उपकारको समान दृष्टिसे ही देखते इसी लिये सभी लोग आपको 'वीतराग भगवान' समझते थे।

गोशालकको अंतिम क्षणोंमें बहुत ही दुःख व पश्चाताप हुआ—"मैं कैसा महान पापी! मेरे जैसा अधमाधम कौन होगा? मैंने उन परम पुनीत प्रभुजीके पास रहकर भी उनकी अनेकानेक आशातनाएँ की हैं!" इस प्रकार पश्चाताप करनेसे आखिर गोशालककी भावी गति सुधरी। "भगवानके शासनमें

इस पंचम कालमें इसी प्रकार गुरू-गुरूमें दुष्ट लोग सज्जनोंको हरान-परेशान करेंगे धूर्त-पाखंडी लोग संत महात्माओं-सा स्वांग बनायेंगे, पर अंतमें तो सत्यकी ही विजय होगी।"—यह रहस्य इस घटनासे सूचित किया जाता है। और आजका प्रत्यक्ष अनुभव भी यही है।

केवलज्ञान प्राप्त होनेके बाद भगवान श्रीमहावीर प्रभुजी गाँव-गावमें विहार करते और देशना देकर अनगिनत जीवोंपर अनंत उपकार करते थे। आपने **पावापुरी** पधारकर वहाँ अपना अंतिम **चातुर्मास** किया।

ओ हो हो हो हो ये कितने दीपक! घर घर और स्थान स्थानपर दीपक! दीपकोंकी तो थाह ही नहीं! इसका कारण यह है कि **आश्विन कृ ३० के दिन** (बिहार प्रदेशमें) **श्रीपावापुरी तीर्थमें** भगवान **श्रीमहावीर प्रभुजी** निर्वाण सिधारे और जिस प्रकार सूर्यास्त होनेके बाद अंधकार दूर करनेके लिये सर्वत्र दीये जलाये जाते हैं, उसी प्रकार सूर्य समान तेजस्वी ज्ञानसूर्य साक्षात प्रभुजी मोक्ष सिधारे तब ज्ञानप्रकाश करनेवाले प्रभुजीकी अनुपस्थितिमें पसरनेवाले गहरे अंधकारको फैलाने न देनेके चिह्नस्वरूप प्रभुजीके निर्वाण दिन **आश्विन कृ ३०** को लोगोंने घर घर दीपक प्रगट किये। तबसे आश्विन कृ ३० को दीपक प्रगट करनेका पर्व (त्यौहार) ही शुरू हुआ, जिसका नाम **'दिवाली'** या **'दीपावली'** रक्खा गया। (तुरंत दूसरे ही दिन) **कार्तिक शु १** को महावीर प्रभुजीके प्रथम गणधर **श्रीगौतमस्वामीजीको** प्रातःकालमें ही केवलज्ञान प्राप्त हुआ। गणधर श्रीगौतमस्वामीजी अनंत लब्धिनिधान थे.

वीर प्रभुजीके ११ गणधराम प्रधान व प्रथम थे, फिर भी गणधर श्रीसुधर्मास्वामीजीकी आयु विशेष दीर्घ होनेसे वीर प्रभुजीने श्री-सुधर्मास्वामीजीको ही समग्र परिवारके मुख्य नायकके स्थानपर नियुक्त किया था। भगवान श्रीमहावीर प्रभुजीको मोक्ष सिधार-कर आज ढाई हजार साल बीत गये है।

अतःकरणकी गहराईमसे—अति गहराईमेंसे—अति अति गहराईमसे प्रादुर्भूत होकर समग्र आत्मप्रदेशको व्यापकर मुखमेंसे निकलनेवाला 'महावीर' शब्द कितना सुदर, गभीर, भव्य और अद्भुत मालूम होता है! जिसके स्मरण उच्चारण मात्रके साथ ही हजारों क्या, पर असख्य भक्ति भावसे परिपूर्ण आत्माओंके हृदय निर्मल हो जाते है और सिर सहसा झुक जाते है, उस महान् विभूतिका कितना उपकार मान सकते है? जितना भी उपकार स्मरण करेंगे उतना कम ही है। सचमुच, भगवान श्री-महावीर देवने सम्यग्ज्ञानका सही प्रकाश डालकर इस दुनियामें धर्मके नामपर होनेवाली भयकर हिंसाएँ, अमानुष दुराचार, धर्मके आडम होनेवाले पाखड वहमी (लेकिन झूठी) मान्यताएँ आदिका भडाफोड किया। "जीओ और जीने भी दो।" और 'सभीको जीनेका अधिकार है।'—ये दोनो सूत्र आपके यथार्थ व अमूल्य उपदेश एव सदेश है। शाश्वत शातिका सत्यमार्ग बतलाकर आपने भारतभूमिपर महान उपकार किया। उस परमोपकारी महान दिव्य विभूतिने अनत जीवोका उद्धार करते हुए अपनी ७२ सालकी आयुको पूर्ण कर मोक्ष प्राप्त किया। कोटिश वदन हो, उस परमादरणीय विभूतिको!

(३) तपश्चर्याकी तालिका

तपस्याकी अवधि	कितनी बार ?
६ मास	१ बार
५ मास २५ दिन	१ बार
४ मास	९ बार
३ मास	२ बार
२ मास १५ दिन	२ बार
२ मास	६ बार
१ मास १५ दिन	२ बार
१ मास	१२ बार
१५ दिन	७२ बार
१० दिन	१ बार (सर्वतोभद्र प्रतिमा)
४ दिन	१ बार (महाभद्र प्रतिमा)
३ दिन	१२ बार (अट्ठम)
२ दिन	१ बार (भद्र प्रतिमा)
२ दिन	२२९ बार (छट्ठ)
	पारणा ३४९ बार

भगवान श्रीमहावीरदेवने दीक्षा लेनेके बाद केवलज्ञानकी प्राप्तितक साढेबारह साल इस तालिकाके अनुसार घोर तपस्या की। यह सब तपस्या निर्जल ही थी। आपकी कमसे-कम तपस्या छट्ठकी रही किसी भी समय आपने एक उपवास कर पारण नहीं किया था। आपने नित्य रूपमें तो किसी दिन भोजन पाया ही न था। साढेबारह सालभरमें आपको प्रतिदिन दो दण्ड (दो घडी या ४८ मिनट) तक ही निंद आई थी।

(४) पंचकल्याणककी तालिका

(१) च्यवन कल्याणक—आषाढ शु ६

(२) जन्म कल्याणक—चैत्र शु १३

(३) दीक्षा कल्याणक—कार्तिक कृ १० (३० सालकी आयुमें आपने दीक्षाका अंगीकार किया और बादमें साढेबारह सालतक घोर तपस्याएँ कीं।)

(४) केवलज्ञान कल्याणक—वैशाख शु १० (४२
की उम्रमें आपको केवलज्ञान हुआ।)

(५) मोक्ष कल्याणक—आश्विन कृ ३० (७२ सालक
मुमें आप मोक्ष सिधारे।)

(५) श्री चतुर्विध संघका परिवार

(१) साधु महाराज—अनंतलब्धिनिधान श्रीगौतमस्वामीज
महाराज श्रीसुधर्मास्वामीजी वगरह ११ गणधर आदि १४,००

(२) साध्वीजी महाराज—चंदनबालाजी प्रमुख ३६,००

(३) श्रावक—आनंद कामदेव आदि १,५९,०००

(४) श्राविकाएँ—सुलसा प्रमुख ३ १८,०००

भगवान श्रीमहावीरदेवका शासन २१,००० साल तक रहने
वाला है। इसमेंसे जो लगभग ढाई हजार साल बीत गये हैं, उन्हें
घटानेपर भी अभी भी साढेअठारह हजार सालतक आपका शासन
रहेगा। आपके शासनके रक्षक मातंग यक्ष और सिद्धायिका देवी हैं

(६) तीर्थस्थान

पावापुरी साचोर, क्षत्रियकुंड कुलपाक, नांदिया, महुवा,
पानसर दीआणा, मूछवाले (मुछाला) महावीर, लाल (राता)
महावीर वामनवाडा आदि भगवान श्रीमहावीरस्वामीजीके
तीर्थस्थान हैं।

ऐसा कहा जाता है कि प्रभुजीके श्रेष्ठ बंधु श्रीनंदिवर्धनजीके
नामसे श्रीनांदियाजी तीर्थ बसा है। वहाँ महाराजा श्रीनंदिवर्धनजीने
जीवितस्वामीजीकी संपूर्ण प्रमाणोंसे युक्त और सारे भारतभरमें
अद्वितीय ऐसी महान् प्रतिमा स्थापित की है। मानो साक्षात्

श्रीमहावीर प्रभुजी देशना ही दे रहे हो, ऐसी वह मूर्ति अद्भुत प्रतिभात होती है।

(७) उपसर्गोंकी संक्षिप्त जानकारी

भगवान श्रीमहावीरदेवने अनेकानेक उपसर्ग सहन किये, उनमेंसे प्रधान उपसर्गोंकी यह संक्षिप्त जानकारी है।

(१) कुमार नामक ग्राममें ग्वालेका उपसर्ग

(२) अस्थिक ग्राममें शूलपाणि यक्षका उपसर्ग

(३) श्वेताबी नगरीकी ओरके मार्गमें जंगलमें चण्डकौशिक सांपका उपसर्ग

(४) सुरभिपुरमें गंगा नदीके किनारे सुदंष्ट्र देवताका उपसर्ग

(५) हरिद्रग्रामके बाहर हरिद्रवृक्षके नीचे अग्निका उपसर्ग

(६) शालीशीर्ष गांवमें कटपूतना व्यंतरीका शीत उपसर्ग (यह जघन्य उपसर्ग है।)

(७) शालवन ग्राममें शालार्या व्यंतरीका उपसर्ग

(८) वज्रभूमिमें म्लेच्छोंका उपसर्ग

(९) दृढ भूमिमें पढाल नामक गाँवके बाहर संगमदेवने एक ही रातमें किये हुए बडे-बडे बीस उपसर्ग (संगमदेवके इन बीस उपसर्गोंमें एक उपसर्ग (१८ वा) था—प्रभुजीपर कालचक्रका प्रयोग। यह मध्यम उपसर्ग है।)

(१०) षण्मानी ग्राममें ग्वालेका उपसर्ग (ग्वालेने ठोकी हुई कीलें निकालते समयका विशेष कष्ट। यह उत्कृष्ट उपसर्ग है।)

(११) केवलज्ञान होनेके बाद गोशालककी तेजोलेश्याका उपसर्ग

(४) केवलज्ञान कल्याणक—वैशाख शु १० (४२॥ सालकी उम्रमें आपको केवलज्ञान हुआ।)

(५) मोक्ष कल्याणक—आश्विन कृ ३० (७२ सालकी आयुमें आप मोक्ष सिधारे।)

(५) श्री चतुर्विध संघका परिवार

(१) साधु महाराज—अनतलब्धिनिधान श्रीगौतमस्वामीजी महाराज, श्रीसुधर्मास्वामीजी वगैरह ११ गणधर आदि १४,०००

(२) साध्वीजी महाराज—चंदनबालाजी प्रमुख ३६,०००

(३) श्रावक—आनद कामदेव आदि १,५९,०००

(४) श्राविकाएँ—सुलसा प्रमुख ३ १८,०००

भगवान श्रीमहावीरदेवका शासन २१,००० सालतक रहने-वाला है। इसमेसे जो लगभग ढाई हजार साल बीत गये हैं उन्हे घटानेपर भी अभी भी साढ़अठारह हजार सालतक आपका शासन रहेगा। आपके शासनके रक्षक मातंग यक्ष और सिद्धायिका देवी है।

(६) तीर्थस्थान

पावापुरी, साचोर, क्षत्रियकुंड, कुल्पाक, नांदिया, महुवा, पानसर, दीआणा मूछवाले (मुछाला) महावीर, लाल (राता) महावीर, वामनवाडा आदि भगवान श्रीमहावीरस्वामीजीके तीर्थस्थान हैं।

ऐसा कहा जाता है कि प्रभुजीके श्रेष्ठ बंधु श्रीनंदिवर्धनजीके नामसे श्रीनांदियाजी तीर्थ बसा है। वहाँ महाराजा श्रीनंदिवर्धनजीने जीवितस्वामीजीके संपूर्ण प्रमाणासे युक्त और सारे भारतभरमे अद्वितीय एसी महान् प्रतिमा स्थापित की है। मानो साक्षात्

(११) गूढ़ रहस्य

★ मुझे समवसरणमें बैठनेका ऐश्वर्य प्राप्त हो, ऐसी भगवान श्रीमहावीरदेवने पूर्वभवोंमें कभी भी इच्छा न की थी। [हम मंदिरमें कैसी कैसी इच्छा-आकांक्षाएं करते हैं ?]

★ प्रभुजीने देवोंको कभी भी हुक्म नहीं दिया कि समवसरणकी रचना करो या समवसरणकी रचना क्यों नहीं की ? ऐसा दोष भी नहीं ही लगाया। [हमारे पास चंद नौकर (व कुछ धन) होनेपर हम कैसे कैसे हुक्म चलाया करते हैं ?]

★ प्रभुजीको चलनेके लिये देवतागण नौ-नौ सुवर्णकमल उनके पाँवके नीचे धरते थे। पर आप निर्मोही होनेसे न तो आपको ऐसी उत्कृष्ट सेवा भक्तिसे अभिमान होता और न आप उन सुवर्णकमलोंको ठोकर मार तितर बितर कर बड़प्पनका मद भी बतलाते। [यदि हमें किसी देवकी मदद हो, तो क्या हम धरतीपर भी चलेंगे ?]

★ जिन प्रभुजीने सौधर्मेन्द्रको सजग करनेके लिये (होशमें लानेके लिये) मेरु पर्वतको कंपित किया था वे भगवान यदि चाहते तो अपने प्रभाव बलसे अपने ५६३ पाखंडियोंका चकनाचूर कर सकते थे या उन्हें सन्मार्गपर भी ला सकते थे। पर वीतरागी प्रभुजी अपने बलका प्रयोग कर किसी भी कार्यको करना ही क्यों ? [अपना शत्रु कमजोर होनेपर क्या हम उसका अहित करनेमें (या उसकेद्वारा जबरन् अपना मनमाना काम करवा लेनेमें) कुछ कम करेंगे ?]

★ प्रभुजीने नास्तिकों व हिंसकोंद्वारा अपनी शक्तिके प्रभावसे बलात्कारसे धर्मक्रियाएं न करवायीं और न उनके कान उमेठकर जबरन धर्म करवानेकी देवेन्द्रोंको भी आज्ञा दी। वैसे ही महापापियोंको भी दंड देनेके लिये आपने देवेन्द्रोंको हुक्म न किया। आपने तो स्वयं उपसर्ग सहन किये और चंडकौशिक जैसे दृष्टिविष साँपको भी समक्षा कर क्षमाका प्रायोगिक पाठ पढ़ाकर बुझाया। [इस प्रकार दूसरोंको

(८) चातुर्मासकी तालिका

भगवान श्रीमहावीरस्वामीजीके दीक्षासे निर्वाणतक कुल ४२ चातुर्मास हुए। उनकी यह तालिका है।

(१) राजगृही नगरीके नाल्दा पाडा (मुहल्ले)में १४	(६) अस्थिक ग्राममें १
(२) वैशाली नगरीमें १२	(७) आलभिका नगरीमें १
(३) मिथिला नगरीमें ६	(८) श्रावस्ती नगरीमें १
(४) पृष्टचपापुरी नगरीमें ३	(९) वज्रभूमिमें १
(५) भद्रिका नगरीमें २	(१०) मध्यपापामें (पावापुरीमें) १

(९) निकटके रिश्तेदार

माता—त्रिशलादेवी पिता—महाराजा सिद्धार्थ मामा—चेडाराजा पत्नी—यशोदा पुत्री—प्रियदर्शना दामाद—जमाली भाई—नंदिवर्द्धन बहन—सुदर्शना

(१०) तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन करनेवालोंके नाम

भगवान् श्रीमहावीर स्वामीजीकी निश्रा (सान्निध्य)में (१) श्रेणिक (२) राजा सुपार्श्व (३) उदायी (४) पोटिल (५) दृढायु (६) शंख श्रावक (७) शतक श्रावक (८) सुलसा और (९) रेवती—इन्होंने तीर्थंकर नामकर्मका उपार्जन किया।

(११) गूढ रहस्य

★ मुझे समवसरणमें उठनेका ऐश्वर्य प्राप्त हो ऐसी भगवान श्रीमहावीरदेवने पूर्वभवोमें कभी भी इच्छा न की थी। [हम मंदिरमें कैसी कैसी इच्छा आकांक्षाएं करते हैं?]

★ प्रभुजीने देवोंको कभी भी हुक्म नहीं किया कि समवसरणकी रचना करो या समवसरणकी रचना क्यों नहीं की? ऐसा दावा भी नहीं ही लगाया। [हमारे पास चंद नौकर (व कुछ धन) होनेपर हम कैसे कैसे हुक्म चलाया करते हैं?]

★ प्रभुजीको चलनेके लिये देवतागण नौ-नौ सुवर्णकमल उनके पाँवके नीचे धरते थे। पर आप निर्मोही होनेसे न तो आपको वैसी उत्कृष्ट सेवा भक्तिसे अभिमान होता और न आप उन सुवर्णकमलोंको ठोकर मार तितर बितर कर बडप्पनका मद भी बतलाते। [यदि हमें किसी देवकी मदद हो, तो क्या हम धरतीपर भी चलेंगे?]

★ जिन प्रभुजीने सौधर्मेंद्रको सजग करनेके लिए (बाल्यमें खेलनेके लिये) मेरु पर्वतको कंपित किया था वे भगवान यदि चाहते तो अपने प्रभाव बलसे अपने ५६३ पाखंडियोंका चकनाचूर कर सकते थे या उन्हें सन्मार्गपर भी ला सकते थे। पर वीतरागी प्रभुजी अपने बलका प्रयोग कर किसी भी कार्यको करते ही कम? [अपना शत्रु कमजोर होनेपर क्या हम उसका अहित करनेमें (या उसके द्वारा जबरन अपना मनमाना काम करवा लेनेमें) कुछ कम करेंगे?]

★ प्रभुजीने नास्तिकों व हिंसकोंद्वारा अपनी शक्तिके प्रभावसे बलात्कारसे धर्मक्रियाएं न करवायी और न उनके कान उमठकर जबरन् धर्म करवानेकी देवेंद्रोंको भी आज्ञा दी। वैसे ही महापापियोंको भी दंड देनेके लिये आपने देवेंद्रोंको हुक्म न किया। आपने तो स्वयं उपसर्ग सहन किये और चंडकौशिक जैसे दृष्टिविष सर्पको भी समझा कर क्षमाका प्रायोगिक पाठ पढाकर बुझाया! [इस प्रकार दूसरोंको

समझाकर सुशालकी समता व क्षमा अगर भी हमारेमें है या कैसे ?]

★ सामायिककी अनुमोदना कर भावभावन करनेवाले देवदेवेन्द्रोंद्वारा भी प्रभजान स्वामीके अधिकारसे या विनयरूपमें (अपवादके तौर पर) भी सामायिककी आराधना नहीं करवायी। इसका कारण यह है कि देवेन्द्रोंके भाग्यमें ही सामायिक नहीं होता। [और हमारे भाग्यमें सामायिक है फिर भी यदि हम सामायिक नहीं करेंगे तो यह हमारा कितना बड़ा दुर्भाग्य !]

★ जन्मके साथ ही मेरु पर्वत जैसे महापर्वतको कंपित करनेकी जिनकी अमित शक्ति और अपरंपार बल है ऐसे परमत्यागी प्रभुजीने देवोंको मेरे लिए समवसरणकी रचनाका समारोह क्यों किया ? मुझे क्यों न पूछा ? ऐसा मुँह चढ़ाकर क्या आपलोग मेरी दिल्लगी और केवलज्ञानका उपहास करना चाहते हैं ? क्या सामान्य पत्थरकी शिलापर बैठकर देशना नहीं दी जाती ? इस प्रकार डाँट-डपट क्यों नहीं किया ? और इस प्रकार दोष लगाकर देवोंने भक्ति भावसे सजाये हुए समवसरणको पाँवके नीचे चकनाचूर करते प्रभुजीको समय भी कितना लगनेवाला था ? समवसरणकी रचना आदि सब बातें जो वीतरागी अवस्थाके लिये असंगत ही होती तो वीतरागी प्रभुजीने उनका नाश क्यों नहीं किया ? [ऐसा होते हुए भी जिनमंदिरोंमेंकी आंगी आभूषण आदिको वीतरागीपनके साथ असंगतदृष्टिसे देखनेवाले और शादीमें महीन रेशमी व पूजाके लिये मोटा सूता वस्त्र पसंद आनेवाले हम कैसे ? शादीके प्रसंगोंमें सब के-सब हाजिर रहनेवाले और धार्मिक समारोहोंके मौकेपर किसी तरह (राम राम करते) पाँच-दस एकत्रित होनेवाले हम कितने हीनभागी ! मंदिरोंमें चलचित्त पर सिनमा घरोंमें स्थिर चित्त होनेवाले हम कैसे कहलायेंगे ?]

सूर्य और चन्द्रमाके तेजको भी आसान बना देती थी। सचमुच अपरंपार तपस्या ही का वह तेज था? [फिर भी स्नो पॉमेड या या वदरसे या दिनमें तीन बार नहानेसे सौन्दर्यका आविर्भाव होता है या खूबसूरती बढ़ती है ऐसा माननेवाले हम कैसे?]

★ प्रभुजीकी एक ही अंगुलीका भी झुकानेके लिये असंख्य देव देवेन्द्र असमर्थ थे। इतना तो था भगवानका अपरिमित बल! [व्यायाम कसरत करनेसे इस नश्वरके कितने अंशके बलकी प्राप्ति होती होगी? वास्तविक बल तो पुण्यके ही आधीन हो सकता है। कृत्रिम (जबरन प्राप्त किया हुआ) बल तो प्राय पाशविक ही होता है।]

★ तीर्थंकर प्रभुजीके पुण्यकी भी सीमा न थी। आपके चरणकमलोंकी आदर सवामें असंख्य देव-देवेन्द्र हरदम हाजिर रहते थे। आपको सूनी धरतीपर पाँव भी रखने नहीं देते व तुरन्त ही आपके चरण कमलोंके नीचे नौ सुवर्णकमल धर देते थे। फिर भी आपमें गर्व या अहंपनका नाम निशान तक न था। [सवा सौकी तनख्वाह या (सालाना) पाँच हजारकी आमदनी हो जानेपर बिना साइकिल या मोटारके कहीं भी जानेमें अपनी प्रतिष्ठा (स्टेटस या पोजिशन) में कमी (कोताही) माननेवाले हम अपने पुण्यका घमंड करनेमें कितने वास्तविक हैं?]

★ उन प्रतापी महापुरुषका प्रभाव भी एक अद्भुत बात थी। आप जहाँ जहाँ जाते वहाँ वहाँ ५०० कोसतक अकाल, भय रोग आदि उपद्रवोंका नाम निशानतक न रहता था। और वह भी किसी एक ही दिशामें नहीं किंतु ऊर्ध्व अधो और आठों दिशा विदिशाओंमें! वाह! कितनी दिव्य महिमा! [यदि हम १०–१५ लोग किसी मरीजके पास जायेंगे तो रोगीका दर्द बढ़ायेंगे या उसे दुःख रहित बनायेंगे?]

★ उस दिव्य विभूतिको भूत भविष्य और वर्तमान इन तीनों कालोंका आश्चर्यजनक ज्ञान था। [कलका खाया हुआ भी आज हमारे

ख्यालमें कहाँ रहता है ? रहा हुआ भी कहाँ भूल नहीं जाते ? दीवारकी ओटमें क्या हो रहा है, वह भी हम नहीं जान सकते। फिर भी हम पढ़ लिख और पहुँचे हुए विद्वान हैं।" ऐसा कितना बड़ा भारी (निकम्मा) अहंकार हम रखते हैं ? वीतरागियोंके मार्गसे हम कितनी दूरीपर हैं हमारी परिस्थिति (अवस्था) कितनी विपरीत है ?]

★ वे परमात्मा जब विहार करते तब मार्गमें काँटे उल्टे हो जाते थे ? [हम तो यदि नीचे देखकर भी चलेंगे तो भी हमें काँटे चुभेंग । और यदि ऊपर ही देखकर चलेंगे तब तो या तो ठोकर लगेगी या गड्ढेमें गिर जायेंगे और काँटे न चुभते हों वे प्रथम चुभेंगे ! हमारी रूमोंतकमें (सेंटकी सुगंधि होगी पर किसी गुणकी महक मिलना मुश्किल है ।]

★ उन महान् और पुण्यशाली प्रभुजीकी देशनाका अद्भुत चमत्कार यह था कि उसे सभी लोग अपनी अपनी भाषामें समझ लेते थे। देव, मनुष्य तिर्यंच आदि भी उस देशनाको(अपनी अपनी भाषामें) तुरन्त ही समझ जाते थे । प्रभुजी मागधी भाषामें मालकोश रागमें देशना देते और उसे तोता व बाघ या मद्रासी व बंगाली अपनी अपनी भाषामें समझ जाते यह तो सचमुच बड़ ही आश्चर्यकी बात है । [आज इस पृथ्वीपर बारह भाषा जाननेवाला पंडित मिलनेकी संभावना है पर एक ही भाषामें प्रवचन दिया जाता हो और उसे अनेक भाषा भाषी लोग समझ लेते हों ऐसा कहीं भी देखा सुना हो नहीं जाता ।]

★ उन महापुरुषकी देशनाका प्रभाव ऐसा था कि उसे सुननेवाले किसी को भी भूख प्यास, थकावट नींद आदिका उपद्रव ही नहीं होता । [वक्ता और श्रोता दोनों ही प्रमादी हों, दोनों ही स्वार्थी हों और दोनोंके चारित्रपालनमें न्यूनता (कमी) हो, तो फिर दोनों एकरस कैसे होंगे ? (दोनों तादात्म्यका अनुभव कैसा कर सकेंगे ?) वक्ता पूर्ण उपकारी परमार्थी हो और श्रोता सच्चा जिज्ञासु हो तभी ऐसा मेल हो सकता है ।]

★ सम्यक्त्वकी प्राप्तिके अनंतर २७ भवों (जन्मों)के बाद ही वे महान् और वभवशाली प्रभुजी केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्षपदको पहुँच सके। [तब तो हमारे अभी कितने भव शेष ह, यह तो महाज्ञानी और महाश्रुतधर ही जानें। सम्यक्त्वके ६७ लक्षणोंमेंसे हमारेमें एकका भी तो वास्तविकरूपसे ठिकाना (अस्तित्व) दिखाई नहीं देता अर्थात् लगभग सम्यक्त्वका ही ठिकाना मालूम नहीं पडता तो फिर केवलज्ञान और मोक्षकी बात ही कहाँ? (मान बात भी कसे हो सकती?)]

★ भगवान श्रीमहावीरदेवन (राजपुत्र नंदनके पचीसवे भवमें) तीर्थकर नामकर्म उपार्जन करनेके बादके भवोंमें (जन्मोंमें) त्रिदंडी जसा भेष धारण नहीं किया। पर नयसारके भवमें सम्यक्त्व पानेके बाद देखेंगे, तो कभी आपने मिथ्या प्ररूपणा भी की ह तो कभी त्रिदंडी भी हुए ह और कभी चारित्रकी आराधना भी किया ह। अत एव तीर्थकरोंके विरुद्ध गाल बजानेवाले त्रिदंडी जसे भेषमें रहनेवाले गरुआ वस्त्र पहननेवाले अन्य भेषधारी आदि जो अनेक लोग इस दुनियामें फिरते हैं, उनमें भावीमें तीर्थकर होनेवाली पवित्र आत्मा नहीं ही होगी, एसा हम नहीं कह सकते। इस कारणसे भी अन्य धर्मके किसी (साधु या अनुयायी) का तिरस्कार नहीं करना चाहिये। अन्य धर्मवालोंको भी खमाना (उन्हें क्षमा करना और उनसे क्षमा चाहना) चाहिये। और इसी कारणसे पृथ्वीकायसे पचेन्द्रियतकके सभी जीवोंको हमें बारबार खमाना चाहिये। [अहिंसा धर्मकी जडें कितनी (पाताल तक) औंडी गई हुई ह और जीवमात्रको खमानेमें कितना गहन रहस्य भरा हुआ है, इसका चिंतन हम प्रतिदिन कितनी बारतक करते ह?]

★ भगवान श्रीऋषभदेवजीसे महाराजा भरतजीको पता चला कि मेरा पुत्र मरीचि, जो कि त्रिदंडीके भेषमें ह, भविष्यमें तीर्थंकर होनेवाला ह। तब भरतजीने मरीचिके पास जाकर उसके भेषका अपमान नहीं किया (अपितु नमस्कार ही किया)। महाराजा भरतजीका यह कितना बड़ा गांभीर्य गुण कहा जायगा? [दूसरोंको अवाय

(अनुचित कार्य) करते हुए देखकर क्या हम कभी भी पूर्ण गंभीर होकर उनकी निर्बलता और गहनतापर विचार (चिन्तन) करते हैं ?]

★ प्रभुजी केवलज्ञानके प्रभावसे सब के सब लोगोंके दोष (और पाप कर्म) जानते थे, पर आपने समवसरणमें किसीके भी दोषोंको प्रगट नहीं किया। यह बात आपका अनंत गांभीर्य सूचित करती है। [दूसरोंके सच्चे झूठे दोषोंको जाहिर करनेमें हम कैसे व कितने बड़े चतुर हैं !]

★ त्यागी साधु महाराजोंको सही रास्ता बतानेवाली आत्मा ही श्रीतीर्थंकर जैसे आदरणीय पदको भी प्राप्त कर सकती है। इसलिये, भगवान श्रीमहावीरदेवकी आत्माने नयसारके भवमें इसी प्रकार द्रव्यमार्ग बतलानेसे ही मोक्षके भावमार्गकी प्राप्ति की। [एकांत स्वार्थका त्याग कर हम कितने जीवोंको सन्मार्ग बतलाते हैं ? या कितने जीवोंको सच्ची सलाह देते हैं ?]

★ भगवान श्रीमहावीरस्वामीजीको जन्मसे ही निर्मल अवधिज्ञान था। अत एव आप जानते थे कि अपने अनन्य भक्त श्रीइन्द्रभूतिजी प्रथम गणधर होनेवाले हैं। फिर भी आपने यह बात उन्हें अपने ज्ञान प्रभावसे बताई भी नहीं और उन्हें पहले बुलाया भी नहीं। जब इन्द्रभूतिजी सन्मान करनेके लिये आपके पास आये तभी सर्व प्रथमकी बातचीत हुई। वैसे तो क्षत्रियकुंड और कुंडलपुर, दोनों कोई विशेष दूरीपर भी नहीं हैं फिर भी इतनी गंभीरता आप ज्ञानी भगवंतने बताई—यही आपका बड़प्पन ! [हम कुछ थोड़ा सा भी क्यों न जानते हों पर चार आदमियोंके बीचमें ही (ऐंठकर) बोलेंगे ! मनमें गर्व होगा— मैं भी कुछ हूँ ! ' यह कितनी हीनता !]

★ भगवान जैसी सर्वश्रेष्ठ आत्माकी मृत्यु कभी भी फांसीसे गोलीसे लोटाभर पानीके लिये (प्याससे) या कुएँमें गिरकर नहीं ही होती। उत्तम आत्माकी अपमृत्युसे मौत आती ही नहीं। अपमृत्युसे मरने वाला देव हो ही नहीं सकता। जीवमात्रका उद्धार करनेवाले प्रभुजीका निर्वाण शांतिसे और सुखमय ही होता है, नहीं कि दुःखपूर्ण।

[उत्तम गतिके लिये आखिरी क्षण भी शांतिमय ही होने चाहिये —एसा समझकर हम समाधिके लिये कितना प्रयास करते हैं ?]

★ उत्सूत्रकी प्ररूपणा करनेवालेका भी तिरस्कार नहीं ही करना चाहिये। कारण यह है कि प्रभुजीकी आत्माने भी मरीचिके जन्ममें उत्सूत्र प्ररूपणा की थी मनमाना त्रिदंडीका भेष धारण किया था और भवभ्रमण बढाया था। इसी लिये अन्य मतके अनुयायियोंमें किसी तीर्थंकरकी आत्मा हो ही नहीं सकती, एसा हम नहीं कह सकते। जिनवचनके खिलाफ आचरण करनेवालोंका अपमान करनेमें किसी तीर्थंकरकी आत्माका अपमान हो जानेसे, क्या आशातना न होगी ? कर्मकी गति गहन है और आत्मा कर्मवश होनेसे समभावनाकी साधना करनी चाहिये। [हम तो अभिमानके बस होकर प्रतिदिन अनकों बार अनेकोंका तिरस्कार करते होंगे !]

★ आगे चलकर समवसरणमें बैठकर जो सारी दुनियाको मोक्ष और विश्व बंधुत्वका यथार्थ उपदेशपूर्ण संदेशा देनेवाले थे और जिन्हे जन्मसे ही महान् अवधिज्ञान था एसे प्रभुजीको पढनेके लिए शालामें दाखिल करनेका तय किया गया। प्रभुजी धूम धामसे जुलूसके साथ पंडितजीके पास भी पहुँचे। पर आखिरतक आप गंभीर रहे। "मैं ज्ञानी हूँ और आप सब यह क्या कर रहे हैं ?" एसा आपने कहा भी नहीं। यह आपका कितना अगाध गांभीर्य ! [हममें एसी गंभीरता कब आवेगी ?]

(१२) प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १—भगवान् श्रीमहावीरदेवकी आत्माको किस भवमें और कैसे संयोगोंमें सम्यक्त्वकी प्राप्ति हुई ?

उत्तर—नयसारके पहले भवमें भगवान् श्रीमहावीरदेवने जंगलमें मार्ग भूले हुए मुनिराजको गोचरीका दान देनेका लाभ उठाया। मुनिराजको सुख हुआ देखकर नयसार हर्षित हुए और मुनिराजको सही रास्ता बतलानेके ... या

निकले। रास्तेमें मुनिराजने नयसारको उपदेश दिया, "हे भाग्यशाली! यह तो आपने द्रव्यमार्ग बतलाया पर सत्य स्वरूप तो भावमार्ग ही है। सुदेव सुगुरु और सद्धर्मकी यथार्थ पहचान होना ही भावमार्ग है।" यह उपदेश सुनकर नयसार-(-के भवमें भगवान् श्रीमहावीरस्वामाकी आत्मा-)-को सम्यक्त्वका प्राप्ति हुई।

प्रश्न २—भगवान् श्रीमहावीरदेवने नीचगोत्रके कर्मका बंध किस भवमें और किस कारणसे किया?

उत्तर—भगवान् मरीचिके भवमें त्रिदंडी हुए थे तब महाराजा भरतजीने आपको भावीके तीर्थंकर समझकर वंदन किया। यह देखते सुनते ही आपने (= भगवानकी आत्माने) मरीचिके भवमें अपने कुलका बहुत ही अभिमान किया और नाचने-कूदने भी लगे। इस कुलमदके कारण आपने नीच गोत्रका कर्मबंध किया।

प्रश्न ३—भगवान् श्रीमहावीरस्वामीकी आत्माने अपना भवभ्रमण किस कारणसे बढाया?

उत्तर—भगवान् मरीचिके भवमें थे तब कपिल नामक किसी कुलपुत्रने आपसे धर्मके बारेमें कुछ पूछा। उस समय आपने जवाब दिया, "भगवान् श्रीऋषभदेवजीके साधुओंके पास धर्म है, तो मेरे पास भी धर्म है। आदि।" इस प्रकार उत्सूत्र-प्ररूपणा करनेसे आपने अनंत भवोंका भ्रमण बढाया। सिद्धान्तोंके खिलाफ बकबक (अपलाप) करना ही उत्सूत्र-प्ररूपणा है, जो एक प्रकारका महापाप है।

प्रश्न ४–श्रीमहावीर प्रभुजीने २७ भवोंमें कौन-कौनसी बड़ी ऋद्धियाँ पायीं ?

उत्तर–प्रभुजी (१) १८ वें भवमें त्रिपृष्ठ नामक 'वासुदेव' (२) २३ वें भवमें महाविदेहमें प्रियमित्र नामक 'चक्रवर्ती' (३) और २७ वें भवमें तो साक्षात् महावीरस्वामी नामक 'तीर्थंकर' हुए—आपने ये तीन ऋद्धियाँ पायीं।

प्रश्न ५–श्रीमहावीर प्रभुने नंदन मुनिके भवमें कितनी तपस्या की और उससे आपको क्या लाभ हुआ ?

उत्तर–प्रभुजीने नंदन मुनिके २५ वें भवमें (इस भवमें आप प्रथम राजपुत्र थे और बादमें मुनिराज हुए।) २५ लाख वर्षकी आयुमें १ लाख सालतक चारित्रका पालन कर ११ लाख ८० हजार ६४५ मासखमण (या मासक्षमण) करनेके साथ ही श्रीबीसस्थानक पदकी आराधना की। इससे आपने तीर्थंकर नामकर्मका उपार्जन किया।

प्रश्न ६–श्रीमहावीरस्वामीजी प्रथम ब्राह्मणकुलमें क्यों आये और वहाँसे ८२ दिनोंके बाद देवने आपको क्षत्रियकुलमें क्यों रक्खा ?

उत्तर–प्रभुजीने मरीचिके भवमें जो नीचगोत्रका कर्मबंध किया था, उसका भोग ८२ दिनका ही शेष रह गया था। अतः ८२ दिन ब्राह्मणकुलमें रहनेके बाद ८३ वें दिन वह कर्मभोग पूरा होते ही शक्रेन्द्रका आसन कंपित हुआ। और इन्द्र महाराजाने भी अपना कर्तव्य समझकर देवद्वारा हेरफेर कर क्षत्रियकुलमें राजा श्रीसिद्धार्थजीके घर आपको रखवाया।

प्रश्न ७–श्रीवीरप्रभुजीने गर्भमें कौनसा अभिग्रह लिया था ?

उत्तर–माता-पिताके स्नेहके कारण प्रभुजीने गर्भमें हिलना-चलना बंद कर दिया था, पर इससे माताजीको बहुत ही दुःख हुआ। आपको ज्ञानके बलसे इसका पता चला। इसी लिये आपने माताजीका प्रेम देखकर गर्भमें ही अभिग्रह लिया कि माता-पिताजी होंगे तबतक मैं दीक्षाका अंगीकार नहीं करूँगा।

अभी हम इस प्रकार अभिग्रह नहीं ले सकते। कारण यह है कि प्रभुजीको अवधिज्ञान था, हमें वैसा ज्ञान नहीं है। प्रभुजीका आयु पूरी होनेवाली न थी, पर हमारी उम्रका मकान ही कहाँ है? प्रभुजीने भी तो यह अभिग्रह जन्मके पूर्व ही लिया था, जन्मके बाद नहीं; क्योंकि जन्मके बाद ऐसी (अनुकूल) परिस्थिति प्राप्त होना भी असंभव ही है। 'हम भी प्रभुजीके जैसा अभिग्रह ले सकते हैं,' ऐसी बातें करनेवालोंको तो चाहिये कि वे माता-पिताजीके स्वर्ग सिधारनेके बाद तुरत ही दीक्षा ग्रहण करें––ऐसा साफ साफ मतलब होता है। पर हमारी वास्तविक परिस्थिति यह है कि माता-पिताजीके बाद तो सभी मामला हमारे ही सिर आ जाता है और दीक्षा लेनेमें कई विघ्न बाधाएँ खडी हो जाती हैं। ये ही सब कारण हैं कि जिनसे हम प्रभुजी-सा अभिग्रह नहीं ले सकते।

प्रभुजीके अभिग्रहमें माता पिताजीके प्रति नितांत प्रेम

प्रभुजीके इस अभिग्रहसे मातापिताजीकी सेवा-भक्ति करनेकी ही शिक्षा लेनी चाहिये।

प्रश्न ८–प्रभुजीका 'महावीर' यह नाम किसने रखा ?

उत्तर–प्रभुजी आमलकी क्रीडा खेल रहे थे कि कोई एक देव भगवानकी परीक्षा लेनेके लिये आया, पर वह स्वयं ही पूरी तरह हार गया। इसी लिये उस देवने प्रभुजीका नाम '**महावीर**' रखा। माता-पिताजीका रखा हुआ नाम तो 'वर्द्धमानकुमार' था ?

प्रश्न ९–'जैनेन्द्र' व्याकरणकी रचना कब हुई ?

उत्तर–माता-पिताजीके स्नेहके वस होकर प्रभुजी पढाईके लिये पाठशालामें गये। महाराजा इन्द्रको अवधिज्ञानके प्रभावसे इस बातका पता चला कि वे तुरत ही ब्राह्मणके रूपमें वहाँ हाजिर हो गये। पढानेवाले पंडितजीके दिलमें जिनके लिये उलझन थी, ऐसे कई प्रश्न उस ब्राह्मणने (अर्थात् इंद्रने) प्रभुजीसे पूछे और प्रभुजीने उनके जवाब बिलकुल ठीक-ठीक देकर मानो पंडितजीकी शंकाओंका समाधान ही कर दिया। यह सब देखते सुनते ही पंडितजीने प्रभुजीको नमस्कार किया। बादमें उस ब्राह्मणने कहा कि मैं इंद्र हूँ और ये तो साक्षात् महाज्ञानी प्रभुजी हैं। इन्हें पढनेकी जरूरत ही नहीं हो सकती। ये तो स्वयंबुद्ध ही हैं। सभी लोग यह सब देखकर विस्मित ही हो गये। इसी समय

(२) प्रधान तीर्थोंका संक्षिप्त परिचय

नाम	तीर्थस्थल	श्रीतीर्थंकर प्रभुजी	नजदीकका स्टेशन	विशेष जानकारी
(अ) गुजरात				
(१)	शंखेश्वरजी	पार्श्वनाथ	विरमगाम	गत चौवीसीके अप्रतिम चमत्कारी प्रभुजी राधनपुर ३४ मील
(२)	भोयणी	मल्लिनाथ	भोयणी	घेलडा स्टेशन ३ मील
(३)	मातर	सुमतिनाथ	महेमदावाद	खेडा ४ मील नडियाद १४ मील
(४)	पानसर	महावीरस्वामी	पानसर	गांवमें भी जिनालय है।
(५)	कावी	ऋषभदेव धर्मनाथ	कावी	जंबूसर १६ मील खंभात २२ मील
(६)	सेरिसा	पार्श्वनाथ	कलोल	माघ महीनेमें मेला भरता (उत्सव होता) है। वामज ५ मील
(७)	देलवाडा (आबु)	नेमनाथ-आदिनाथ	आबुरोड	अचलगढ ५ मील ओरिया ४॥ मील
(८)	गंधार	पार्श्वनाथ महावीरस्वामी	भडोच	आमोद २० मील
(९)	इडर (पहाड)	शांतिनाथ	इडर	शत्रुंजय उज्जयंतावतार मंदिर है।
(१०)	तारंगागिरि	अजितनाथ	तारंगाहिल	महाराजा कुमारपालका बंधाया हुआ तीर्थस्थान

क्रमांक	तीर्थस्थल	श्रीतीर्थंकर प्रभुजी	नजदीकका स्टेशन	विशेष जानकारी
(११)	भरुचिया	आदिनाथ	भरुचिया	अंक्लेश्वरसे छोटी लाईनमें सुरत ४५ मील

(आ) सौराष्ट्र

(२)	श्रीशत्रुंजयगिरि	आदिनाथ	पालिताणा	पहाड नौ (९) टूक (शिखर अर्थात् विशेष विशेष स्थान) सकडों शिखरबंधी मंदिर है।
(३)	तलाजागिरि	सुमतिनाथ	तलाजा	पहाड तालध्वजगिरि ३ टूक (शिखर)
(४)	गिरनारगिरि	नेमनाथ	जुनागड	पहाड ५ टूक (शिखर) नेमनाथ प्रभुजीके तीन कल्याणक यहीं हुए।
(५)	घोघाबंदर	नवखंडा पार्श्वनाथ	भावनगर	मोटररोड चमत्कारी मूर्ति
(६)	अजारा	पार्श्वनाथ	वेरावल	प्राचीन प्रतिमाजी
(७)	कदंबगिरि	आदिनाथ	पालीताणा	पालिताणा ८ मील गत चौवीसीके दूसरे तीर्थंकर श्रीनिर्वाणी प्रभुजीके गणधर श्रीकदंबजीका निर्वाण स्थल

(इ) बंगाल-बिहार

)	सिंहपुरी	श्रेयांसनाथ	सारनाथ	चार कल्याणक काशी ६ मील (मोटर)
)	चंद्रपुरी	चंद्रप्रभु शांतिनाथ	,	चार कल्याणक काशी १४ मील (मोटर)

क्रमांक	तीर्थस्थल	श्रीतीर्थंकर प्रभुजी	नजदीकका स्टेशन	विशेष जानकारी
(२०)	अयोध्या	आदिनाथ	अयोध्या	पांच कल्याणक कटरा महल्ला फैजाबाद ४ मील
(२१)	अष्टापद	इस चौबीसीके सब प्रभुजी	(विच्छेदतीर्थ)	आदिनाथ निर्वाण उत्तर हिमालय, कैलास आदि
(२२)	बिहार शरीफ	आदिनाथ	बिहार शरीफ	तुंगिया नगरी श्रावक धर्मशाला (सराय)
(२३)	सौरीपुर	नमिनाथ	शिकोहा	च्यवन जन्म कल्याणक
(२४)	क्षत्रियकुंड	महावीरस्वामी	लखीसराई जमुई	पहाड जन्म दीक्षा कल्याणक सिकंदराबाद ३ मील
(२५)	हस्तिनापुर	१६ १७ १८	मीरत	बारह कल्याणक मुवानासे मोटर
(२६)	ऋजुवालिका	महावीरस्वामी	गिरडी	केवलज्ञान कल्याणक समेतशिखर ८ मील बीचमें बाकर नदी
(२७)	श्रीसमेतशिखर	पार्श्वनाथ	गिरडी-पारसनाथ	बीस प्रभुजीका मुक्तिधाम मधुवन कलकत्ता २१५ मील
(२८)	चंपापुरी	वासुपूज्यस्वामी	भागलपुर जंक्शन	चार कल्याणक भागलपुर २ मील धर्मनाथ मंदिर
(२९)	पावापुरी	महावीरस्वामी	बिहार शरीफ	प्रभुजीका प्रथम व अंतिम समवसरण ४४०० की दीक्षा और निर्वाण भूमि
(३०)	कुंडलपुर	गौतमस्वामी	नालंदा	गौतमस्वामीजीकी जन्मभूमि बिहार ७ मील (बडगांव)
(३१)	राजगृही	मुनिसुव्रतस्वामी	राजगीर	पांच पहाड चार कल्याणक छोटी रेल्वे लाईन (मोटर
(३२)	गुणियाजी	महावीरस्वामी	नवादा	जलमंदिर गुणशील चैत्य नवादा १॥ मील
(३३)	काकंदी	सुविधिनाथ	लखीसराई जमुई	चार कल्याणक (मोटर)

क्रमांक	तीर्थस्थल	श्रीतीर्थंकर प्रभुश्री	नजीकका स्टेशन	विशेष जानकारी
(ई) राजस्थान-मध्यभारत				
(३४)	धुलेवाजी (केशरियाजी)	आदिनाथ	उदयपुर	केशरियाजी उदयपुर ४० मील उदयपुरमें ३५ मंदिर
(३५)	नांदिया	जीवितस्वामी	सज्जन रोड	बामणवाडजी ४ मील सिरोही १४ मील
(३६)	साचोर	महावीरस्वामी	डीसा	पालेरा ३४ मील भिलडिया ६० मील
(३७)	मांडवगड	सुपार्श्वनाथ	मऊ	शांतिनाथ (पहाड)
(३८)	राणकपुर	आदिनाथ	फालना	तीन मंदिर त्रलोक्य दीपक राणीस्टेशन ११ मील माघ फाल्गुन कृ १० और आश्विन श १३ को उत्सव (मेला)
(३९)	जिरावला	पार्श्वनाथ	डीसा	आबू १८ मील भाद्रपद शु ४-६ को उत्सव (मेला)
(४०)	जेसलमेर	,	बाडमेर	प्राचीन ग्रंथ भंडार (मोटार)
(४१)	लोद्रवा	,	"	जसलमेर १७ मील
(उ) महाराष्ट्र विदर्भ				
(४२)	कुंभोज	जगवल्लभ पार्श्वनाथ	हायकलगडा	मीरज १७ मील कोल्हापुर १३ मील (सांगली) कार्तिक चत्र शु १५ को उत्सव (मेला)

ं	तीर्थस्थल	तीर्थंकर प्रभुजी	नजदीकका स्टेशन	विशेष जानकारी
(३)	कुलपाक	आदिनाथ	आलेर	माणेकस्वामी हर्षकारक महावीर
(४)	भांदक (भद्रावती)	पार्श्वनाथ	भांदक	केसरिया पार्श्वनाथ का मंदिर चांदा १८ मील
(५)	सिरपुर (अंतरिक्ष)	अंतरिक्ष पार्श्वनाथ	आकोला	अंतरिक्षमें (बिना किसी आधारकी) मूर्ति बालापुर ४८ मील
ऊ) कच्छ				
(६)	भद्रेश्वर	महावीरस्वामी	अंजार	छकड़ा (बलगाड़ी स्थानिक नाम रेंकड़ो) व ऊंटकी सवारी।

(३) सोलह सतियोंके नाम

(१) ब्राह्मी (२) सुंदरी (३) चंदनबालाजी (४) राजीमतीजी (५) द्रौपदी (६) ...ल्या (७) मृगावतीजी (८) सुलसा (९) सीताजी (१०) सुभद्रा (११) शिवा (१२) कुंता ...) शीलवती (१४) दमयंती (१५) प्रभावती या पुष्पचूलाजी (१६) पद्मावती

नीचेके पद्यमें (शार्दूलविक्रीडित वृत्तमें) इन्हीं सोलह महासतियोंके नाम हैं—

ब्राह्मी चंदनबालिका भगवती, राजीमती द्रौपदी
कौशल्या च मृगावती च सुलसा, सीता सुभद्रा शिवा।
कुंती शीलवती नलस्य दयिता, चूला प्रभावत्यपि
पद्मावत्यपि सुंदरी दिनमुखे कुर्वंतु वो मंगलम् ॥ १ ॥

(४) चौबीस तीर्थकरोंके नाम और लछन

क्रमांक	प्रभुजी	लछन	क्रमांक	प्रभुजी	लछन
१	श्रीऋषभदेवस्वामीजी	सांड (या बैल)	१२	श्रीवासुपूज्यस्वामीजी	महिष (भैंसा)
२	श्रीअजितनाथजी	हाथी	१३	श्रीविमलनाथजी	बाराह
३	श्रीसंभवनाथजी	घोड़ा	१४	श्रीअनंतनाथजी	श्येन (बाज) पक्षी
४	श्रीअभिनंदन-स्वामीजी	वानर	१५	श्रीधर्मनाथजी	वज्र
५	श्रीसुमतिनाथजी	क्रौंचपक्षी	१६	श्रीशान्तिनाथजी	हिरन
६	श्रीपद्मप्रभस्वामीजी	कमल	१७	श्रीकुंथुनाथजी	बकरा
७	श्रीसुपार्श्वनाथजी	स्वस्तिक	१८	श्रीअरनाथजी	नंदावर्त (एक स्वस्तिक)
८	श्रीचन्द्रप्रभस्वामीजी	चंद्र	१९	श्रीमल्लिनाथजी	कुंभ (घड़ा)
९	श्रीसुविधिनाथजी	मकर (मत्स्य)	२०	श्रीमुनिसुव्रतस्वामीजी	कछुआ
१०	श्रीशीतलनाथजी	श्रीवत्स	२१	श्रीनमिनाथजी	नीला कमल
११	श्रीश्रेयांसनाथजी	खड्गी (गैंडा)	२२	श्रीनेमिनाथजी	शंख
			२३	श्रीपार्श्वनाथजी	सांप
			२४	श्रीमहावीरस्वामीजी	सिंह

प पू आचार्य श्रीलक्ष्मीरत्नसूरिजीश्री नीचे लिखा (गुजराती भाषामेंका) चत्यवदन पढिये । इसमें भी चौबीसो प्रभुजीके लछन दिये गये हैं ।

वृषभ लछन ऋषभदेव, अजित लछन हाथी ।
संभव लछन घोडलो, शिवपुरना साथी ॥ १ ॥
अभिनंदन लछन कपि, क्रौंच लछन सुमति ।
पद्म लछन पद्म प्रभु, विश्वदेव सुमति ॥ २ ॥
सुपार्श्व लछन साथीओ, चंद्रप्रभु लछन चंद्र ।
मगर लछन सुविधिप्रभु श्रीवच्छ शीतल जिणंद ॥ ३ ॥
लछन खडगी श्रेयांसन वासुपूज्यन महिष ।
सूअर लछन विमलदेव भविया त नमो शीष ॥ ४ ॥
सींचाणो जिण अनंतने वज्र लछन श्रीधर्म ।
शांति लछन मृगलो राग धर्मना मर्म ॥ ५ ॥
कुंथुनाथ जिन बोकडो अरजिन नंद्यावर्त ।
मल्लि कुंभ वखाणीए मुव्रत कच्छप विख्यात ॥ ६ ॥
नमि जिनने नील कमल, पामीए पंकज माहीं ।
शंख लछन प्रभु नेमजी दीसे ऊचे आही ॥ ७ ॥
पार्श्वनाथन चरण सप, नील वरण शोभित ।
सिंह लछन कचन तणु वर्धमान विख्यात ॥ ८ ॥
एणीपर लछन चितवीए ओळखीए जिनराय ।
ज्ञानविमल प्रभु सेवता लक्ष्मीरत्न सूरिराय ॥ ९ ॥

 (५) देवपाल चरित्र 

भरतक्षेत्र सुसंस्कारोंसे सींचा हुआ क्षेत्र है । इसकी भूमि

महापुरुष इसी पवित्र भूमिमे पदा हुए ह । समस्त जीवोका कल्याण करनेकी, उद्धार करनेकी श्रेष्ठ भावनासे उन सब-के-सब महापुरुषोने इस भरतक्षेत्रकी पुण्यभूमिमें विहार किया है और इसी लिये भारतभूमि महापुरुष और उनके सद्गुणरूपी रत्नोकी खान या निधिसमान ही मानी जाती है। भारतभूमिके कणकणमें आत्मगुणोकी सुगधि है, सुसस्कारके बीज ह ।

(१)

यह भारतभूमि अनेकानेक सुशोभित एव मनोहर नगरियोसे वसे ही तीर्थस्थानोसे भी विभूषित है । पहलेकी बात ह इसी भरतक्षेत्रका अचलपुर सचमुच अचल ही था। जसा उसका नाम वसे उसके गुण भी थे––उसका नाम भावसूचक था। सुख-समृद्धि, अमनचन, राजसी ठाठ, वैभव विलास और लक्ष्मीकी तो मानो वहाँ लहर ही उमड रही थी। अनेक उदार, महामना व गुणसपन्न धनी-कुबेरोका वहाँ निवास था। वेपार रोजगार आदि सब भली भाँति और नीति नियमसे ही सम्पन्न हो रहे थ। लोगोमे धार्मिक सस्कार थ और देव गुरु एव धर्मकी आराधना करनेके लिये वहाँ अच्छी अच्छी सुविधाए व उत्तमोत्तम साधन-सामग्रियाँ थी। वहाँके नागरिक धनके नही पर गुणोके पुजारी थ। इस प्रकार सारे-के-सारे अचलपुरकी रौनक समग्र (सोलहो) कलाओसे दमक रही थी।

प्रजावत्सल और प्रतापी राजा सिंहरथ वहाँ राज्य करता था। उसकी सत्ता और कीर्ति, न्याय और नीति एव गुण, धर्म और यशोगाथा चारो ओर फैल रही थी चारो दिशाओंमें उनका गान हो रहा था। उसकी सेवामें तो अनेक सेवक हाजिर ही थ। अपरपार था उसका राजवैभव ! लक्ष्मीसे परिपूर्ण था उसका

भाडार ! और राजा स्वयं भी था अपने नामके अनुसार सिंह-समान पराक्रमी ! तो उसके शत्रु हिरनोंकी तरह मारे मारे भागते फिरते थे, इसमें बड़ी बात ही कौनसी थी ?

धनकमाला और शीलवती ये राजाके दो रानियाँ थीं। दोनों-की-दोनों बहुत ही खूबसूरत और गुणोंमें अग्रगत भी थीं। राजाके एक गुणसागर पुत्री थी, उसका नाम था मनोरमा। राजपुत्री मानो उसने सौन्दर्यके बारेमें पूछना ही क्या ! वह मात्र सौंदर्यका अवार (सौन्दर्यकी खान) ही नहीं पर गुणोंका भाडार भी थी। रूप और गुण दोनों होनेसे राजपुत्री मनोरमा विशेषरूपसे सोहती थी। गुण बिनाका अकेला रूप तो कभी कभी अनय कर देता है और बड़ी बड़ी आफतोंको भी सिरपर लेता है इसी लिये गुण बिनाका रूप मानो नमक बिनाकी रसोई ही समझ लीजिये।

श्रेष्ठी जिनदत्त राजाके अत्यंत ही चहेते (प्रिय) सेठ थे। सेठजी भी दयालु उदार और मानवताके गुणोंसे विभूषित थे। दीन-दुखियोंके दुख-कष्टमें वे अपना हाथ बटाते, गरीबोंके लिये उनके भाडार खुले थे अपने द्वारपर आया हुआ याचक खाली हाथ न लौटने पाए ऐसा तो उनका घरका नियम था सम्यक्दृष्टि पूर्ण और सस्कारी जीवन ही व्यतीत करनेकी उनकी महत्त्वाभिलाषा थी---ऐसे करुणाभावित थे जिनदत्त सेठजी। सेठजीके घर एक कृतज्ञ क्षत्रियवंशी नौकर था। उसका नाम था देवपाल। सेठजीके सहवाससे उसे जैन धर्मके प्रति अचल श्रद्धा थी और सद्गुरु महाराजोंके समागमसे वह जैन धर्मके गूढ रहस्योंको समझता था। ' विश्वके सभी धर्मोंमें जैन धर्म ही श्रेष्ठ और संपूर्ण है ' ऐसा सम्यक्त्वका रंग उसके समूचे आत्मप्रदेशमें व्याप्त हुआ था। धर्म विहीन जीवन तो उसे अप्रिय और एकाकी मालूम होता था।

'जीवनको यथार्थ स्वरूपमें जीनेकी शिक्षा देनेवाली जो कोई कला हो तो वह धर्मकला ही है' ऐसा उसके दिलमें पक्का बस गया था। वह अपने मनसे धर्मकी कीमत तो श्वासोच्छ्वाससे भी ज्यादा मानता था। अपनेको समझदार और सुधारक माननेमनानेवाले आजके महाशयोंमेंकी निपुणता (!) उसमें न थी कि जिससे वह धर्मको और धर्माजनोंको ढोंग और ढोंगी समझे। यह था देवपालका जीवन! सचमुच सज्जन पुरुषोंके समागमसे जीव क्या क्या प्राप्त नहीं कर सकते? कहना ही पडता कि कल्याणकामी आत्माएँ सत्संगसे सब कुछ पा सकती हैं।

वह वर्षा ऋतुका दिन था। बादल आकाशमें उमड घुमड रहे थे और सिंहसमान विकराल गर्जना कर रहे थे। बिजली जरा जरासे अंतरेपर चमक रही थी। लगातार मूसलधार बारिश हो रही थी। पानीका उभाड खलखल ध्वनि करते हुए बह रहा था। मानो सरिता अपने पति सरित्पति-समुद्रके मिलनके लिये बहुत ही उत्सुक हुई न हो, उस प्रकार अत्यंत ही तेजीसे दौड (बह) रही थी। उछलकर खलभली मचानेवाले पानीका दृश्य निर्बल हृदयके आदमीको घबडाये बिना रहता ही न था और उस पानीकी आवाज चित्तविभ्रम पैदा करनेवाली थी। ऐसी भयावनी परिस्थितिमें भी जाडेसे हिफाजतके लिये ऊनी कंबल ओढे हुए देवपाल नदी किनारेके एक पठारपर गौओंको चरानेके लिये गया ही था। वह एक ओर लकडीको टेककर खडा था और उत्सुकतासे देख रहा था गिरनेवाली बरसातके पानीको व वारों ओर बरसातसे उत्पन्न हुए लक्षवेधक दृश्योंको। गौएं भी जहाँ वर्षासे रक्षा हो सकती थी वहीं खडी हो गई थीं।

धीरे धीरे वारिश थम गई। आकाश स्वच्छ हो गया। गौए भी नदी-तटके पठारपर इधर-उधर चरने लगी। फिर भी नदीका जल प्रवाह तो अत्यत ही तेजीसे और खल्खल आवाज करत हुए बह ही रहा था। इतनेमे जल प्रवाहके अत्यत वेगके कारण नदी किनारेका एक ओरका भाग सहसा गिर गया। देवपालकी आँखोने भी यह दृश्य देखा। गिरे हुए भागमे श्रीयुगादिदेव जिनेश्वर प्रभुजीकी प्रतिमा देखते ही हर्षके आवेगसे देवपालके रोमाच खडे हो गये। वह मनमें ही अपनी आत्माको धन्य (कृतकृत्य) और पुण्यशाली मानने लगा —' अहा! कैसा मेरा धन्यभाग्य! वन-वीरानेमे अबेर ही और मुझे श्रीजिनेश्वर प्रभुजीके दर्शन! ससार-रूपी महासागरका पार करनेका सर्वश्रेष्ठ साधन मुझे सहज-ही मे प्राप्त हो गया! " अब तो जरूर ही इन देवाधिदेवकी किसी उत्तम स्थानपर मै स्थापना करूँगा," ऐसा पक्का विचार कर, देवपालने शीघ्र ही नदीके किनारेपर ही एक पर्णकुटी बनाई और उसमें देवाधिदेवकी स्थापना की और साथ साथ अपने हृदय मदिरमे भी। उसी समय उसने श्री-वीतराग प्रभुजीके सामने दृढ प्रतिज्ञा की कि प्रतिदिन जबतक मै त्रिभुवनके नायके दर्शन नहीं करूँगा तबतक मै अन्नजल नहीं लूगा। इस प्रकार प्रतिज्ञा लेकर देवपाल अपनी शक्तिके अनुसार उत्तमोत्तम साधन सामग्रीद्वारा प्रतिदिन प्रभुजीकी पूजा-सेवा-भक्ति करने लगा।

वीतराग प्रभुजीके दर्शन और उनकी सेवा भक्तिको भूल कर (उनका त्याग कर) जीवनको स्वेच्छाचारी बनाना, यह दुर्गतिका कारण है जबकि जैन दर्शनके रहस्योको समझकर ज्ञान योगमे मस्त रहना, यह सद्गतिका कारण है —यह बात देवपाल

पूरी तरह समझ गया था। अत एव उन्नतिके मार्गमें सविशेष प्रगति करनेके लिये उसने श्रीवीतराग प्रभुजीकी अनिबन्ध शरणागतिका (प्रभुजीके संपूर्ण आत्मसमर्पणका) स्वीकार किया था।

'श्रेयांसि बहुविघ्नानि' इस कथनके अनुसार व्रतधारियोंपर अचानक अनेक प्रकारकी कठिनाइयाँ आती हैं और उन्हें उपहास भी सहने पडते हैं। कसौटीकी अहरनपर चढना पडता है, वहाँ आघात प्रहार सहकर उत्तीर्ण होना पडता है तभी उनकी कीमत की जाती है। महापुरुषोंको भी अपने जीवनमें अनेक प्रकारके कष्ट-संकट सहने होते ही हैं। और अनेक कष्ट-संकटोंमें भी सजग रहकर सहीसलामतीके साथ अपने निश्चित मार्गकी ओर प्रयाण करना ही महात्माओंके सामर्थ्यकी असली कसौटी है। देवपालकी प्रभुभक्तिमें भी एक बार रुकावट आई थी पर वह घबडा जावे ऐसा थोडा ही था? वह तो पूरी तरह समझता था कि कसौटी यह जीवन उन्नतिकी जडी-बूटी है।

एक दिन लगातार बेशुमार और मूसलाधार बारिश गिरना शुरू हुआ। पानीकी बाढ बहुत ही तेजीसे बहने लगी। कडकडाहटके साथ बिजली चमकने लगी। बादलोंसे सूर्य ढँका गया। संपूर्ण परिस्थिति ही शून्य और उदास हो गई। कहीं भी देखो तो पानी ही पानी! मानो पृथ्वीदेवीने पानीके ही सभी शृंगार सजे न हो! ऐसा था चारों ओरका दृश्य! घरके बाहर निकलना भी बिल्कुल नाममुमकीन हो गया था। और ऐसी वस्तुस्थिति भी लगातार सात सात दिनोंतक रही!

देवपाल भी ऐसी भयानक और उदास परिस्थितिमें श्री-जिनेश्वर प्रभुजीके दर्शनको नहीं जा सका। उसकी प्रतिज्ञा थी कि मैं प्रभुजीके दर्शन किये बिना अन्नजल नहीं लूँगा, इसी लिये उसने तो सात दिनोंतक उपवास (व्रत) किया।

आठवे दिन निसगत ही वारिश थम गई और देवप प्रभुजीके दर्शन करनेके लिये जा सका। उसने सर्वप्रथम पणवृ व्यवस्थित की। और बादमें श्रद्धा-पवित्र भक्त देवपाल अ दोनों हाथ जोडकर प्रभुजीके सम्मुख नम्रभावसे स्तुति क लगा — ओ प्रभुजी! मैं कैसा मदभागी कि सात-सात दिना आपके परम पुनीत दर्शन न कर सका! मेरे सात-सात दिन आपकी सेवा भक्तिके बिना व्यर्थ ही गये! आज आठवे आपके दर्शन पाकर मेरी आत्मा कृतार्थ धन्य हो गई है। आ दर्शनके सिवा मुझ और किसी वस्तुकी चाह ही नहीं है। पि सात दिनोंतक तो शरीर भी बेचैन रहता था। आपकी से भक्तिका लाभ प्राप्त न होनेसे मन तो आकुल व्याकुल रहता। आत्मा अशांतिका भाग बन गई थी। निकटकी सब परिस्थि ही शून्य और उदास मालूम होती थी। इसी लिये ओ विभुजं मैं आपके पास विनीत भावसे केवल एक ही प्रार्थना करता हूँ आपके दर्शन मुझे नित्य प्रतिदिन किसी भी विघ्नबाधाके f प्राप्त होवे।"

इस प्रकार देवपाल देवाधिदेवके सम्मुख प्रार्थना कर ही था कि युगादिदेवकी अधिष्ठायिका देवी श्रीचक्रेश्वरी प्रगट और उसने देवपालको संबोधन कर कहा —'हे देवपाल! जिन युगादिदेवका भक्त है, उन्हीं प्रभुजीकी मैं अधिष्ठायिका । तुझे जो कुछ भी वर माँगना हो सो माँग ले।'

प्रभुजीकी भक्तिमें मस्त हुए देवपालने जवाबमें कहा 'देवीजी! मुझ अपने जीवनमें मात्र एक ही याचना करनी और वह है —श्रीजिनेश्वर प्रभुजीकी सेवा भक्ति मुझे अविच्छि रूपसे प्राप्त होवे। इसके सिवा मुझ और कुछ भी माँगना नहीं है।'

'देवपाल ! इसमें तो तूने माँगा ही क्या है ? मैं तो इस लोकके समग्र वांछित सुखोंको देनेके लिये आई हूँ। मैं तुझपर प्रसन्न हुई हूँ, इसी लिये और कुछ माँग ले।'

'देवीजी ! ऐहिक सुखोंके लिये मैं प्रभुजीकी भक्ति नहीं करता हूँ, पर मोक्षसुखकी प्राप्तिके लिये ही मेरी यह प्रभु भक्ति है। इसी लिये हे देवीजी ! मैं जो याचना कर रहा हूँ उसीमें आप मेरी मदद कीजिये।

'देवपाल ! उसमें तो मेरी मदद है ही तेरी प्रभु-भक्तिसे आकर्षित होकर तो मैं यहाँ आई हूँ ! इस लिये दूसरा कुछ माँग ले। देव-देवियोंके दर्शन निष्फल नहीं जाते।'

'देवीजी ! दूसरा कुछ माँगना मानो हाथी बेचकर गधे खरीदना ही है। अतः दूसरा कुछ माँगनेके लिये स्थान ही नहीं है। (मैं दूसरा कुछ माँगना ही नहीं चाहता हूँ।)

'देवपाल ! तेरी निश्चल श्रद्धा (मनोवृत्ति) देखकर मैं वर देती हूँ —तू चंद समयमें ही इसी नगरीका राजा होगा।

'देवीजी ! मुझे न राज्यकी इच्छा है और न राजा होनेकी। क्योंकि कहा ही है कि राजेश्वरी सो नरकेश्वरी। जो राजा प्रभुजीकी भक्ति और धर्मकी आराधना नहीं करता और उसकी मृत्यु होती है, वह नरकका अधिकारी बनता है और मेरी नरक जानेकी इच्छा नहीं है। राजा होनेके बाद परिणाम-स्वरूप नरकका अधिकारी होना पड़ता हो तो मुझे वैसा राजा बननेकी तनिक-सी भी जरूरत नहीं है।

'देवपाल ! तू राजा होते हुए भी नरकका अधिकारी नहीं होनेवाला है इसका मैं तुझे यकीन दिलाती हूँ। अतः एव तू आनंदसे राज्यका उपभोग कर। दैवी वरदान मिथ्या नहीं होता।'

'देवीजी ! मेरी इच्छा न होते हुए भी आपने मुझे राज होनेका वरदान दिया है। अत भाग्यमें जो होनेवाला हो सो भले होवे।'

देवपाल ! चाहे तेरी इच्छा न भी हो, पर तू राज होनेवाला है, यह बात निश्चित ही है' ऐसा कहकर श्रीचक्रेश्वरी देवी अदृश्य हो गई।

बादमें भावनापूर्ण हृदयसे देवपालने प्रभुजीकी सभावभक्ति-दर्शन पूजा, स्तवन आदि की और वह उत्साहके साथ घर लौटा। सात-सात दिनोंके उपवास (व्रत)का आज पारणा था, पर न उसे पारणा करनेकी इच्छा या इच्छा और न थी तीव्र चाह या भूख! यह किसका प्रभाव था? कहना ही पड़ेगा कि देवपालकी अनपायिनी प्रभुभक्ति और अखण्ड व अविच्छिन्न श्रद्धाका ही यह प्रभाव था।

देवपाल तो जिनदत्त सेठका बकरा नौकर ही था। पर नौकरोंकी उत्तमता भलाईके कारण कभी कभी मालिक भी गौरवका अनुभव करते हैं। जिनदत्त सेठजीको भी देवपालके सात दिनोंके उपवास (व्रत)का पारणा करानेका अपूर्व अवसर प्राप्त हुआ। सेठजीने देवपालका बहुत ही सम्मान किया और बहुमानपूर्वक व अत्यन्त ही उत्साहके साथ उसे खीर (दूधपाक, तस्म)का पारणा कराया। इस प्रकार सेठजीने भी अपनी आत्माको धर्मभागी बनाई।

(२)

एक बार अचलपुर नगरके बाहर एक बड़े शानदार बगीचेमें महातपस्वी और उग्रध्यानी मुनिराज पधारे। तपस्या और त्याग, क्षमा और कोमलता (दयालुता) ... और

समभाव इन सबके फलस्वरूप उन महर्षिको तीनो लोकालोकको प्रकाश (ज्ञान) करानेवाला अनत केवलज्ञान प्राप्त हुआ। तुरंत ही देवोने केवलज्ञान महोत्सव मनाया। देवोका मनाया हुआ महोत्सव मान उसमे कमी ही कौनसी ? केवलज्ञान महोत्सवका पता चलते ही नगरके श्रद्धालु भावुक लोग उस उद्यानमें केवली प्रभुजीका वदन करनेके लिये हर्षित हृदयसे जाने लगे।

पुरवासियोका आवागमन बढ जानेके कारण राजाने अपने सेवकसे सहजमे ही पूछा—" ये सब पुरजन कहाँ जा रहे है ?

' महाराजाधिराज ! अपने नगरके बाहरके बगीचेमे एक केवलज्ञानी प्रभुजी पधारे है उन्हे वदन करनेके लिये नगरजन अपने परिवारके साथ जा रहे है —सेवकने नम्रतासे जवाब दिया।

राजाने स्वय भी प्रभुजीको वदन करनेके लिये जानेकी इच्छा प्रगट की और सब आवश्यक तयारी करनेके लिये आज्ञा की।

राजा सिंहरथ अपनी ऋद्धि-सिद्धि और राजवैभवके अनुरूप ऐसी सब आवश्यक तयारी (ठाठ) के साथ तीन लोकके तारक प्रभुजी श्रीदमसार केवलज्ञानी भगवानको वदन करनेके लिये गये। तब तो वे महाज्ञानी प्रभुजी रत्नोसे सुशोभित सुवर्ण सिंहासनपर विराजमान होकर भव्य जीवोको सबोधन कर ससार-दुःख निस्तारिणी एव कल्याणमयी धर्मदेशना देनेका प्रारभ करते ही जा रहे थे। देशना सुननेके बाद राजा सिंहरथने पूछा —' ओ प्रभुजी ! मेरी आयु अब कितनी बाकी है ? '

' तेरी आयु तो बहुत ही अल्प है ' ज्ञानीने बतलाया।

' अल्प माने भी कितनी अल्प ?

' केवल तीन अहोरात्र ही ! '

बस ! हो गया ! क्या मैं तीन अहोरात्र ही जीऊँगा ?'

हाँ जीवनमें जो कुछ भी खास खास कर लेनेका हो वह सब कर लो ठीक होगा।'

'ओ प्रभो ! इतने जरा से समयमें तो मैं क्या क्या कर सकूँगा ? '

'यदि आत्मा दृढनिश्चय कर तो थोडे समयमें (दिनोंमें) भी केवलज्ञान प्राप्त कर सकती है।

'तो भगवान ! तो मुझे क्या करना चाहिये ? '

बारह व्रतोंको अंगीकार करो।' यानी प्रभुजीने मार्ग बतलाया।

प्रभुजीका उपदेश सुनकर सिहरन राजाने बारह व्रतोंका अंगीकार किया। अब उसे संसार कारागार जान पडने लगा। उसके मनसे राजसुख अब तुच्छ हो गया। जीवनका अंत बिल्कुल निकट ही खडा था और प्रभुजीकी हितकर देशना सुनी थी, अतः राजाका मन अब संयमका अंगीकार करनेके लिये बहुत ही उत्सुक हो रहा था। दिमागपर विचारोंका बोझ बढ गया था —"इतने जरा-से समयमें सब पुद्गल-लीलाओंको समेटकर आत्मश्रेय किस तरह कर सकूँगा ? राज्यकी बागडोर कौन संभालेगा ? पुत्रों मनोरमाको किसके स्वाधीन करूँगा ? इस प्रकारके विचारोंकी दौड-धूप चल रही थी और इन्हीं विचारोंमें राजा उलझा हुआ था कि सहसा राज्यकी अधिष्ठायिका देवीने प्रगट होकर कहा —' राजाजी ! आप चिंता न कीजिये। सब कुशल-मंगल ही होगा।'

पर देवीजी ! मेरी आयु तो बहुत ही कम है और मुझे तो संयमका अंगीकार करनेकी उत्कट अभिलाषा है। क्या करूँ ? कुछ मार्ग ही नहीं दिखाई देता।

"हे राजन् ! मैं कहती हूँ, क्षमा कीजिये। मैं पंचदिव्य प्रगट करूंगा। उन पंचदिव्यके द्वारा जिसके गलेमें पुष्पमाला पहनाई जायगी, उसे आप अपना राज्य और अपनी पुत्री मनोरमा दे दीजिये और बादमें आप खुशीसे चारित्रका अंगीकार कीजिये।' इस प्रकार देवीने राजाका मार्ग सरल कर दिया और वह अदृश्य हो गई (अपने स्थान चली गई)।

पंचदिव्य प्रगट हुए। राजा, मंत्री और सब अधिकारी वर्ग इन सबने मिलकर उन पंचदिव्यको नगरके बड़े-बड़े मार्गोंमेंसे फिराया, तब तो देवपालके ही गलेमें पुष्पमाला पहनाई गई। देवी चक्रेश्वरीने दिया हुआ वरदान इस प्रकार सम्पन्न हुआ।

राजा सिंहरथने देवपालके साथ अपनी पुत्री मनोरमाका विवाह कर दिया और देवपालको राज्यका सब कारोबार सौंप दिया। राजा सिंहरथने थोड़े ही समयमें यह सब कार्य समाप्त किया और केवली प्रभुजीके पास जाकर श्रीभागवती दीक्षाका अंगीकार कर आत्माका श्रेयसाधन करना शुरू किया। अत्यल्प आयुष्यमें भी संयमका पूर्णतया पालन कर ये नूतन संयमी सौधर्म देवलोकमें देव हुए।

पारसमणिसे भी चारित्रका प्रभाव ज्यादा ही है। इस संसारमें जितने भी महापुरुष भूतकालमें हो गये हैं, भविष्यकालमें होंगे और वर्तमानकालमें विद्यमान हैं वे सब-के सब निर्मल चारित्रके प्रभावसे ही हैं, ऐसा समझ लीजियेगा। परमोच्च कोटिका जीवन जीनेके लिये और परभवको सुधारनेके लिये संयमके मार्गका अंगीकार किये बिना निस्तारा ही नहीं है। देखिये, राजा सिंहरथ तो दो ही दिनके चारित्रके प्रभावसे देवगतिको प्राप्त हुए!

(३)

देवीके वरदानके प्रभावसे देवपालको राज्य तो मिला, पर जिस प्रकार नौकर मस्तीमें आये हुए पुराने नौकर नये अधिकारीका कहना हँसी मजाकमें उडा देते है और मौका मिल जाता है तो वे उस नये अधिकारीको उसके स्थानपरसे नीचे गिरा देते है, उसी प्रकार देवपाल भी वसी ही स्थितिमें आ गया था। देवपालकी आज्ञा या हुक्म कोई मानता ही न था। देवपाल बडी ही उलझनमें आ गया था। नया मंत्री मंडल बनानेमें भी काफी कठिनाई थी। पुराने मंत्रियोंका रोष सहन किये बिना इस नये मंत्री-मंडलकी नियुक्ति करना असंभव ही था। एक ओर सिंह और दूसरी ओर नदी जैसी हालत हो गई थी देवपालकी। 'अब क्या करना चाहिये ?' इसी मनोमंथनमें देवपाल था कि उसे सूझा—'देखू ! मेरे पहलेके परम उपकारी सेठजीको बुलवाऊँ ! शायद वे मुझे कुछ मार्ग बतला दगे !' तुरंत ही उसने सेठजीको लिवा लानेके लिये नौकरको भेजा। पर 'चाहे आज राजा भी क्यों न हो, लेकिन पहले वह मेरा नौकर ही था और क्या मैं अपने नौकरको ही अपना सिर झुकानेके लिये जाऊँ ?' ऐसा सोचकर बहुत ही अभिमानके साथ सेठजीने राजदूतको ना कह दिया। सेठजीकी आशा भी व्यर्थ हो जानेसे देवपालका स्वमान पूरा पूरा नष्ट हो गया और उसकी चिंतामें और वृद्धि हुई।

चिंताग्रस्त और उदासीन हालतमें ही देवपाल नदीतटकी पर्णकुटीमें श्रीजिनेश्वर प्रभुजीके दर्शन करनेके लिये गया और वहाँ ध्यानस्थ होकर प्रभुजीकी प्रार्थना करने लगा—'हे विभो ! मैं आपकी कृपासे राजा तो हुआ, पर मेरी हालत बहुत ही दर्दनाक हो गई है ! राज्यके पुराने अधिकारी और सेवक मेरी

आज्ञाको बिल्कुल मानते ही नही ! तब मुझे राज्यका पालन किस प्रकार करना चाहिये ? मै होजीके राजाकी तरह बनावटी–मात्र नामधारी राजाके नाते अपना जीवन बिताना नही चाहता। यह तो एक प्रकारकी गुलामी या एक तरहका बंधन ही है। ओ प्रभुजी ! आपके प्रभावसे मेरी ये सब चिताए दूर होवे !'

इस प्रकार देवपाल अपनी हृदय-वेदनाएँ व्यक्त कर ही रहा था कि श्रीचक्रेश्वरी देवीने प्रगट होकर कहा —'देवपाल ! तू ऐसी चिंताएँ क्यो करता है ?

'देवीजी ! मै आपके वरदानसे राजा तो हुआ पर बडी भारी भारी कठिनाइयोमे आ गया हूँ।'

'देवपाल ! तेरी उलझन टिक ही नही सकती।

'तो मुझे क्या करना चाहिये ?'

'उसका उपाय मै बताती हू। चमत्कारके बिना इस दुनियामे नमस्कार नही। इस लिये कुम्हारको बुलाकर उसके पाससे मिट्टीका एक सुंदर और भव्य ऐरावण हाथी बनवा ले और उसपर तू सवार हो जा। देवी प्रभावसे मेघगर्जना करता हुआ और मदोन्मत्तकी तरह चौकडी (छलांग) भरता हुआ वह हाथी इधर-उधर फिरने लगेगा। यह देखते ही सबके अभिमानका पानी टूट जायगा —सबके-सब पानी पानी हो जायेंगे।'

देवपाल अपने महल लौटा और उसने देवीजीके कहनेके अनुसार कुम्हारको बुलवाकर उसे सुंदर व भव्य ऐरावण हाथी बनानेका आदेश दिया। हाथी तयार होते ही देवपाल उसपर सवार हुआ। देवी प्रभावसे वह हाथी ऐरावण हाथीकी तरह चौकडी भरता हुआ इधर उधर फिरने लगा। यह चमत्कार देखते ही राज्यके पुराने अधिकारी और सेवक हक्के-बक्के (आश्चर्यमुग्ध)

हो गये और आपसमें बात करने लगे --" मालूम होता है कि राजा देवपालको दवी सहाय है। क्योंकि दैवी सहायके बिना मिट्टीके हाथीको जिन्दा बनाना असभव ही है। अब तो हम चाहिये कि हम राजाजीको अनुकूल हो जावे वरना वे हमें हैरान-परेशान कर देंगे। एक तो राजसत्ता और उसमें भी दवी सहाय, तब तो पूछना ही क्या ? वे चाहेंग उसी समय हमारे हाथ पाँवोंमे लोहेकी जजीरें डलवाकर कारावासका डडा (सरियो) के पीछे (पिंजडमें) धकेल देंगे। और राजाजी जो हम सबपर खुश होंगे तो हमें सभी सुविधाएं मिल जायगी। इसी लिये हम सब मिलकर राजा देवपालजीके पास जायेंगे और किये अपराधोंकी क्षमा-याचना करेंगे।"

इस प्रकार विचार कर राज्यका मत्रीवर्ग और सब सेवक राजा देवपालके पास आये और दोनो हाथ जोडकर कहने लगे--" ओ कृपानिधान राजाजी ! क्षमा कीजिये। हमने आपके अनेक अपराध किये हैं क्षमा कीजिये। हम अज्ञानी है, आपके सद्‌गुण-- प्रताप तेज, ऐश्वय आदिको नही जान सकते। इसी लिये आपका अनादर-अपमान कर बैठे है। यह हमारी गफमें बडी (महान) भूल हुई है, क्षमा कीजिये।

तुम लोग अपने धर्मको भूलकर जो बरताव कर रहे थे, वह योग्य नही है। किन्तु तुम लोग किये अपराधोंकी क्षमा माँग रहे हो अत मै (क्षमा करना यह) अपना राजधर्म समझकर क्षमा करता हूँ। पर अबसे आगे भविष्यमे फिरसे क्षमा माँगनेका समय न आने पाये, यह ख्यालमे रखनेका मत भूलना।'

' आपकी आज्ञा हम सिरपर चढाते है।'

इस प्रकार मत्री और सब सेवक अनुकूल हो जानेके बाद राजा देवपालने जिनदत्त सेठजीको लिवा लानेके लिये सेवक

ना। वह जानता ही था कि सेठजीको आनेमें संकोच होगा ही। जिनदत्त सेठजी आये, पर उनके मनमें दुःख था कि पहले मैंने राजाजीका अपमान किया है और इसी कारणसे संकोच भी था। आते ही (देवपाल राजाके दर्शन होते ही) जिनदत्त सेठजीने दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार किया। राजा देवपालने भी नमस्कार स्वीकारते हुए नमस्कार किया, सेठजीको योग्य आसनपर बैठाया और कहा—'सेठजी! आप पहली (पूर्वकी) परिस्थितिके मेरे महान उपकारी हैं। आपकी नौकरी करनेके प्रभाव ही से तो मैं राजा बना हूँ। फिर मैं आपको कैसे भूल सकता हूँ?'

"राजाजी! आप बड़े दयालु और उदार हैं। आपने पहले न्यौता (निमंत्रण) भेजा था, तब मैंने आपका अनादर किया था। अतः कृपया क्षमा कीजिये।"

"सेठजी! भूल तो हरेक आदमीकी होती ही है। किन्तु भूलका शिकार हो जानेके बाद भी जानकी तरह उसी भूलको पकड़े रहना, यही मानवकी बड़ी गंभीर भूल है।"

"राजाजी! फिरसे ऐसी भूल न होने पाए, इस लिये मैं पूरा-पूरा खयाल रखूँगा। आज आपने मुझे जो निमंत्रण भेजा, इसके लिये मैं आपका बड़ा एहसानमंद (आभारी) हूँ।"

"सेठजी! अब मेरा विचार ऐसा है कि आप मेरे पूर्वके बड़े उपकारी होनेसे आज मैं आपकी महाअमात्यके स्थानपर नियुक्ति करूँ।"

'जैसी आपकी आज्ञा।' सेठजीने सम्मानपूर्वक जवाब दिया।

राजा देवपालने सभी अधिकारियोंको अपने-अपने स्थानपर रखे। पर संपूर्ण राज्यतंत्रकी लगाम महाअमात्य श्रीजिनदत्त सेठजीके हाथमें सौंपी।

राज्यसुखोंका उपभोग करानेवाली श्रीचक्रेश्वरी देवीकी सूचना थी—" हे देवपाल ! राज्यसुखोंका उपभोग करते हुए भी श्रीजिनेश्वर प्रभुजीके दर्शन और उनकी पूजा मत भूलना।" अतः देवीजीकी इस आज्ञाके अनुसार राज्यसुखोंका उपभोग करते हुए भी राजा देवपाल श्रीवीतराग प्रभुजीकी भक्तिमें अनुरक्त ही रहता था।

(४)

प्रतिग्राम विहार करते करते और भव्य जीवोंको उपदेश देते देते केवलज्ञानी श्रीदमसार प्रभुजी नगर बाहरके उद्यानमें पधारे। सभी नगरवासी लोग बड़े ही हर्षोल्लासके साथ प्रभुजीको वन्दन करनेके लिये जा रहे थे। परम उद्धारक केवलज्ञानी भगवंत पधारे हैं इस बातका पता चलते ही स्वयं राजा देवपाल भी अपने सैन्य और परिवारके साथ प्रभुजीको वन्दन करनेके लिये उस बगीचेमें पहुँचे। विधिके अनुसार प्रभुजीको वन्दन कर राजाजी यथोचित स्थानपर बैठ गये और केवलज्ञानी भगवन्तकी अमृतपूर्ण देशना सुननेके लिये उत्सुक हो गये।

भव्य जीवोंका उद्धार करनेवाले केवली प्रभुजीने सुवर्ण कमलपर विराजमान होकर कल्याण करनेवाली अमृतमयी देशना देना शुरू किया। आपने द्रव्यपूजा और भावपूजाका गूढ रहस्य तत्त्व अमृतपूर्ण शैलीमें समझाया। इसे सुनकर राजा देवपाल प्रभुभक्तिमें विशेष सजग और उत्साही हुए। और राजाजीके मनमें एक शानदार व रमणीय जिनमन्दिर बनवानेकी भावना उत्पन्न हुई। तुरन्त ही इस भावनाको मूर्तस्वरूप दिया गया और देवभवन जैसा एक रमणीय जिनालय तैयार हो गया। मन्दिरमें देवाधिदेवकी सुवर्णमयी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा बड़े महोत्सवके साथ

केवलज्ञानी प्रभुजीके द्वारा करवाई। इस प्रकार प्रतिष्ठा करवाकर राजा देवपालने अपने जीवनमें एक महान पुण्य उपार्जन किया, प्राप्त हुई लक्ष्मीका सदुपयोग किया और अपनी प्रभुभक्तिमें वृद्धि की। केवलज्ञानी प्रभुजीकी वाणी सब शुभ गुणोंसे अलंकृत और सभी मन कामनाओंको पूर्ण करनेवाली होनेसे जीव क्या प्राप्त नहीं कर सकते? कहना ही पड़ेगा कि वे सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं।

राजा देवपालने वीस स्थानकमेंसे प्रथम अरिहंत पदकी विधिपूर्वक आराधना करनेकी तपस्या शुरू की—मन, वचन और कायाके शुभ योगोंद्वारा हीरे, मोती, मानिक और सुवर्णकी बडी भारी भारी आंगियाँ (शृंगार) सजाकर प्रभुजीके अनेक प्रकारके स्नात्र महोत्सव मनाते हुए जीवनका धन्य किया और साथ साथ तीर्थंकर पदका उपार्जन भी किया। अनेक प्रकारकी सर्वोच्च साधन-सामग्रियोंसे साधर्मिक बंधुओंकी सेवा भक्ति करनेका लाभ राजाजी सदैव उठाते थे। वे वैसे मौकेको कभी भी नहीं गँवाते थे। राजा देवपालने देश-देशान्तरके महातीर्थोंकी यात्राएँ भी की थी। इन सब प्रकारोंसे राजाजीने देव गुरु और धर्मकी वस्तुतः भली भाँति आराधना की थी।

(५)

अब तो राजा देवपाल विशेषरूपसे धर्मकी आराधनामें ही आनंदित मस्त रहते थे। राज्यका कारोबार अब कम कर दिया था। सांसारिक और राज्यके सुख अब आपको निस्सार मालूम होने लगे थे। आपकी आत्मा वैराग्यवासित बन गई थी और इसी लिये आपको संसारके लिये उदासीन भाव पैदा हो गया था।

एक बार राजा-रानी नगरके बाहर घूमनेके लिये गये थे। तब रानीजीने लकडियोंकी भॅटिया सिरपर उठाकर सामनेसे आते

हुए एवं लकडहारेको देखा कि उन्हें मूर्च्छा आ गई। तुरन्त ही राजाने समयसूचकतासे शीतोपचार (सिरपर पानी छिडकना, पंखा ले चलना आदि) किये और होशमें आते ही रानीजीसे पूछा–'यकायक क्या हो गया ? '

'लकडहारेको देखकर मुझे जातिस्मरणज्ञान हो गया है।'

'पर उसमें बेहोश हो जानेका क्या (कौनसा) कारण ?'

इस लकडहारेको देखते ही मुझे पूर्वभवका स्मरण हुआ।'

'पर पूर्वभवमें भी ऐसा तो तूने क्या देखा ? '

'पूर्वभव सुनने लायक है, सुनिये।

'तब सुनाइये।'

रानीजीने अपना पूर्वभव सुनाते हुए कहा– "मैं और यह लकडहारा पूर्वभवमें पति-पत्नी थे। हमारी हालत बहुत ही शोचनीय थी–भरपेट खाना मिलना भी मुश्किल था। जंगलमेंसे लकडियोंकी अँटिया लाते उन्हें बेचते और हम अपना गुजारा चलाते थे।'

राजाने बीच-ही में प्रश्न किया– 'पर तू तो इस भवमें रानीजी हो गई तो फिर यह लकडहारा लकडहारा ही क्यों रहा ?'

अपने दुष्कर्मोंसे।'

'ऐसे तो इसने कौन कौनसे दुष्कर्म किये थे ?'

'सुनियेगा। एक समय पूर्वभवमें हम दोनों जंगलमें लकडी लेनेको लिये गये थे। उस समय जंगलमें नदीके किनारेपर श्री वीतराग प्रभुजीकी प्रतिमाके दर्शन हुए। मैंने श्रीवीतराग प्रभुजीकी यथाशक्ति सेवा भक्ति की और अपनी आत्माको पवित्र की। बादमें मैंने अपने पतिसे प्रभुजीको भावपूर्वक नमस्कार करनेके

लिये कहा, तब तो वे मेरेपर गुस्सा उतारते हुए कहने लगे कि पत्थरके बुतोंको तो नमस्कार किस लिये ? तू स्वय अपना कल्याण कर ले ! इस प्रकार देवाधिदेवकी भयकरमें भयकर आशातना करनेसे वे (मेरे पति) सिधारकर फिरसे निधन कुलमें ही उत्पन्न हुए लकडहारे ही रहे और म प्रभुभक्तिके प्रभावसे आज राज-पत्नी हुई हूँ।'

समूचे विश्वमें चार सत्ताओका साम्राज्य ह। इन चार सत्ताओम कर्मसत्ता सभी जीवोंपर विशेषरूपसे अपना शासन चलाती ह। जीवोंने स्वय किये हुए कृत्योंके अनुसार कर्मबध होते ह और उन कर्मबधोंके अनुसार जीवन बनता ह। कर्मसत्ता जीवोंको चाहे वसे बना सकती ह। इस लिये उसकी करामात विचित्र ही ह। और कहा भी गया है— कर्मणा गहना गति।'

रानीसे लकडहारेके पूर्वजन्मका वृत्तान्त सुनकर राजाने उसे पासमें बुलाकर कहा—' भैया ! पूर्वभवमें तूने श्रीजिनेश्वर प्रभुजीकी घोरसे घोर आशातना की ह। इसी लिये इस जन्ममें तू दुर्दशा और दुख भोग रहा ह। अत दुखोंको दूर करनेके लिये तू जिनेश्वर प्रभुजीकी भक्ति कर धर्मकी आराधना कर।

लकडहारेका जीव ही गुरुकर्मी (भारी कर्मवाला) ह इस लिये अपना कहना वह मान ही नही सकेगा, ऐसा देखकर राजाने उसे जानेके लिये छुट्टी दे दी और राजा-रानी भी अपने महल लौट आये।

इस प्रकार इस धार्मिक दम्पतिने कई साल ऐहिक व राज्यके सुखोंका उपभोग किया।

(६)

रानी मनोरमाके प्रतापी ऐसा एक पुत्र हुआ । उसका नाम रक्खा गया देवसेन। प्रबल (भरसक) पुण्यके बिना राज कुलमें जन्म पाना मुश्किल है। देवसेन भी अत्यन्त पुण्यशाली था। क्रमशः देवसेनने यौवनमें प्रवेश किया और उसका विवाह सुशीला व रूपवती राजकन्याके साथ हुआ।

राजा देवपाल अब संसारके सुखोंसे ऊब गया था। अब उसे राज्यका कारोबार बोझ जैसा मालूम होता था। अपने पुत्र देवसेनको राज्यका उपभोग करनेके लिये योग्य देखकर राजा देवपालने उसे राज्याभिषेक किया—सम्पूर्ण राज्य सौंप दिया और स्वयंने तो श्रीचन्द्रप्रभु भगवानके पास निवृत्तिप्रधान चारित्रका अंगीकार किया। रानी मनोरमा भी अपने पतिको अनुसरनेवाली थी। उसने भी संयम ग्रहण कर अपनी आत्माको कृतकृत्य बनाई।

श्रीचन्द्रप्रभुजी भगवानके पास दीक्षाका अंगीकार कर निरतिचारपूर्वक संयमका पालन कर कठिनातिकठिन तपस्या कर और नौ पूर्व व ग्यारह अंगोंका पठन-पाठन करते हुए कर्मकी निर्जरा कर श्रीअरिहंत पदकी आराधना करते हुए अपना मृत्युलोकका शरीर छोड़कर देवपाल प्राणत नामक दसवें देवलोकमें देव हुए। साध्वीजी श्रीमनोरमाजी भी उसी देवलोकमें देव हुई और दोनों वहाँ मित्रतासे रहने लगे।

आयु पूर्ण होनेके बाद राजा देवपाल महाविदेह क्षेत्रमें श्रीतीर्थंकर प्रभुजी होंगे और रानीजी भी उसी क्षेत्रमें उन्हीं श्रीतीर्थंकर प्रभुजीके गणधर होकर शाश्वत ऐसे परम सुखको प्राप्त करेंगी।

(६) प्रारंभिक परीक्षाके पुराने प्रश्नपत्र

[अखिल भारतीय जैन समाजकी एक मात्र सर्वोत्तम शिक्षणसंस्था श्री जैन तत्वज्ञान विद्यापीठकी ओरसे ता १४-५-१९४८ से अबतक आठ बार प्रारंभिक परीक्षा की गई है। इस परीक्षामें भारतके विभिन्न प्रान्तोंकी २०० पाठशालाओंद्वारा ३५०० भाग्यशाली परीक्षार्थी सम्मिलित होकर उत्तीर्ण हुए हैं। इस पाठ्यक्रमके अनुसार पढ़ाईकी सुविधाके लिये और परीक्षामें प्रश्न किस ढगसे पूछे जाते है इसका खयाल आनेके लिये यहाँ शुरूसे ही प्रश्नपत्र दिये गये हैं।]

(हरेक प्रश्नपत्रकी सूचनाएँ—प्रश्नोंके उत्तर समझकर और विषयको लेकर लिखिये। शुद्धि और सुलेखनके लिये अंक ५। कुल अंक १००।)

परीक्षा १ ता २७-६-१९४८

१ 'एगिंदिया से मिच्छा मि दुक्कड' तक और जाव अरिहंताणं' से अप्पाणं वोसिरामि तक सूत्रोंके विभाग शुद्धिपूर्वक लिखिये। १०

२ (i) १६ सतियोंमेंसे किन्हीं १० सतियोंके नाम लिखिये। १०

(ii) १० महातीर्थोंके नाम लिखिये। उनमेंसे आपने कौन कौनसे तीर्थोंकी यात्रा की है ? १०

३ नीचेके शब्दोंमेंसे किन्हीं पाचके अर्थ संबंधपूर्वक लिखिये। १०

तेइंदिया, जंभाइएण, लोए, संघाइया, संजमजात्रा, माणेण पढम।

४ भगवान श्रीमहावीर प्रभुजीका संक्षिप्त चरित्र पचीस पंक्तियोंमें लिखिये। १५

५ रिक्त स्थानोंकी पूर्ति कीजिये। १४

(अ) (i) भगवानका लछन बैल है। (ii) भगवानका लछन हाथी है। (iii) भगवानका लछन चंद्र है। (iv) भगवानका लछन कछुआ है।

(ब) (i) श्रीपार्श्वनाथ प्रभुजीका लछन है।
(ii) श्रीनेमनाथ प्रभुजीका लछन है।
(iii) श्रीसुमतिनाथ प्रभुजीका लछन है।
(iv) श्रीविमलनाथ प्रभुजीका लछन है।

(क) ३ रे, १२ वे, १५ वे और १९ वे तीर्थंकर प्रभुजीके नाम और लछन लिखिये।

६ उत्तर लिखिये। १५

(i) पंचिंदिय सूत्रमें कहे हुए गुरु महाराजजीके छत्तीस गुण गिनाइये।

(ii) नवकारमंत्रमें बताये हुए पाँच परमेष्ठी गिनाइये।

(iii) 'एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया' —इसका अर्थ स्पष्टतासे समझाइये। इन पाँचमें आप किस विभागमें आ सकते है?

७ उत्तर लिखिये। २१

(i) देवपालको किस तरह राज्यप्राप्ति हुई? विस्तार पूर्वक लिखिये। (ii) रानी मनोरमाको जातिस्मरणज्ञान होनेपर उसने पूर्वभवकी कौनसी बात राजा देवपालको सुनाई? वर्णन कीजिये। (iii) राजा सिंहरथने अपने राज्यका उत्तराधिकार (विरासत) किसे सौंपा? राजाजीको उत्तराधिकारी (वारिस) क्यों खोजना पडा? समझाइये।

परीक्षा २ ता ७–११–१९४८

१ नीचेकी गाथाओंका अर्थ समझाइये। १५
(१) 'अभिहया वत्तिया 'से 'तस्स मिच्छा मि दुक्कड तक'
(२) अरिहंते कित्तइस्स चउवीस पि केवली

२ नीचेके सूत्र शुद्धिपूर्वक साफ-साफ अक्षरोंमें लिखिये। १५
(१) पंचिंदियसूत्र संपूर्ण (२) करेमि भंते सूत्र संपूर्ण

३ नीचेके शब्दोंमेंसे किन्हीं पाँचके अर्थ सवधपूर्वक समझाइये। १५
सव्वेसिं, पंचसमिओ, दुविह, तिविहेण, सघाइया, नियम संजुत्तो, सागरवरगंभीरा, धम्मतित्थयरे।

४ भगवान श्रीमहावीर प्रभुजीकी सहनशीलताकी (दीक्षा लेनेके बादकी) किसी एक घटना १५पंक्तियोंमें लिखिये। १०

५ उत्तर दीजिये। ९
(१) तीर्थंकर भगवान याने क्या ?
(२) २४ प्रभुजीके नाम आप किस सूत्रमें सीखे ?
(३) १ ले, ५वें, ९वें, २१वें और २३ वें प्रभुजीके लंछन लिखिये।

६ आपको मालूम हो, उन १२ महासतियोंके नाम लिखिये। ६

७ जिनदत्त सेठजीका एक सामान्य नौकर प्रभु भक्तिके प्रभावसे राजा कैसे हुआ विस्तारपूर्वक समझाइये। १०

८ आप जितने सूत्र सीखे हैं, उनमेंसे आप कौनसा सूत्र बहुत ही उत्तम और शुद्धिपूर्वक लिखना जानते हैं ? ६

९ रिक्त स्थानोंकी पूर्ति कीजिये। १०
(१) श्रीशत्रुंजय गिरिराजपर प्रभुजी विराजते हैं।
(२) श्रीतारंगाजी तीर्थपर " " "।

(३) श्रीतलाजा तीर्थपर प्रभुजी विराजते हैं।
(४) श्रीकदंबगिरि तीर्थपर प्रभुजी विराजते हैं।
(५) श्रीगिरनारजी महातीर्थपर प्रभुजी विराजते हैं।

परीक्षा ३ ता ३०—७—१९४९

१ नीचेके सूत्रोंको शुद्धिपूर्वक लिखिये। १५
(१) नमस्कार महामंत्र (२) सामाइयवयजुत्तो सूत्र

२ जवाब लिखिये। १०
(१) करेमि भंते सूत्रमें आप क्या क्या सीखे ? संपूर्णरूपसे समझाइये। (२) इच्छामि खमासमणो सूत्र अर्थके साथ समझाइये।

३ नीचेके शब्दोंमेंसे किन्हीं सातके अर्थ संबंधपूर्वक लिखिये। १४
जाव, पुप्फदंत, लाए, सव्वसाहूण खमासमणो, सिद्धाण, जावणिज्जाए, सुहराई, बीअवयम्मि।

४ उत्तर लिखिये। १२
(१) किन्हीं सात तीर्थोंके नाम लिखिये और यदि जानते हो तो वे किस किस विभागमें (प्रांतमें) आये हैं, यह भी लिखिये। (२) ६ ठे ८ वे, ९ वे, १३ वे, १७ वे और १९ वे प्रभुजीके नाम और लंछन बताइये।

५ भगवान श्रीमहावीरस्वामीजीने दुनियाको क्या और कौनसा उपदेश दिया ? उसमेंसे आप कितना आचरणमें रखते हैं ? २० पंक्तियोंमें उत्तर दीजिये। १५

६ जवाब लिखिये। १५
(१) प्रभुजीकी अचल (ऐकान्तिकी) भक्तिसे क्या लाभ होता है ? पाठ्यपुस्तककी घटनाके सहारे १५ पंक्तियोंमें

वर्णन कीजिये। (ii) पूर्वजन्मकी लकड़हारिन इस जन्ममे रानी मनोरमा हुई, पर उसके पूर्वजन्मके पति फिरसे इस जन्ममे भी लकड़हारे (भील) ही रह गया? कारणोंके साथ विस्तारपूर्वक समझाइये।

७ निम्न प्रश्नोंके उत्तर दीजिये। १३
(i) तीर्थ याने क्या? (ii) श्रीतीर्थकरदेव कितने? कौन कौनसे? (iii) काउस्सग्गमे जँभाई आ जाय तो? (iv) पाँच परमेष्ठियोंको नमस्कार करनेमे क्या लाभ?

परीक्षा ४ ता ३०-७-१९५०

१ शुद्धिपूर्वक लोगस्स सूत्र सम्पूर्ण लिखिये। १४

२ रिक्त स्थानोंकी पूर्ति कीजिये और उतने गाथाशका अर्थ समझाइये। १५
(i) सम्पूरिता हितानि (ii) गुह्याय पसत्था (iii) विमहर मणुओ (iv) अभयदयाण बोहिदयाण (v) तह वि मम चरणाण।

३ नीचेके शब्दामेंसे किन्ही सातका भावार्थ अपनी [illegible] (मात) भाषामें समझाइये। [illegible]
सामायिक, काउस्सग्ग, समिति, गुरु [illegible] नमस्कार महामंत्र गुप्ति स्तुति या धान [illegible] जिनमन्दिर।

४ आपकी बुद्धिके अनुसार नीचेके विषयोंके [illegible] पंक्तियोमें संक्षिप्त जानकारी दीजिये। [illegible]
(i) तीर्थयात्रा (ii) प्रतिक्रमण (iii) [illegible]

५ योग्य शब्दोंकी पूर्ति कर वाक्य पूर्ण कीजिये । ५
(i) नन्दावर्त भगवानका था । (ii) भगवानका स्वस्तिक था । (iii) गुरुमहाराजके गुणोंका वर्णन सूत्रमें आता है ।
(iv) माथेरान स्वास्थ्यके लिये स्थान बदलने जाते समय महातीर्थकी करना उत्तम है । (v) शाला-कालिजकी पढ़ाईके हमें शिक्षा भी लेनी ही चाहिये ।
६ नीचेके विषयोंके बारेमें आप कुछ जानते हैं ? वह आपने कहाँ पढ़ा ? ६
बताशा, वाशिंग कंपनी विमान (वायुयान) की सैर ।
७ क्या सामान्य आदमी राजा हो सकता है ? क्या मामूली नौकर प्रभुजीकी भक्ति कर सकता है ? इस नौकर और राजपुत्री मनोरमाके बारेमें पंद्रह पंक्तियोंमें निबंध लिखिये । १०
८ प्रश्नोंके उत्तर लिखिये । १०
(i) ५ महातीर्थोंके व ५ महासतियोंके नाम लिखिये ।
(ii) भगवान श्रीमहावीरस्वामी श्री चतुर्विध संघका परिवार कितना था ?

परीक्षा ५ ता. २९-७-१९५१

१ इरियावहिय सूत्र संपूर्ण शुद्धिपूर्वक लिखिये । १६
२ नीचे लिखे हुए तीन विषयोंमेंसे किन्ही दोका १५-१५ पंक्तियोंमें संक्षिप्त वर्णन कीजिये । १५
(i) पूजा पढ़ना (ii) संघभोजन (iii) श्रीशत्रुंजय तीर्थकी कार्तिक पूर्णिमाकी मेला (यात्रा) ।
३ नीचे लिखे हुए शब्दोंमेंसे किन्ही पाँचके स्पष्टार्थ विस्तारसे समझाइये । और वे ही पाँच शब्द किस किस सूत्रमें है व किस किस विषयके साथ उनका संबंध है, यह भी लिखिये । १५

› वदणवत्तियाए, सुगुणिक्कठाण, बुहाण, वाणीसदोहदेहे, भवे भवे, जावत, आइगराण ।

४ प्रश्नोंके उत्तर दीजिये । ९

(i) रानी मनोरमाके बारेम आप जो जानते हो वह दस पंक्तियामें लिखिये। (ii) पाँच महासतियोंके और पाँच महातीर्थोंके नाम लिखिये। (iii) ५ वे, ७ वे, ९वे, ११ वे, १३ वे, १५ और १७ वे मेंसे किन्ही पाँच प्रभुजीके लछन लिखिये।

५ नीचेके शब्दोंमेंसे किन्ही नौ शब्दोंके अर्थ लिखिये। ९

सिद्धा, निच्च दहि मार, वदे, इच्छ, तस्स हुज्ज, ठामि, मनि, जाग, जाव, दव, अम्ह, दिज्ज ।

६ रिक्त स्थानोंकी पूर्ति कर वाक्य पूर्ण कीजिये। ६

(i) अचलपुर नगरम राजाके राज्यमें सेठजीके पास नामक प्रभुभक्तिसपन्न एक नौकर रहता था। (ii) सिहरथ राजाने मुनिजीके पास दीक्षा ली। (iii) पचदिव्य प्रगट होनेपर के गलेमें माला पहनाई गई। (iv) देवसेनके पिताजीका नाम और माताका नाम था।

७ नीचे लिखी गाथाओंको पूर्ण कर उनके अर्थ भी समझाइये। १०

(i) मय बुहाण (ii) वाणी देवि ! सार
(iii) इह सताइ

८ रिक्त स्थानोंकी पूर्ति करते हुए भगवान श्रीमहावीर प्रभुजीका सुसबद्ध चरित्र बनाइये। १५

भगवान श्री देवका जन्म नगरमें हुआ था।

बालक्रीडाके समय शौर्य और पराक्रम दिखानेसे आप कहे गये (नामसे प्रसिद्ध हुए) । माता पिताजीने पढनेके लिये दाखिल किये और वहीं-के-वहीं व्याकरणकी रचना की। आप प्रभुजीकी सभामें देव उपस्थित रहते थे। प्रभुजीने सालकी आयुमें ऐन युवावस्थामें ली। दीक्षा लेनेके बाद नामक एक दृष्टिविष को बुझाया यह घटना आश्चर्यजनक है। एक बार काउस्सग्ग ध्यानमें निमग्न थे उस समय प्रभुजीके कानोंमें काले ठोककर महान उपसर्ग किया। बादमें उस महान दिव्यविभूतिको गाममें केवलज्ञान प्राप्त हुआ। प्रभुजीके कुल शिष्योंका परिवार था महाराज प्रभुजीके प्रधान गणधर थे। प्रभुजीने सालतक चारित्रका पालन किया था। दीक्षा लेनेके बाद साल हो जानेपर आपको केवलज्ञान हुआ। केवलज्ञानकी अवस्थामें सालतक प्रभुजीने इस पृथ्वीपर महान महान उपकार किये और सालकी आयुमें तीर्थमें आप निर्वाण सिधारे। आज हम उन प्रभुजीके शासनमें आराधना कर रहे हैं। आप प्रभुजीके आत्म-कल्याण करानेवाले वचनोंपर हमें रखनी चाहिये।

परीक्षा ६ ता २७-७-१९५२

१ नीचे लिखी गाथाओंसे शुरू कर सम्पूर्ण सूत्र लिखिये। (कोई भी तीन) १५

(१) सुविहिं च पुप्फदंतं (२) एगिंदिया बेइंदिया

(३) जाव नियम (४) वारिज्जइ जइ वि

२ नीचे लिखे सूत्रोंमेंसे किसी एकका भावार्थ, आपने जसा पढा हो, वसा लिखिये। १०

(१) लोगस्स सूत्र (२) करेमि भते सूत्र ।

३ ज किंचि सूत्रकी प्रश्नोत्तरीमसे आपको क्या-क्या जानने मिला ? ८

४ पाठ्यक्रममेंके जितने सूत्रोंका 'परिमल' विभाग आपने पढा हो, उसमेंसे आपको किस सूत्रके परिमल बहुत पसन्द आते ह ? और क्यो ? लिखिये । १०

५ नीचे लिखे शब्द किस सूत्रम आते ह ? उनका किन शब्दोंके साथ विशेष सम्बन्ध ह ? शब्दोंके अथके साथ लिखिये । १५

परत्थकरण, हियएण, तिदण्डविरयाण, वियट्टछउमाण नियमसजुत्ता ।

६ उत्तर लिखिये । १६

(क) रिक्त स्थानोंकी पूर्तिकर वाक्य पूर्ण कीजिये ।

(i) तारगाजीमें वा लछन देखकर हम कह सकते ह कि यह प्रतिमाजी श्री भगवानकी ह । (ii) तीसरे और सातवे प्रभुजीके और लछन थे । (iii) अपने गाँवके जिनमन्दिर तीर्थभूमिके में अधिक आनन्द ह । (iv) इतिहासके पृष्ठ सुवर्णाक्षरोंमें महासतियोंके लिखे गये, इसका कारण एक ही ह कि उनकी आत्माएँ बहुत ही थी ।

(ख) देवपाल किस तरह सुखी हुआ ? १५ पंक्तियोंमें लिखिये।

७ नीचे लिखे शब्दोंमेंसे किन्ही नौ शब्दोंके अर्थ लिखिये । ९
जावणिज्जाए, पढम, उभचेर, मक्कडासताणा, निदामि, निग्घायणट्ठाए, अविराहिआ, पसीयतु आइच्चेसु, भते, उ।

८ नीचे लिखे प्रश्नोंके उत्तर आप अपनी भाषामें विस्तारपूर्वक लिखिये । १२
(i) श्रीवीर विभुजीने गर्भमेंसे अभिग्रहकी तरह हम अभिग्रह ले सकते हैं या नहीं ? (ii) भगवान श्रीमहावीर देवके चरित्रमेंसे कोई भी तीन गूढ रहस्य विस्तारपूर्वक लिखिये।

परीक्षा ७ ता २-८-१९५२

१ नमुत्थु णं सूत्र शुरूसे लेकर 'मुत्ताणं मोअगाणं' तक शुद्धिपूर्वक लिखिये । १५

(२ रे, ३ रे और ४ थे प्रश्नोंमेंसे किन्ही दोके उत्तर लिखिये ।)

२ आपके गाँवके किसी भी एक जिनमन्दिरका २५ पंक्तियोंमें वर्णन कीजिये । १५

३ नीचे लिखे शब्दोंमेंसे किन्ही पाँच शब्दोंको सम्बन्धपूर्वक विस्तारके साथ समझाइये । और वे शब्द किस किस सूत्रमें आये है, यह भी लिखिये । १५
सद्धाए बोहि शासन, वीयराय, जिवे वि ठाणेणं, सजुत्तो।

४ नीचे लिखे हुए वाक्य आपने प्रारंभिक पाठ्यक्रममें कहाँ पढे हैं ? और वे किस लिये लिखे गये है ? स्पष्टतासे समझाइये । १५
(i) हमारे पास (चन्द नौकर व) कुछ धन होनेपर, हम कैसे-कैसे हुक्म चलाया करते है ? (ii) अपना शत्रु कमजोर

होनेपर क्या हम उसका अहित करनेमें कुछ कम करेंगे ? (iii) यदि हमें किसी देवकी मदद हो तो क्या हम धरतीपर भी चलेंगे ?

५ नीचे लिखे सूत्रोंमेंसे किन्ही दो सूत्रोंके भावार्थ और किन्ही दो सूत्रोंके ३-३ परिमल लिखिये १६

(i) जगचिंतामणि सूत्र (ii) इच्छकार सूत्र (iii) उवसग्गहर स्तोत्र

(iv) सामाइयवयजुत्तो सूत्र

६ प्रश्नोंके उत्तर दीजिये । १०

(i) जिस भवमें भगवान श्रीमहावीरदेवको सम्यक्त्वकी प्राप्ति हुई, वह भव कौनसा (कितने अनुक्रमका) ? उस भवका संक्षेपमें वर्णन कीजिये । (ii) राजा देवपालने किस तीर्थंकर प्रभुजीके पास संयमका अंगीकार किया था ? (iii) राजा देवपालने किस तपकी आराधना कर श्रीतीर्थंकर पदका उपार्जन किया था ?

७ रिक्त स्थानोंकी पूर्ति कीजिये । ९

(i) कमल गंडा और महिष प्रभुजीके लंछन थे । (ii) भगवान श्रीमहावीरस्वामीजीकी निश्रामें (सान्निध्यमें) और श्राविकाओंने तीर्थंकरनामकर्मका उपार्जन किया था । (iii) श्री तीर्थके पास नदीके किनारेपर भगवान श्रीमहावीरदेवको प्राप्त हुआ था । (iv) श्री नवकार महामंत्रके अक्षर हो तभी वह पूर्ण कहा जाता है । (v) वर्षमें अट्ठाइया आयंबिल तपसे मनाई (सम्पन्न की) जाती है । (vi) ३ रे, ९ वे और

११ व तीथकर प्रभुजीके नाम थे। (vii) भगवान श्रीमहावीर प्रभुजीके १२ चातुर्मास नगरीमें हुए थे। (viii) श्री पावापुरी गुणाया राजगृही और कुण्डलपुर तीथ प्रातर जिनमें आये है। (ix) गुरु महाराजके गुण होते है।

८ नीचे लिखे शब्दोंमेंसे किन्ही नौ के अथ लिखिये। ९
अविग्घण ल्द्ध, मन्ता उवसाम, भवविरहवर वाएसिरी, सरणदयाण तिन्नाण जयउ, पणमामि पंचिदिया।

९ वाक्यपूर्ति कीजिये। ६
(i) अपना हित चाहनेवाले वाद परीक्षामे शामिल होनेम आनाकानी नहीं करते। (ii) विद्यार्थी लोग पूना की परीक्षाओंमें सम्मिलित होनेके लिये बहुत ही उत्सुक रहते हैं क्योंकि उन (परीक्षाओं) में पाठ्यक्रमका मानदण्ड है और गांव गांवके अध्ययन करनेवालोंके साथ स्पर्धा मिलती है। (iii) देवपाल जैसी भक्ति हमारेमें यह दुखकी बात है।

परीक्षा ८ ता १-८-१९५४

[१ ले, २ रे और ३ रे प्रश्नोंमेंसे किन्ही दोके उत्तर लिखिये।]

१ नीचेके सूत्र शुद्धिपूर्वक लिखिये। १६
(i) पंचिंदिय सूत्र (ii) करेमि भंते सूत्र

२ नीचे लिखी संपूर्ण गाथाओंके अर्थ विस्तारपूर्वक लिखिये। १६
(i) एव मए अभियुआ सिद्धि मम दिसतु (ii) वरिज्जइ जइ वि जन जयति शासनम।

३ नीचे लिखे विषयोंमेंसे किसी एकपर २५ पंक्तियोंमें विषयको लेकर (सुसंगत) निबंध लिखिये। १६

(i) किसी सांवत्सरिक प्रतिक्रमणका वर्णन (ii) उपधानकी माला पहनानेके किसी प्रसगका वर्णन।

४ नीचे लिखे प्रश्नोंमेंसे किन्ही तीनके उत्तर लिखिये। १८

(i) करेमि भंते सूत्रके परिमल विभागमसे कोई भी दो परिमल लिखिये। (ii) इच्छकार सूत्रके परिमल विभागमेंसे कोई भी दो परिमल लिखिये। (iii) अष्टापद पर्वतपरकी जिन प्रतिमाओंके बारेमें आप जो जानते हो, वह लिखिये। (iv) शक्रस्तवमें प्रभुजीको इतने सब (अधिक) विशेषण क्यों लगाये गये ह? समझाइये। (v) भवकी उदासीनता और मार्गानुसारीपन याने क्या?

५ नीचे लिखे तीर्थ कहा आये ह? उनके बारेमें आप जो कुछ विशेष जानकारी रखते हों, वह लिखिये। १०

पावापुरीजी, तलाजा, शखेश्वर, शत्रुजय, गिरनारजी।

६ नीचे लिखे शब्दोंमेंसे किन्ही नौके अर्थ लिखिये। ९

तुज्झ, दिज्ज, भयव, चूलावेल, जावत तेसिं, इव, उ, च, विहु, भत्तीइ।

७ वाक्य पूर्ति कीजिये। ६

(i) दूसरोंके सच्चे झूठे जाहिर करनेमें हम कैसे व कितने बडे चतुर ह! (ii) अपना शत्रु कमजोर होनेपर क्या हम उसका अहित कुछ कम करेंगे? (iii) हम तो वश होकर प्रतिदिन अनेको बार अनेकोका तिरस्कार करते होंगे!

८ 'देवीजी! म आपके वरदानसे राजा तो हुआ, पर बडी भारी भारी कठिनाइयोंमें आ गया हूं।' यह वाक्य किसने कहा था? प्रसगके साथ १० पक्तियोंमें समझाइये।

९ रिक्त स्थानोंकी योग्य शब्दोंसे पूर्ति कीजिये। १०

(i) भगवान श्रीमहावीरदेवने पंद्रह पंद्रह उपवासोंकी (व्रतोंकी) तपस्या बार की थी। (ii) महासतीने श्रीवीर प्रभुजीको उरदका अलोना साग बहाकर (भिक्षामें देकर) पारणा करानेका लाभ उठाया था। (iii) कुंभ और गदा, य और प्रभुजीके लंछन थे। (iv) आजकी विषम परिस्थितिको दूर करनेके लिये भगवान के अजयोंकी आज विश्वको बहुत ही आवश्यकता है। और उसी कार्यके लिये आज अपनी श्री जैन विद्यापीठ परिश्रम उठा रही है। (v) श्रीमहावीर प्रभुजीको साँपने दंश दिया, तब रक्त के स्थान पर शुभ्र (श्वेत) निकला था।

